

साहित्य सहकार
दिल्ली-110 051

हम सब मंसाराम



मुद्राराक्षस

मूल्य : पचीस रुपये

प्रथम संस्करण : 1981
द्वितीय आवृत्ति : 1985

प्रकाशक
साहित्य सहकार
ई-10/4, कृष्णनगर,
दिल्ली-110051

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

HAM SAB MANSARAM
By Mudrarakshas (Novel)
Rs. 25.00

श्री सुरेन्द्र मोहन के लिए

भूमिका

(इसे पढ़े बिना काम चल सकता है)

ऐसा क्यों होता है कि मंसाराम की कथा लिखते वक्त कोई तस्वीर साफ नहीं हो पाती। आमतौर पर कथानायक का चरित्र, उसका स्वभाव, उसकी आकृति, उसके रिश्ते—ये सभी कुछ ऐसे वक्त दिमाग में साफ-साफ उभरने चाहिएं जब उसकी कथा लिखी जा रही हो और वह भी एक उपन्यास के रूप में। इस तरह एक खास लटका सहज प्राप्य होता है कि जहां कोई कड़ी न मिल रही हो उसे नये सिरे से गढ़ लें या जहां चेहरा या चरित्र साफ न हो रहा हो वहां कल्पना का सहारा ले लें। मगर मंसाराम पर लिखते वक्त ये सारे लटके बेकार हो जाते हैं।

रवायती किस्म के उपन्यास के पाठकों से मुझे माफी मांगनी होगी कि ऐसी शुरूआत उन्हें बेतरह उबा सकती है। लेकिन उन्हें मैं थोड़ा आगाह करना चाहूंगा। जिन्दगी में अक्सर ही न जाने कितने मंसाराम उन्हें मिलेंगे लेकिन हर मंसाराम शायद ऐसा न हो जैसा इस उपन्यास का मंसाराम है। कभी ऐसा भी हो

सकता है कि आप बेहद्द निश्चिन्त अपनी दुनिया में खोए चले जा रहे हों और वह किसी अंधेरी झाड़ी या जंग खाई गली से झपट कर निकले और आपको छुरा मार जाए, सिर तोड जाए या आपके हाथ का थैला ही छीन ले जाए।

बेहतर हो कि आप इस मंसाराम को जरूर पहचान लें जो मेरे उपन्यास में ऐसा कुछ भी नहीं करता। इसे पहचान कर आप इस पर दया कर सकेंगे, ऐसा न सोचें। बल्कि इस तरह आप अपने आपको बेहतर समझ लेंगे और शायद अपनी हिफाजत भी कर सकेंगे। याद रखिए यह बहुत जरूरी है। बहुत से कानून, बेहतरीन दुनिया की मजबूत चहारदीवारियां, खतरनाक किस्म के औजार, ये कुछ भी ऐसे मौके पर आपकी हिफाजत करने में असमर्थ हो जाएंगे जब कभी निहत्था मंसाराम सिर्फ आपको घूरता हुआ ही आपके सामने आ खड़ा होगा।

मैंने अपनी हिफाजत के लिए कुछ उम्दा नस्ल के कुत्ते पाल रखे है। गाहे-ब-गाहे मैं पुलिस के ऊंचे अधिकारियों से दोस्तियां भी कर आता हूं।

आप और ज्यादा महफूज महसूस कर सकने के लिए और भी ज्यादा बड़े अफसरों से दोस्ती कर सकते हैं या खुद ऐसे अधिकारी बन सकते हैं और मेरे कुत्तों से कहीं ज्यादा खूखार कुत्ते पाल सकते है। मगर विश्वास कीजिए मौका आने पर दो पैरों पर चलने वाले आदमी से ज्यादा खूंखार और कोई नही हो सकता।

वजह बताऊं? कुत्ता तो पैदायशी कुत्ता होता है। उसे खूखार होना ही होता है। लेकिन कभी जब आदमी उन हालात में जीने लगता है जिनमें वह आदमी और कुत्ता, दोनों से ही अपने को नीचे खड़ा पाए तो वह दूना खूंखार हो जाए, इस बात के पूरे इम्कानात होते हैं।

इसीलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि चाहे आप ऊबें या परेशान हों, मंसाराम से परिचय जरूर कर लें। बुरा मत मानें, इस तरह आप मंसाराम पर नहीं अपने आप पर मेहरबानी करेंगे। आखिर आप अदालत के कागजात भी तो खासे मनोयोग से पढ़ते हैं। अपने दफ्तर की फाइलें या हिसाब-किताब के रजिस्टर भी तो पढ़ते हैं। वे कहां के रोचक होते हैं? उन्हें आप इसीलिए तो पढते हैं कि उनका कहीं आपकी जिन्दगी से ताल्लुक होता है। यकीन कीजिए, मंसाराम की उबाऊ लगने वाली कथा को भी आपको थोड़ी-सी इसी तरह की अहमियत देनी होगी।

मैंने शुरू में कहा था कि मंसाराम पर लिखते वक्त उसकी कोई भी तस्वीर साफ नहीं हो पाती। कभी-कभी तो एक ऐसा आदमी मंसाराम के नाम से सामने आ खड़ा होता है जिसके कंधे के ऊपर सिर होता है लेकिन चेहरा किसी तरफ नहीं होता। बल्कि कभी-कभी तो मंसाराम के रूप में मैं खुद अपने आप को ही देखने लगता हूं। ऐसी स्थिति में मुझे अपना आकार एक ऐसे हास्यास्पद पुतले जैसा लगने लगता है जो टूट-फूटकर भी एक ऐसे खेत में गड़ा रह गया हो जिसकी फसल कभी की काटी जा चुकी हो और वहां परिन्दों या दरिन्दों से बचाने लायक कुछ भी न बचा हो।

कह सकता हूं मंसाराम एक मिथक है। वह एक बिल्कुल ही काल्पनिक और गढा हुआ चरित्र है लेकिन फिर भी खयाल आने पर कुछ ऐसा लगता है जैसा वह पत्थर जिससे आपके पांव का अंगूठा टकरा गया हो और नाखून उखड़कर लटक आया हो। वह कुछ इस तरह का सत्य माना जा सकता है जैसे एक डरावना सपना जिसे देखने के बाद आपको पसीने से तर उठकर बैठ जाना पड़ता है।

आपको इस मुल्क में चूंकि असंख्य मंसाराम मिल सकते हैं

इसलिए इस कथा के मंसाराम को एक विशेष संज्ञा दे लीजिए—नेता मंसाराम। मंसाराम के साथ नेता जैसे शब्द को आप उसके रवायती अर्थ में देखें। मंसाराम के साथ नेता शब्द, सच कहूं तो, कुछ इस तरह जुड़ा दिखेगा जैसे किसी इक्केवाले के बीमार और परित्यक्त घोड़े के गले में कभी रेशमी रूमाल कही जाने वाली चीज का एक चीथड़ा लटका रह जाता है।

मंसाराम नेता जैसी भद्र संज्ञा का अभ्यस्त भी नही रहा है। उसे तो मंसाराम जैसा शब्द भी अपने लिए अपरिचित लगेगा। उसे लोग या तो मंसवा कहते रहे हैं या नेतवा। लेकिन मैं उसे इन संज्ञाओं से नही बुलाऊंगा। भले ही इन संज्ञाओं में निहित अपने प्रति तिरस्कार की भावना उसने खुद कभी महसूस नही की।

आप गरीबखाना या दौलतखाना शब्द से परिचित है ? जरूर होंगे क्योंकि अगर आप यह किताब पढ़ने को तैयार हैं तो जरूर ऐसी जमात में तो होंगे ही जिसमें शिष्टाचारवश दूसरे के घर को दौलतखाना और अपने घर को गरीबखाना कहा जाता है। मंसाराम के घर को आप गरीबखाना नही कह पाएंगे, यह मैं शर्त लगा कर कह सकता हूं।

एक बड़ा शहर है। उस बड़े शहर से कई तरफ कई सड़कें निकली हैं। इस बड़े शहर को राजधानी कहा जाता है। अगर बादलों के ऊपर से इस राजधानी को देखा जाए तो लगेगा एक बड़े समुद्र से निकलकर आ पड़ा आक्टोपस है जो अपनी बहुत-सी भुजाएं लंबी किए हुए इस जमीन और इस देश को मजबूती से पकड़े हुए है।

इन सड़कों से कुछ और छोटी सड़कें फूटी हैं और छोटी सड़कों से और और छोटी सड़कें। इन्हीं में से एक छोटी सड़क ने चैलपुर को इस तरह चिपका रखा है जैसे किसी रोगी पेड़ की जड़ में गांठ पड़ जाती है। चैलपुर सड़क से कोई दो फर्लांग किनारे है और आम और बबूल के बीमार दरख्तों, थोड़ी कब्रों और कांटेदार झाड़ियों के बीच दुबका-सा लगता है। एक नजर में तो उसके वहां होने का गुमान भी नहीं होता। हां, शाम के वक्त उधर चूल्हों के धुएं और जानवरों की आवाजों के साथ कभी कुछ लोगों के गाने की आवाज सुनाई देती है या फिर देर

तक वाहर रह गए बच्चे को मां के द्वारा पुकारने की आवाज। इससे तुरंत गांव के वहां होने का भेद खुल जाता है।

अपाहिजों की तरह टेढ़े-मेढ़े और गंजे-से दिखने वाले इन दरख्तों के वीच आदमी के मौजूद होने का एक सबूत आप देख सकते हैं। नीम और पीपल के एक ही तने में उग आए एक दरख्त की सबसे ऊंची टहनी पर एक पतले बांस के साथ सुर्ख रंग की झंडी थोड़ी दूर से ही दिखाई दे जाती है। यह किसी राजनीतिक की झंडी नहीं है। इसके वहां होने से पता लग सकता है कि वहां रहने वाले लोगों में एक खतरनाक किस्म के रोग का खौफ घर किए हुए है। जब तक वह भय गांव के आसपास रहेगा, यह झंडी रहेगी। पेड़ की जड़ के पास मिट्टी के एक ढेर पर ईंटों के जरिए एक ऐसी चीज़ वना ली गई थी जैसी आमतौर पर कब्रों के सिर की तरफ होती है।

चूने से पुती इस नन्ही-सी मंदिर नुमा चीज में एक आला भी वना था जिसमें लोग दीये जला देते हैं और उस पर दीये के धुएं की लंबी-गहरी परत चढ़ी रहती है। कभी-कभी गांव की वेहद मैली-कुचैली औरतें, जो दूर से देखने पर गुबरैलों की एक भीड़ ही लगती है, यहां आती हैं और चेचक माता की पूजा कर जाती हैं।

इसके अलावा वह गांव दुबका रहता है।

चैलपुर में एक वार एक विश्वविद्यालय की तरफ से सूखे की हालत की जांच-पड़ताल करने वड़े-वड़े विद्वानों का एक दल आया था। उन्होंने गंजे और अपंग दरख्तों का एक चित्र लेने के वाद चिटखी हुई धरती का फोटो लेने की इच्छा जाहिर की थी। वहां ऐसी जमीन दिखाई नहीं दी। फिर उन्होंने किसी जानवर के कंकाल का चित्र लेना चाहा। कंकाल भी उन्हें नहीं मिला। जिस वक्त कंकाल की खोज हो रही थी उस वक्त भागकर

गांव के प्रधान धन्नू आए। कंकाल के [illegible] उन्होंने एकदम कसम खाई : साहब, ऐसी गंदगी हम यहां [illegible] साहब, बदबू फैलती है !

और महामारिया भी इसी तरह फैलती है।—दल के साथ आए एक विचारक ने भी कहा।

दल के नेता काफी आश्वस्त हुए। धीरे से बोले : कुछ गांवों ने काफी तरक्की कर ली है।

कंकाल उन्हें नही मिले थे। कंकाल मिल जाते तो गांव की तरक्की के बारे में प्रश्नचिह्न लग जाता।

इस चैंलपुर के दो हिस्से है। एक हिस्सा सड़क से सटे बीमार दरख्तों को पार करने के बाद ही शुरू हो जाता है और दूसरा हिस्सा इस गांव के पच्छिमी किनारे पर ढीठ की तरह थोड़ा अलग फिर भी अपने कूल्हे गांव की तरफ खिसकाए बैठी एक बस्ती का है। इस बस्ती के अन्दर चले जाइए तो आपको गांव के आसपास अस्थिपंजर न होने के रहस्य का पता लग जाएगा।

इस हिस्से में वे लोग रहते है जो चमड़े उतारने का काम करते है। पांचू चौधरी पिछले कुछ दिनों से खासा ही खुश था। इस अर्थ में शहर के विद्वान की यह बात आप सच मान सकते हैं कि गांव वालों ने तरक्की कर ली है।

सिर्फ पानी न बरसने से यहां बहुत बड़ी घटना हो गई थी। दो साल तो जैसे-तैसे गुजर गए थे लेकिन तीसरे साल की शुरूआत बहुत ही मजेदार होने लगी थी। गांव के अन्दर हो या खेतों के आसपास यहां तक कि सड़क पर भी एक-दो जानवर मर ही जाते थे। मरने के बाद वे तुरन्त बदबू छोड़ने लगते थे।

पांचू चौधरी अपनी झोंपड़ी के सूराख के अन्दर से भी अन्दाज लगा लेता था कि जानवर मरकर कहां गिरा होगा क्योंकि आस-

मान पर कुछ गदे और आलसी से दिखने वाले परिन्दे मंडराना शुरू कर देते थे। वह वस्ती के किसी भी एक आदमी को आवाज दे देता था और थोड़ी देर में परिन्दों की मंडली बड़े धीरज से इस वस्ती की झोंपड़ियों, पास के पेड़ों या सड़ती हुई गलियों में बड़े इत्मीनान से आ बैठती थी। वे लोग जानवर के अगले-पिछले पैर अलग-अलग रस्सियों से बांध देते थे और पैरों के बीच एक मोटा बांस डालकर जानवर उठा लेते थे।

अपने घुटनों तक मैले कपड़े के चीथड़े लटकाए नंगे बदन इन काले रंग के आदमियों को इस तरह जानवर उठाकर वस्ती की तरफ लाते आप देख लें तो लगेगा आप गुहावासी आदिम सभ्यता के किसी खड में जा पहुंचे है। लेकिन इनके तरक्की कर चुके होने की सम्मति इसके बावजूद आप दे सकते है क्योंकि वे पत्थरों के औजारों से जानवरों की खालें नहीं उतारते बल्कि लोहे के छुरे जैसी चीजें इनके पास है। लोहा, जाहिर है, आदिम मानव के पास नहीं ही था।

छेदी तो बहुत ही खुश और सन्तुष्ट था। पिछले दो बरसों में उसने जितनी खालें और हड्डियां वेची थीं उतनी उसने शायद पूरी जिन्दगी में नही बेची होंगी।

ऐसा मौका सिर्फ एक बार आया था। गांव की गाएं, कुछ बछड़े और बैल एकाएक बीमार हुए और मर गए थे। उनके पेट बेतरह फूल गए थे और उनके मुंह और नथुनों से बहुत-सा झाग निकला था।

इतनी बड़ी तादाद में जानवरों की लाशों को देखकर जहां गांव के इस हिस्से में सनसनी छा गई थी वहीं दूसरे हिस्से में जैसे एक मेला ही लग गया था।

छेदी पांचू चौधरी के बाद इस काम में सबसे ज्यादा कुशल था। सींग और खुरों की अहमियत से लेकर बेदाग खाल उतारने

में उसका जवाब नहीं था।

खाल उतारने के बाद जानवर को ऐसी जगह डालना होता था जहां उसकी हड्डियों के ऊपर से सारा मांस परिन्दे या छोटे जानवर खा जाएं। हां इससे पहले वह इन जानवरों के पेट से काम की कुछ और चीजें भी निकाल लेता था। इनमें आंतों की लम्बी-लम्बी रस्सियां होती थीं जो सूखने के बाद बेहद मजबूत डोरी जैसी बन जाती थीं और कुछ झिल्लियां भी होती थीं जिन्हें सुखाने के बाद बहुत पतला चमड़ा तैयार हो जाता था।

आंतों की इन रस्सियों को रुई धुनने वाले लोग खरीद लेते थे या फिर उनसे धनुषों की प्रत्यंचा बन जाती थी। झिल्लियों का उपयोग तो बहुत ही मजेदार होता था। बांस और मिट्टी के प्याले लेकर इसकी झिल्ली मढ़ने के बाद बेहतरीन चिकारा बन जाता था जो शहरों में बच्चों के हाथों मजे में बिक जाता था। झिल्लियों से नन्हीं-नन्ही ढोलकें भी मढ़ ली जाती थी जिन्हें मेलों में लोग खरीदते थे।

इस बस्ती का आकार आप अर्धचंद्राकार मान सकते हैं। इस अर्धचंद्र की कमर के पास बहुत मैले और काले रंग के पानी और कीचड का एक गड्ढा है। इस गड्ढे के बहुत से इस्तेमाल बस्ती वालों के लिए रहे हैं। यह हमाम भी हो जाता है और पेशाबघर भी। पीने वाले पानी का स्रोत भी होता है और बस्ती की मोरियों से आने वाले सड़े पानी को एक जगह समेटने वाला सीवर भी।

यह अजीब गड्ढा है। एक-दो बारिश न होने और सूखा पड़ जाने पर जब कुएं भी सूख जाते हैं, इस गड्ढे में गीलापन बना रहता है, भले ही पानी थोड़ा ज्यादा काला और गाढ़ा हो जाता हो।

इस गड्ढे के एक सिरे पर छेदी की झोपड़ी है और दूसरे

सिरे पर मंसाराम की।

वैसे मैं कुछ गलत भाषा का प्रयोग कर रहा हूं। इन लोगों के घर को झोपड़ी कहना कुछ बहुत सही नहीं होगा। कच्ची मिट्टी को जमाकर चौकोर दीवारें उठा लेने के बाद इन लोगों ने एक-दो छोटी कोठरियां-सी बना ली है जिनके ऊपर टेढ़ी-मेढ़ी मोटी लकड़ियां और अरहर के पौधों की आड़ी-तिरछी लकड़ियां बिछाकर मिट्टी डाल दी गई है और इस तरह छतें भी बन गई हैं। ऐसी एक-दो कोठरियों के सामने फूस की ढालू छतें भी है जो बरामदे का काम दे जाती है।

मंसाराम ने इससे आगे बढकर एक और कारीगरी कर ली थी। इस छप्पर वाले बरामदे के आगे थोड़ी-सी जमीन समतल करने के बाद उसे भी कच्ची दीवार से घेर दिया था और इसमें बांस फाड़कर उसकी पट्टियों से तैयार किया हुआ एक दरवाज़ा जैसा भी बना लिया था।

छेदी ने इस बस्ती के सरपंच को मंसाराम की यह हरकत दिखाई थी। इस बस्ती में सिर्फ सरपंच पांचू चौधरी ने ही इस तरह का आंगन बना रखा था। वह उनकी जरूरत और हैसियत भी था। इसके अलावा, गांव के दूसरे हिस्से के ज्यादातर घर इसी तरह बने थे। प्रधान का घर थोड़ा ज्यादा बड़ा था। वह बना भी ऊंचाई पर था। उनके घर के आगे दीवार से घिरे इस अहाते के आगे भी काफी ऊंचा और चौड़ा-सा चबूतरा था।

मंसाराम का वह आंगन उस बस्ती की आम जिन्दगी के लिए खासा बेमौजूं था। छेदी ही नहीं और भी कई लोगों ने इस बात को लेकर थोड़ी-सी आपत्तियां उठाई थीं। इन आपत्तियों से खुद सरपंच पांचू भी सहमत थे। मगर सारे एतराज ज्यों के त्यों रह गए और मंसाराम का वह आंगन जैसा था वैसा ही ढीठ की तरह वहीं बना रहा।

इसके पीछे न तो नियति थी और न ही मंसाराम का कोई पराक्रम। ऐसा कोई पराक्रम दिखाने लायक मंसाराम था भी नहीं। बात सिर्फ इतनी हुई कि जिन दिनों उसके घर के बाहर के इस आंगन का चर्चा छिड़ा चुनाव शुरू हो चुके थे।

यहां आपको चुनाव और मसाराम के बीच रिश्ता भी समझना चाहिए। उसके बगैर मंसाराम का आगे का व्यक्तित्व या उसकी जिन्दगी आप साफ समझ नहीं पाएंगे।

यह इस मुल्क में हुए तीसरे आम चुनाव की बात है। उन दिनों मंसाराम को यह नहीं मालूम था कि चुनाव क्या होता है। वह खादी के कपड़े भी नहीं पहनता था। पांचू या छेदी या गुल्लू की तरह वह भी लगभग कीचड़ के रंग से मिलता-जुलता एक कपड़ा कमर पर बांधे रहता था।

उसकी इसी पोशाक में उसे प्रधान ने बुलवाया था। प्रधान के खेतों से जो अरहर काटी गई थी उसके छरहरे पौधों के गट्ठर वह प्रधान के मकान के पीछे इकट्ठा कर रहा था।

सुन रे मंसवा, कितने गट्ठर रह गए अभी?—प्रधान ने पूछा।

चबूतरे के नीचे खड़े मंसाराम ने कहा : पचास गट्ठर और होंगे प्रधान जी।

छोड़ दे। बाकी कल रख देना।

अच्छा मालिक।—मंसाराम ने कहा।

अबे तो भागा कहां जा रहा है, ऐं?—प्रधान ने उसे जोर से डांटा। वह रुक गया। प्रधान बोले : देख स्कूल चला जा। स्कूल के सामने पांच-छह तखत लगेंगे और उस पर बिछावन होगा। दो-तीन आदमी और साथ ले ले।

मंसाराम ने छेदी और उसके दोनों भाइयों को जा पकड़ा। वे लोग उस वक्त गढ़ेनुमा गंदे तालाब से केकड़े पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। दो केकड़े छेदी ने पकड़ भी लिए थे जिन्हें

एक टोकरी के नीचे बंद करके छेदी का छोटा भाई अगले केकड़ों का इंतजार कर रहा था।

प्रधान जी ने बुलाया है। जल्दी चलो। अभी।—मंसाराम ने छेदी को आते ही हुक्म दिया।

प्रधान जी ने ? मुझे ?—छेदी सकपका गया। उसे प्रधान द्वारा इस तरह बुलाया जाना बुरा लगा। पिछले हफ्ते अरहर की तुलाई करते वक्त प्रधान ने उसे जिस तरह मारा था वह अभी उसे याद था।

तुम्हें और लल्लू को। और मंगू को भी। तीनों को बुलाया है।—मंसाराम उस वक्त मंसाराम से ज्यादा प्रधान का प्रतिनिधि हो गया था इसलिए उसका स्वर भी कुछ अलग हो गया था।

उसकी बात पर लल्लू और मंगू भी बौखलाकर उसकी तरफ देखने लगे। इस बीच मंगू का ध्यान टोकरी से हट गया और पकड़े हुए दोनों केकड़े फुर्ती के साथ निकलकर दुबारा गड्ढे की कीचड़ में गायब हो गए। छेदी बुरी तरह चिड़चिड़ा गया। सबसे ज्यादा गुस्सा छेदी को तब आया जब मंसाराम उन्हें प्रधान की तरफ न ले जाकर स्कूल की तरफ ले चला।

उधर कहां ?—छेदी ने थोड़े असंतोष से पूछा।

काम है। वहां तखत वगैरह लगाने हैं।—मंसाराम बड़ी उदासीनता से सूचना देकर चलता रहा। छेदी ठिठक गया : अरे तो तुमने क्या मुझको अपने हुक्म का गुलाम समझा है ?

छेदी, ज्यादा मत बोलो। जो बताया गया है करते चलो, समझे !—मंसाराम ने रोब से कहा : नहीं तो चलो प्रधान जी के सामने कह दो—

प्रधान के नाम से छेदी दब गया।

जिस काम में उन्हें लगाया गया उसमें बड़े घर के लोग भी जुटे हुए थे। पानी छिड़ककर स्कूल के सामने वाले मैदान में झाड़

लगाई गई। स्कूल की इमारत के [illegible]
और उनके ऊपर दरियां बिछी।
हुई थी। तख्तों के ऊपर स्कूल की एक भारी-सी मेज और एक कुर्सी रख दी गई। तख्तों के इस चबूतरे के चारों तरफ अब सजावट होनी थी। बांस गाड़कर तिवारी जी ने उन पर आम के पत्ते लिपटवा दिए। स्कूल में टंगी गांधी जी की एक तस्वीर मेज पर रख दी गई। इसी बीच स्कूल के पंडितजी किंग जार्ज की तस्वीर भी उठा लाए।

अरे, ये कौन साला लाया?—तिवारी जी किंग जार्ज की तस्वीर देखकर बौखला गए। वे स्कूल की कमेटी में भी थे। पंडित जी ने घबराकर वह तस्वीर हटा ली।

स्कूल की दीवार से सटकर झंडे टांगने के बाद बच्चों ने महात्मा गांधी के नाम का जोरदार नारा लगाया।

वफादार सेवक की तरह मंसाराम ने फैसला किया कि वह काम पूरा हो जाने की खबर प्रधान को दे दे।

इसी दायित्व बोध से मंसाराम की जिन्दगी का एक नया अध्याय शुरू होता है। प्रधान ने उसे पानी पिलाया और गुड़ और भुने हुए गेहूं के दानों को मिलाकर बनाई गई मिठाई जैसी एक चीज खाने को दी। मंसाराम बेहद खुश हो गया।

छेदी वगैरह कहां है?—प्रधान ने पूछा।

घर गए।—मंसाराम ने कहा फिर चलते-चलते थोड़े संकोच से बोला: काम करते-करते भूख भी लग जाती है। इस गुड़-धनिया में से थोड़ा-थोड़ा उनको भी दे दूंगा।

इसमें से क्यों?

बहुत काफी है न।—मंसाराम थोड़ा चालाक हो गया। अनजाने ही।

नहीं। उनके लिए अलग से ले जाओ।—प्रधान ने कहा, फिर

बोले : ऐसा करना, नहा-धोकर तुम लोग भी शाम को वहीं ग्रा जाना। हो सकता है कोई काम पड़ जाए। नेता जी ग्राएंगे। सब लोग पहुंचना। ज्यादा से ज्यादा तादाद में। समझे !

गुड ग्रौर भुने गेहूं की मिठाई को छेदी ग्रौर उसके भाइयों के तीन हिस्से उसने मुश्किल से कमर में लिपटे कपड़े के ही एक सिरे में लपेट लिए। घर जाते-जाते वह यह बात भूल गया कि लिपटी मिठाई छेदी को देनी है। हो सकता है वह जानबूझकर भूल गया हो।

यहां से मंसाराम की जिन्दगी की एक नई शुरुग्रात होती है।

शाम को लोगों ने इकट्ठा होना शुरू कर दिया। तख्त के पास थोड़ी दूर स्कूल की टाट-पट्टियां बिछी हुई थीं। इन टाट-पट्टियों पर थोड़े से ऐसे लोग बैठ गए थे जो धोती के ग्रलावा एक ग्रदद कुर्ता या कमीज भी पहने हुए थे ग्रौर उसके बाद बाकी दूसरे लोग।

मंसाराम कर्त्तव्यच्युत नहीं होना चाहता था। यह तमाशा तो सभी लोग देखेंगे, कुछ जिम्मेदारी भी तो निभानी चाहिए। उसने सोचा।

इस भीड़ से थोड़ा हटकर दो ग्रादमी कुछ गैसबत्तियां जला रहे थे। मंसाराम उन्हें गौर-से देखने लगा। दो गैसबत्तियां बार-बार धुग्रां छोड़कर पीली लपट देने लगती थीं। एक जल ही नहीं रही थी। बड़ी कोशिश के बाद हारकर जलाने वाले ने हवा भरने वाले पंप को खोलकर निकाला। उसमें चमड़े का वाशर कट-फटकर एक लुगदी जैसा बन गया था। वह ग्रादमी बोला : धत्तेरे की, वाशर ग्रब कहां से ग्राए !

इसी वक्त मंसाराम सामने ग्रा गया। थोड़ी ऊंची ग्रावाज में बोला : ऐसी गैसबत्तियां यहां नहीं चलेंगी, समझे ?

गैसबत्ती वाले उसे घूरने लगे। एक ने धीरे से कहा : ग्रपना

काम देखो ।

क्या ?—मंसाराम को गुस्सा आ गया : मैं तो अपना काम देख ही रहा हूं । छह में से तीन गैसबत्तियां खराब हैं । तीनों फौरन बदलो नहीं तो मैं प्रधान जी से कहता हूं । एक कौड़ी किराया नहीं मिलेगा, हां ।

तो हम क्या करें । मालिक ने जो भिजवाईं वही तो हम लाएंगे ।—गैसबत्ती की लपट कम-ज्यादा करते हुए दूसरा बोला ।

मंसाराम ने आसानी से न छोड़ने का फैसला कर लिया था ।

1 ~

मंसाराम के व्यस्त दिन शुरू हुए । वैसे तो मंसाराम ही क्या छेदी या कोई भी दूसरा साल में हर दिन व्यस्त ही रहता रहा है । मंसाराम भी उस तरह खाली कभी नहीं रहा । बस व्यस्तता और परेशानी के उन मिले-जुले दिनों के बीच तालाब से मछली या केकड़े खोजकर पकड़ने वाली व्यस्तता एक राहत जैसी होती थी क्योंकि उस बीच उन्हें लगातार मेहनत नहीं करनी होती थी बल्कि मछलियां खोजने के क्रम में विपर्यान्तर होते रहते थे । कभी सींग वाली मछली किसी कम चालाक शिकारी की हथेली फाड़ देती थी । उस वक्त उसके इलाज में एक नया उत्साह पैदा हो जाता था जिसका अन्त इस बात पर होता था कि कटी हथेली पर वह शिकारी पेशाब कर ले ।

एक बार चौधरी के लड़के ने बड़ी-सी कीप या भोंपू के आकार की टोकरी पानी में डाली और ऊपर के तंग सूराख में

हाथ डालकर मछली टटोलने लगा जो उसके खयाल से जरूर टोकरी में कैद हो गई थी। लेकिन जब उसका हाथ बाहर आया तो उसमें एक भद्दा, लिबलिब करता हुआ सांप लिपटा हुआ था। छेदी ने एक छुरी के सहारे सां। के टुकड़े न कर दिए होते तो सांप उसकी कलाई ही तोड देता। उसके बावजूद चौधरी के लड़के की बांह दो हफ्ते दर्द करती रही थी।

इस घटना के बाद वे लोग तरह-तरह के सांपों से संबंधित किस्से सुनाते रहे। उन्होंने बताया कि यूसुफ के पिता अपना छप्पर बना रहे थे कि उनको उंगली में कुछ चुभ गया। अगले बरस उस छप्पर को दुबारा ठीक करते वक्त उन्हें उसी जगह सांप का एक अस्थिपंजर मिला। उसे देखते ही यूसुफ के पिता समझ गए कि पिछले साल उन्हें सांप ने ही काटा था। और वे तुरन्त मर गए। तभी एक किस्सा किसी को और याद आ गया। नोहरी घास छील रहा था। घास में एक सांप ने उसे काट लिया। नोहरी ने सांप के डसे अपने अंगूठे को तुरन्त खुरपे से काट डाला और घर लौट आया। कई रोज बाद वह उधर गया तो देखा कटा हुआ अंगूठा सूजकर नीला पड़ गया था। उत्सुकता के कारण उसने उसे लकड़ी से दबाया तो वह फूट गया और जहरीले खून की एक बूंद उसके पैर पर पड़ गई। नोहरी वहीं का वहीं मर गया।

इस तरह मछलियों और केकड़ों की तलाश में उनकी व्यस्तता अक्सर रोचक भी होती थी। लेकिन मंसाराम अब जिस तरह व्यस्त हुआ था वह व्यस्तता इन सबसे अलग थी। एक तो उसे इस बात का सुख भी महसूस हो रहा था कि यह व्यस्तता सिर्फ पेट के धंधे की नहीं है।

भूसे को गाड़ी में भरने या गन्ने के रस से गुड़ तैयार करने में उसे अक्सर डांट या मार भी खानी पड़ जाती थी और उससे

वह दुखी भी होता था। लेकिन यह ऐसी गौरवमंडित व्यस्तता थी कि इसमें न डांट खाना उसे बुरा लगता था न मार खाना। एक बार ठाकुर गजराज सिंह के एक प्रचारक का भाषण होना था। प्रधान जी अध्यक्ष थे। पहनाने के लिए गेंदे के फूलों की मालाएं लेकर मंसाराम को तैयार रहना था। जाने कैसे मालाएं देते वक्त एक-दूसरे में फंस गईं। मंसाराम घबरा गया। मंच से हेडमास्टर साहब माला के लिए ललकारने लगे—अबे, क्या कर रहा है? माला क्यों नहीं देता?

हड़बड़ी में मालाएं और ज्यादा उलझ गईं, यहां तक कि खींचतान में टूट भी गईं। नतीजा यह कि दो की जगह एक माला रह गई जिसे पहनने के बाद गजराजसिंह के प्रचारक को देखकर ऐसा लगने लगा जैसे मोटे इजारबन्द के छोर गले से लटक रहे हों क्योंकि दूसरी माला के टुकड़े भी उसी में उलझे हुए थे। प्रधान जी को बिना माला के ही बैठना पड़ा।

उस दिन मंसाराम को जबर्दस्त डांट पड़ी। सबके सामने डांट पड़ी। लेकिन वह शर्मिंदा नहीं हुआ क्योंकि एक बेहतर काम में गड़बड़ी की वजह से डांट पड़ी थी, मशीन में ज्यादा गन्ने घुसाकर मशीन जाम कर बैठने जैसे घटिया काम के लिए नहीं।

मंसाराम धीरे-धीरे बेहतर और घटिया काम का फर्क भी समझ रहा था।

इसी तरह एक दिन और गड़बड़ी हो गई। दीवारों पर उसे कुछ नारे लिखने थे। नारे कुछ इस तरह थे—'ठाकुर गजराज सिंह को वोट दो' या 'ठाकुर गजराजसिंह को विजयी बनाएं' इत्यादि। बेहद जिम्मेदारी और महत्व का काम था जो एक बाल्टी घोले हुए गेरु और कूँची के साथ उसे सौंपा गया था। नारे के साथ चुनाव निशान यानी गुलाब का फूल भी बनाते जाना

था।

मंसाराम ने यह काम चूंकि बेहद लगन, ईमानदारी और कुशलता से करने का फैसला किया था इसलिए उसने एक तरफ कमल का फूल बनाया और नारे के दूसरी तरफ सुन्दर-सी मछली भी बना दी। किसी-किसी नारे के साथ कमल के फूल के बजाय उसने कनेर का फूल और स्वस्तिक भी बना दिया। बल्कि एक जगह तो नारे के साथ उसने अंगूर के गुच्छे और कलश बना दिए और बीच में नारा लिख दिया—'ठाकुर गजराज सिंह का चुनाव चिह्न।'

सबसे पहले इस गोलमाल का या मंसाराम की कलाधर्मिता का पता हेडमास्टर साहब को लगा। वे लोटे में पानी भरे हुए, कान पर जनेऊ लपेटे ऊसर की तरफ सुबह-सुबह पेट साफ करने जा रहे थे। मंसाराम को तो वे खुद ही पीटते अगर उन्हें पेट की सफाई के लिए बेचैनी न हो रही होती। मगर प्रधान जी ने उस की खासी ठुकाई की।

मगर इस पिटाई से वह खास प्रभावित नहीं हुआ। उसको अपनी बस्ती में सिर झुका कर आते भी नहीं देखा गया बल्कि कुछ लोगों को तो लगा शायद वह खुश ही था। वैसे बात सच भी थी। प्रधान जी की साइकिल पर खेल-खेल में ही एक दिन वह चढ़ने की कोशिश करने लगा तो जाने कैसे चेन टूट गई। उस बार की पिटाई दूसरी तरह की थी यह मंसाराम जानता था। इसीलिए इस बार पिटने पर वह शर्मिन्दा दिखने की शर्मिन्दगी को शर्मनाक समझता था।

अपनी फालतू चित्रकारी को सावधानी के साथ मिटाने के बाद वह घर लौटा तो मालूम हुआ उसकी मां को बुखार आ गया है। बुखार खासा ही था।

मंसाराम को एकाएक गुस्सा आ गया।

आपको इस बात पर आश्चर्य होना चाहिए कि यह गुस्सा लगभग उस शैली का था जैसा धन्नू प्रधान को आया करता था। पहले के क्षुब्ध मंसाराम से बिल्कुल अलग, वह लगभग प्रधान की तरह नाराज हुआ। उसे आमतौर पर जब गुस्सा आता था तो वह किसी गोजर की तरह बिलबिलाता था और कंधों को इस तरह झुका लेता था कि पिचक गया-सा लगता था लेकिन इस बार वह थोड़ा और फूल गया, तनकर खड़ा हुआ और गर्दन अकड़ाकर नाराज हुआ।

सब इसी वक्त बीमार पड़ो, मरो। मैं कहां किस काम में भिड़ा हूं और यहां अब सबकी तीमारदारी करो।—यह बात उसने इतने रोष से कही कि वहां सन्नाटा छा गया। यहां तक कि उसकी मां, जो उसे आया जानकर जरा जोर से कराहने लगी थी, सांस रोककर लेट गई।

उसकी बीबी ने बहुत धीरे-से कहा : गुस्सा न हो। जूड़ी बुखार है। हकीम साहब दवा दे देते—

अरे हकीम साहब तो धतूरा दे देंगे। मैं जो काम कर रहा हूं उसे भाड़ में झोंक दूं और अब काढ़ा-जुशान्दा बीनता फिरूं! यही न! यही काम रह गया है करने को?

रहने दे। तुलसी की पत्ती और कालीमिर्च का काढ़ा पी लिया है। ऐसे ही बुखार आ गया है। ठीक हो जाएगा।—मां ने कराहते हुए कहा।

आगे से मैं इस तरह की जरा-जरा-सी शिकायतें न सुनूं। हां। बताए दे रहा हूं।—उसने गुस्से की उसी सीमा पर ठहरे हुए कहा।

यहां मैं एक बात बता दूं। मंसाराम अभी तक जिस भाषा का प्रयोग सचमुच करता रहा है वह वही नहीं है जो अब उसके मुंह से बुलवाई है। यह अपेक्षाकृत कटी-छंटी ...।

है। मंसाराम जहां रहता है वहां इस भाषा का इस्तेमाल किसी-किसी मौके पर प्रधान या पंडित राधेश्याम जैसे लोग करते हैं। बाकी सब बहुत पुरानी किस्म की एक बोली बोलते हैं जिसे आप किताबों में अवधी के नाम से जानते हैं। चूंकि यह गाथा आपसे संबोधित है इसलिए मंसाराम और उसकी दुनिया की भाषा का मैं आपकी भाषा में अनुवाद ही दे रहा हूं।

आप सोचते होंगे, इस कथा के बीच में अचानक मैं क्यों घुस पड़ता हूं। इसकी ज्यादा सार्थक सफाई तो मैं नहीं दे सकता लेकिन अपनी इस हरकत के पीछे छुपी अपनी एक मजबूरी आप पर जरूर जाहिर कर देना चाहता हूं।

सच यह है कि अपनी पिछली कुछ गाथाएं और मंसाराम की यह गाथा लिखने से पहले एक तीखी ज़रूरत मैं अपने बारे में, अपनी खुद की जिन्दगी के बारे में कुछ लिखने की महसूस करता रहा हूं। लेकिन जब कभी तरतीबवार कुछ उस तरह का लिखना शुरू किया वह किसी दूसरे की कहानी बनकर निकला। इस बार भी ठीक यही हुआ।

यहां आप यह आम राय न बना लें कि लेखक अपने पात्रों में अपनी जिन्दगी की तस्वीरें देता है। सच बात तो यह है कि यह सरलीकृत सिद्धांत उन लोगों ने गढ़ा है जो इस प्रक्रिया के बारे में बिल्कुल ही कुछ नहीं जानते।

अपने को देखते वक्त मुझे मंसाराम इसलिए नहीं दीखता कि वह मेरी तस्वीर है बल्कि इसलिए दीखता है कि मैं वहां कहीं होता ही नहीं सिर्फ मंसाराम ही होता है। मंसाराम ही पैदा होता है, मंसाराम ही जीता है, लड़ता है, हारता है या मरता है। मंसाराम ही समाज होता है, व्यक्ति होता है, परिवार और इतिहास होता है। मैं उस मंसाराम को देखे जाने का एक सूराख भर होता हूं और जाहिर है कि किसी सूराख पर

कितना कुछ और क्या लिखा जा सकता है ? मास्टरों की बात मानूं तो मंसाराम सूराख का प्रतिबिंब कहा जाएगा जो निहायत बेमौजूं और बेमायनी बात होगी। बहुत ज्यादा कहूं तो यह कह सकता हूं कि अपनी तरफ देखने पर एक बहुत उलझा हुआ ढेर दिखाई देता है जिसका हर स्पर्श मंसाराम का कोई हिस्सा होता है।

यह मैं अपने को गौरवान्वित करने के लिए भी नहीं कह रहा और आम मध्यवर्गीय प्रगतिशील लेखक की तरह मंसाराम के प्रति अपनी उदारता और एकात्मता के कारण भी नहीं कह रहा हूं। पिछले कुछ बरस ऐसे अजीब गुजरे हैं जिनमें मैं जहां था वहां नहीं रहा और उस खाली हुई जगह—खैर छोडिए। अब जरूरत से ज्यादा ही कुछ कहा जा रहा है और लगभग सफाई बनता जा रहा है। इसलिए अगर आप मेरा इस तरह बीच में आना और उस आने की सार्थकता स्वीकार न करें तो मुझे बदतमीज़ और दुरभिमानी मान लें, मैं एतराज नहीं करूंगा। चूंकि इस तरह मैं मंसाराम की ज्यादा प्रामाणिक तस्वीर देने में सफल होने की उम्मीद रखता हूं इसलिए आपके एतराजात या आपके संदेह नजरंदाज़ करने की इजाजत मान लेता हूं।

तो मंसाराम उस वक्त इस तरह क्षुब्ध हुआ कि घर में पहली बार उसने अपनी एक नई तस्वीर बनाने में सफलता पा ली। इससे पहले वह नाराज़ होता था तो बीवी भी उससे लड़ती थी। वह भोंडी गालियां देता था तो पत्नी भी अपेक्षाकृत कम भोंडी सही, गालियां ज़रूर देती थी। मां भी खासी चीख-पुकार कर लेती थी।

इस बार के उसके गुस्से का हल्का प्रतिवाद करने के बाद पत्नी भी थोड़ी चकित हुई और मां भी। आंगन में खेलता

पड़ोसी का वच्चा कहीं पकड़े मेढ़क की टांग में धागा वांधे हुए ज्यों का त्यों खेलता नहीं रहा। थोड़ा सहम गया।

मंसाराम काम खत्म करके घर लौटा था। अभी उसे कोई काम भी नहीं था। शाम को या अगली सुवह घन्नू प्रधान फिर उसे कोई नया काम वताते। तव तक वह घर में लेटे रहना चाहता था। मगर मां की वीमारी पर क्षुब्ध होकर अपनी व्यस्तता का जो नाटक उसने कर डाला था उसके निर्वाह के लिए घर में इस तरह वक्त विताना वेमौजूं था। लिहाजा जोर-ज़ोर से उसी तरह अपनी जिम्मेदारियों और परेशानियों का ऐलान करता हुआ वह घर से वाहर आ गया।

छेदी लल्लू के साथ सुखाई हुई छोटी-छोटी झिल्लियां इकट्ठी कर रहा था जो दूर से देखने पर पूड़ियों का ढेर लग रही थीं। मंसाराम एक तो गुस्से में था फिर इस वक्त झिल्लियों, खालों और आंतों के वदवूदार माहौल से अलग फूलों, सफेद कपड़ों और रंगविरंगी झंडियों वाले माहौल में काम कर रहा था इसलिए गुजरते वक्त उसने छेदी की तरफ नहीं देखा।

लेकिन छेदी ने उसे देखा। इशारे से उसने उसे लल्लू को भी दिखाया। मंसाराम चूंकि ज्यादा ही असंपृक्त लगा इसलिए छेदी अपने को रोक नहीं पाया। ऊंची आवाज में वोला: नेता जी जा रहे हैं। साले चौधराहट चढ गई है!

मंसाराम ने सुना और आगे निकल गया। अभी उसका प्रधान जी की तरफ कोई काम नही था। स्कूल वन्द था। आज कोई भाषण भी नही होना था। प्रधान जी ने वताया था कि अव घर-घर में वोट के नम्वरों की पर्चियां पहुंचनी थीं। लेकिन पर्चियां अभी आई नही थीं। हां, गांव के वच्चों का एक जुलूस निकालना था। बड़ों के जुलूस का आयोजन हेडमास्टर साहव, प्रधान जी और पंडित राधेश्याम खुद ही कर रहे थे। लेकिन

बच्चों के जुलूस का काम भी एक-दो दिन बाद ही होना था। फिर भी मंसाराम ने सोचा अभी से कुछ बच्चों को तैयार कर लिया जाए। वह इस वक्त किसी महत्त्वपूर्ण और कौमी मसले में व्यस्त होने के लिए खाली भी था।

पावू चौधरी के घर के सामने तीन-चार बच्चे एक बकरी की सवारी करने की कोशिश में थे। हालांकि बच्चे खासे दुबले-पतले, छोटे और हल्के थे फिर भी बकरी किसी भी बच्चे के ऊपर बैठने के बाद अगले या पिछले पैरों के बल गिर जाती थी और अपने आप को उस वजन से मुक्त कर लेती थी।

अबे मर जाएगी, क्या कर रहे हो!—मंसाराम ने उन्हें घुड़का।

नहीं चाचा, ये बकरी बड़ी मक्कार है। जानबूझकर गिरती है।—एक लड़के ने कहा।

यह मौका अच्छा था। मंसाराम बोले: अच्छा सुनो तुम लोग जुलूस निकालोगे?

जुलूस?—बच्चे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। जुलूस निकालने की धारणा उनके लिए बिल्कुल अपरिचित थी। जुलूस निकालने का मतलब उन्हें कुछ-कुछ वैसा लगा जैसे बबूल के पेड़ से गोंद निकालते है या मरे हुए जानवर के पेट से आमाशय की थैली निकालते है।

कैसे निकालेंगे चाचा?—दूसरे बच्चे ने पूछा।

अरे नारा लगाते हैं नारा।—मंसाराम ने कहा।

नारा?

हां। जैसे एक बोलता है 'इंकलाब'। दूसरा बोलता है 'जिन्दाबाद'। एक बोलता है 'गांधी बाबा' और बाकी बोलते है 'जिन्दाबाद'। लाइन में चलना पड़ता है। लाइन बनाकर। आगे-पीछे। लबड़-धबड़ नहीं। समझे?—मंसाराम इतने समय में बड़ी साव-

धानी से ये सूचनाएं इकट्ठी कर चुका था।

कब निकालेंगे जुलूस, चाचा ?

निकालेंगे। झंडियां दूंगा। मैली मत कर देना।—मंसाराम ने हिदायत दी।

अभी निकालें जुलूस ?—पहले बच्चे ने पूछा।

अभी ?—मंसाराम इसके लिए तैयार नहीं था। जल्दी से बोला : अभी नहीं। कल निकालेंगे। और सब बच्चे भी बुला लेना—

मंसाराम की बात अधूरी रह गई क्योंकि जाने कब छेदी वहां आ गया था। छेदी ने थोड़ी दूर से ही ललकार कर कहा : पांचू काका अब तुम्हीं देख लो। ये मंसा साला हमारे पेट पर लात मार रहा है और खुद नेतागीरी झाड़ता फिर रहा है।

क्या हुआ रे ?—पांचू अपने दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

मैं पेट पर क्या लात मार रहा हूं काका, प्रधान जी ने कहा है कि बच्चों का जुलूस निकलेगा—

प्रधान जी की बात पर पांचू चौधरी खामोश हो गया। छेदी भी थोड़ा ढीला हुआ : जुलूस तो कल निकलना है और तुम बच्चों को अभी से जोते दे रहे हो। तांत उतरवानी है। रात को तनी रह गई तो सील जाएगी न !

यह तर्क कटने वाला नहीं था। मंसाराम ने भुनभुनाकर कुछ कहना चाहा लेकिन पांचू चौधरी की आवाज में दब गया। पांचू चौधरी ऊंची आवाज में बोले : जुलूस निकल जाएगा। तू अपना काम देख।

मंसाराम बाकी दिन बिताने की सारी योजनाएं भूल गया। हतोत्साह होकर बिना कोई फैसला किए हुए भी वह यूसुफ हकीम के घर पहुंच गया।

मां के लिए हकीम यूसुफ की दी हुई दवा की वजह से जो गड़बड़ हुई उसे तो मंसाराम अक्षम्य ही कहता अगर मामला खुद-ब-खुद एक नया मोड़ न ले लेता। यूसुफ ने कई बार अपनी मटमैली सफेद दाढ़ी के बाल चुटकियों से मरोड़ने के बाद जंग खाए टिन के डिब्बे से निकालकर सूखे पेड़-पौधों की कई किस्म की पत्तियां, जड़ें और टहनियों की जो पुड़ियां दीं वे खासी ही मोटी थीं। उन्हें कमर में पहने तंग से कपड़ों में खोंसना मुश्किल काम था। दो छोटी पुड़ियां कमर में खोंसने के बाद एक बड़ी पुड़िया मुट्ठी में थामे जब वह यूसुफ के दरवाज़े से बाहर आया, उसकी निगाह एक मजबूत किस्म की मोटर गाड़ी पर पड़ी जो दुमुट के चबूतरे से थोड़े फासले पर खड़ी थी।

वह वहां कब आई ? मंसाराम को मां की इस बेतुकी बीमारी पर एक बार फिर गुस्सा आया। अगर वह दवा बंधवाने के इस घटिया काम में न फंसा हुआ होता तो उस मोटर गाड़ी के करीब पहुंचने वाला शायद वह सबसे पहला आदमी होता।

वह एक धूल भरी जीप थी जिस पर बूढ़े ठाकुर गजराज सिंह थे। मंसाराम उन्हें पहचान गया। उनके साथ ही उस गाड़ी पर एक-दूसरे पर लदे-अटके सात-आठ लोग और थे। वे सभी मंसाराम को शानदार लगे। उन्होंने बहुत सफेद धुले खादी के कुर्ते पायजामे वगैरह पहन रखे थे। जाहिर है कि ऐसे बेहतरीन कपड़े पहनने वाले उस मोटर में ही बैठने के हकदार थे। गाड़ी के एक तरफ प्रधान घन्नू और हेडमास्टर थे और दूसरी तरफ कुछ और लोग। पीछे दूर तक बच्चों और औरतों की उत्सुक भीड़ खड़ी थी।

गजराजसिंह को मंसार से आगे बेहटा तक जाना था। [illegible] सड़क छोड़ने के बाद जो बस्तियां मिलें पथरीली या [illegible] भरी दूर-दूर तक फैली जमीन में उगे हुए जंगली [illegible]

तरह दुबककर बैठ गई थीं और गांव कहलाने लगी थीं, उन्हीं में से एक मंदार भी था। मंदार का रास्ता गजराजसिंह को नहीं पता था। वह सिर्फ चैलपुर वालों को ही पता था। इसी तरह मंदार से आगे जबरी का रास्ता मंदार वालों को पता था और जबरी वालों से बेंहटा का पता चल सकता था।

ठाकुर गजराजसिंह को बेंहटा तक जाना था। धन्नू प्रधान खुद रास्ता बताने के लिए जाने को तैयार थे लेकिन उन्हें ठाकुर ने खुद ही मना कर दिया।

मैं चलूं ?—छेदी उसी वक्त सामने आ गया। वह जैसे इस समस्या का इन्तजार ही कर रहा था।

चलो।—जीप पर से किसी ने कहा। ठाकुर गजराजसिंह इस वक्त अपने पास बैठे एक और आदमी से किसी बात में व्यस्त हो गए थे।

हां छेदी चला जाएगा।—धन्नू ने भी सहमति दे दी।

मंसाराम अवसर चूकने में, कहिए, बाल-बाल ही बचा था। उसने यह संवाद सुना। स्थिति की गंभीरता उससे छुपी नहीं रही। वह लगभग दौड़ता हुआ वहां पहुंचा। अपनी घबराहट में वह कुछ इस तरह झपटा था गोया जीप पर हमला ही कर बैठेगा। बल्कि जीप के करीब पहुंचकर रुकते-रुकते भी वह उससे लगभग टकरा गया। धन्नू प्रधान एकदम भडक गए। जीप के लगभग सभी लोग उसकी तरफ घूरने लगे।

अबे क्या है रे ? चमगादड़ की तरह आ गया।—धन्नू ने उसे कंधे से धकेलते हुए पूछा।

प्रधान जी वो बात ये है कि बच्चों का जुलूस निकलना है न—

अरे ? इसको देखो ! हम किस काम में भिड़े हैं—

नही प्रधान जी, सुनिए तो।—मंसाराम जी जान से संघर्ष

करने लगा : छेदी को तो बच्चों के जुलूस के इन्तजाम के लिए मैंने कह दिया है—

ओह !—जीप पर से किसी ने एकदम फैसला दे दिया : तो उसे छोड़ो। तुम आओ।

मंसाराम इस तरह अनायास सफल हो जाएगा इसकी कल्पना उसने खुद भी नहीं की थी। अभी उसे दवा देने के लिए घर जाना था लेकिन मां पर एक बार फिर उसे इसीलिए गुस्सा आया कि दवा के दो कौड़ी के चक्कर में कितनी बड़ी जिम्मेदारी निभाने का मौका छोड़ना पड़ता।

हां, इस हड़बडी में एक चूक उससे हो गई। इस चूक का का पछतावा उसे बहुत दिनों तक रहा। उसने छेदी को जाने से रोकने के लिए कह दिया था कि उसे उसने बच्चों के जुलूस की जिम्मेदारी सौंप दी है। जुलूस निकालने का सुअवसर वह कभी किसी भी हालत में अपने हाथ से नहीं जाने देता।

जीप के अन्दर बैठ सकने की कहीं कोई जगह नहीं थी। होती भी तो उसका वहां बैठ पाना मुश्किल ही था। चलते-फिरते या काम करते वक्त उसके काई जमे से शरीर पर तेल और धूल की अजब चिपचिपी परत चढ़ जाती थी। एक बार उसकी बांह हेडमास्टर के कुरते से रगड़ गई थी। हेडमास्टर ने या वहां खड़े बांस गड़वाते प्रधान ने तो इस बात पर कुछ भी नहीं कहा लेकिन मंसाराम ने जैसे मन ही मन इसके लिए खेद प्रकट किया था। कुर्ते पर जहां उसकी बांह रगड़ी थी वहां मैल का साफ दाग उभर आया था। ऐसे शरीर को लेकर वह सफेद बत्तख जैसे चमकीले कपड़े पहने लोगों के बीच घुस पड़े इतना बदतमीज़ वह नहीं था। हां, उसे यह एहसास ज़रूर होने लगा था कि उसके शरीर में जाने कौन-सी गड़बड़ी थी कि सुबह तालाब में खासी अच्छी तरह नहाकर वह चिपचिपाहट छुड़ा लेने

के बावजूद थोड़ी देर बाद फिर ज्यों की त्यों वहीं मौजूद मिलती थी।

जीप इतनी ज्यादा भरी हुई थी कि उनमें से दो अपना पिछला हिस्सा लगभग बाहर लटकाए हुए किसी तरह अपने आपको अन्दर बनाए रखने का सुख ले रहे थे। गाड़ी में पीछे की तरफ निकले मुट्ठी के बराबर कांटे की आकृति के एक मजबूत पुरजे पर एक पंजा टिकाकर दूसरी टांग लटकाए हुए मंसाराम इस तरह गाडी में चिपका था जैसे वहां एक तिलचट्टा आ बैठा हो। मुट्ठी में उसने दवा की पुडिया भी पकड़ी हुई थी और ऊपर की एक छड़ भी।

अब वह गांव के कुछ खास भाग्यशाली लोगों में अपने आपको पा रहा था जो मोटर जैसी चीज को छू ही नहीं सकते उस पर सवारी भी कर सकते हैं। अगर वह यूसुफ के चक्कर में थोड़ी-सी देर और कर लेता तो यह आनन्द छेदी उठा रहा होता।

मंसाराम जरूर अपने इस खयाल में कुछ ज्यादा खो गया होगा तभी तो रास्ता बताने का काम वह भूल गया। गाड़ी के अन्दर से किसी ने जोर से पूछा : अरे अब कुछ बोलो भी लो, किधर जाना है ?

मंसाराम कर्त्तव्यच्युत पकड़े जाने की अनुभूति से घबरा गया। इस घबराहट में मुट्ठी में पकडी हुई दवा की पुड़िया सरकने लगी। उसे संभालने के चक्कर में ऊपर की छड भी हाथ से फिसल गई। गाड़ी उस जगह ज़्यादा तेज़ नही चल रही थी लेकिन गाडी से गिरने के बाद मंसाराम को चोट की तकलीफ से पहले एक आश्चर्य हुआ।

जितनी देर में वह गाड़ी के कुडे से फिसलकर जमीन पर आया उतनी देर में गाड़ी करीब दस गज आगे निकल चुकी थी।

गिरने का यह अनुभव उसे बहुत बाद तक मजा देता रहा। उसे लगा जैसे गाड़ी से वह गिरा ही नहीं बल्कि पीछे की तरफ दाग दिया गया। बैलगाड़ी से गिरने और मोटर से गिरने में कितना बड़ा फर्क होता है इस बात ने उसे चकित कर दिया।

गाड़ी तुरन्त रुकी और कुछ लोग कूदकर उसकी तरफ लपके। मंसाराम सबसे पहले लज्जित हुआ कि अपने अनाड़ीपन के कारण उसने उन लोगों की यात्रा में गड़बड़ी पैदा कर दी। वह तुरन्त उठा और उठते ही कराह पड़ा। बेसाख्ता कराह पड़ा। उसके बाएं पैर में जबरदस्त मोच थी और कंधे से लेकर कुहनी तक खाल खासी कट-पिट गई थी।

क्या हुआ ? बहुत चोट आई है ?—एक ने पूछा।

मंसाराम ने बोलना चाहा लेकिन सिर्फ होंठ बिगाड़ कर रह गया। जल्दी से सिर हिलाकर इनकार करते हुए उसने गाड़ी की तरफ जाने की कोशिश की। उसके टखने में इतना भयानक दर्द हुआ कि वह चकरा गया। शायद वह गिर ही पड़ता कि आए हुए लोगों ने उसे थाम लिया।

अब ठाकुर गजराजसिंह भी गाड़ी से नीचे आ गए। उसे देखकर बोले : काफी चोट आ गई शायद। वो डिब्बा लाओ।

ड्राइवर एक छोटी-सी संदूकची ले आया।

क्या वह मक्कारी ही थी कि मंसाराम ने थोड़ी देर के लिए आंखें बन्द कर ली और चुपचाप उपचार कराता रहा।

चल पाओगे ?—किसी ने पूछा।

मंसाराम ने जवाब नहीं दिया।

इसे चोट ज्यादा आई है क्या ?—गजराजसिंह ने चिन्ता जाहिर की।

मंसाराम फिर कुछ नहीं बोला।

इसे अस्पताल ले जाना पड़ेगा, लगता है . ।राजसिं

बोले।

अब मंसाराम बोला। बल्कि बोला कम, कराहा ज्यादा : ठीक हो जाएगा साहब, कोई बात नहीं है—

किसी ने धीरे-से सम्मति जाहिर की : ऐसी चोटें इन लोगों को अक्सर लगती रहती हैं—

तुम चुप रहो जी।—गजराजसिंह ने उस आदमी को थोड़ा डांटा फिर मंसाराम की पसलियां वगैरह टटोलते हुए बोले : यहां कुछ तकलीफ है?

मंसाराम ने इनकार किया।

जरा-सा चलो।

साहब, पैर में मोच है।—एक ने मंसाराम को चलने के लिए उकसाते हुए ठाकुर गजराजसिंह को आश्वस्त करना चाहा।

मोच? कहीं फ्रैक्चर ही न हो।—ठाकुर चिंतित हो गए। फिर क्षुब्ध होकर बोले : तुम लोग नहीं देख सकते थे कि उसे जानवर की तरह लटकाए हुए थे? इसे आगे बैठाओ।

एक पांव पर लगभग समूचा भार डालते हुए लोगों का सहारा लिए मंसाराम गाड़ी तक आया। उसे अगली सीट पर बैठाकर बाकी लोग फिर उसी तरह गाड़ी के अंदर समा गए।

उसके शरीर का दर्द अब बहुत बढ़ गया। टिंक्चर लगाकर रुई और पट्टी कंधे से बांह तक लपेटते वक्त जो दर्द हुआ था उससे कहीं ज्यादा तीखा दर्द। वह सीट से गर्दन टिकाए हुए था। गर्दन तिरछी करके उसने अपने कंधे और बांह पर लिपटी वह उजली, बहुत उजली पट्टी देखी जिस पर मैले खून और टिंक्चर के दाग उभर आए थे। उसे यह बहुत अच्छा नहीं लगा। इतनी बेदाग उजली पट्टी वैसे उसे मिल जाती तो वह उसे जख्म पर लपेटने के बजाय रख ही लेता।

उस पट्टी ने उसे कुछ गौरवान्वित किया। गौरव की उस अनु-

भूति और ठाकुर गजराजसिंह के शरीर से सटकर बैठ पाने के सौभाग्य से वह इतना द्रवित हुआ कि आंसू आ गए।

बहुत तकलीफ हो रही है?—ठाकुर ने उसका चेहरा देखकर पूछा।

मंसाराम और ज्यादा अभिभूत हो गया। उसकी यह भावुकता सायास नहीं थी, मगर सहज भी नहीं थी। लेकिन इसका बहुत बड़ा लाभ उसे मिला। ठाकुर अगले गांवों में थोड़ी-थोड़ी देर ही रुके और फिर चैलपुर नहीं आए। मंसाराम को वे अपने साथ लेते गए।

रात मंसाराम का टखना बहुत सूज गया था और अब वह अपना पंजा भी नही टिका सकता था। शहर लौटते हुए ठाकुर गजराजसिंह ने एक टार्च की मदद से उसके पैर को ठीक से देखा। वे कुछ चिन्तित हो आए। उनके चिन्तित होने पर उनके साथ के और लोगों ने कुछ और गंभीरता से चिन्ता प्रकट की।

साहब, कहीं हड्डी न टूट गई हो।—एक ने कहा

हड्डी टूटी होती तो बुखार आ जाता।—पिछली तरफ बैठे किसी व्यक्ति ने उस घटना के प्रभाव को थोड़ा कम करने की नीयत से कहा।

पहले आदमी ने फौरन मंसाराम का बदन टटोला और अपनी धारणा की सत्यता पर जोर देते हुए बोला : बुखार है। बदन गरम है।

मंसाराम इतने के बावजूद गाड़ी के बाहर की दुनिया चलती गाड़ी से कैसी दिखती है, यह अनुभव बटोरने में ज्यादा व्यस्त था। गोकि अंधेरा हो गया था लेकिन गाड़ी के सामने की बहुत तेज बत्तियों से सड़क के दोनों तरफ खड़े काले दरख्तों से घिरा अंधेरा इस तरह कटता चला जा रहा था जैसे मरे हुए भैंसे की खाल को तेज़ छुरी बड़े सर्राटे से काटती चली जाती है।

अस्पताल ठाकुर गजराजसिंह खुद तो नहीं गए मगर उन्होंने अपने घर से फोन कर दिया। उसे गाड़ी से उतारा नहीं गया था। ठाकुर के लम्बे-चौड़े मकान के सामने चहारदीवारी से घिरी जगह पर एक तम्बू लगा था। उस तम्बू के नीचे भी बिजली की रोशनी थी। काफी लोग ठाकुर के लौटने का इंतज़ार कर रहे थे मगर ठाकुर ने मंसाराम की उपेक्षा नहीं की। गाड़ी से उतरते ही बोले : देखो, इसको अस्पताल ले जाओ। मैं डाक्टर मोंगिया को फोन कर देता हूं। इसका एक्सरे करा लेना और जरूरत हो तो पलस्तर चढ़वा देना।—

इतने कम समय में, इतनी तेज़ी से और इतने असाधारण अनुभव बहुत कम ही किसी को मिलते हैं। मंसाराम पिछले चन्द घंटों में नये और अनोखे अनुभवों के एक समूचे मेले से गुज़र आया।

ठाकुर तो उसे उसी गाड़ी पर गांव भी भिजवा देते अगर किसी ने उन्हें यह न बताया होता कि गाड़ी तो अब दो रोज के लिए जिले के दूसरे सिरे पर जाएगी और चैलपुर जाकर लौटने में समय बहुत लग जाएगा।

जितना कुछ हुआ वही क्या कम था? फिर मंसाराम को शहर से लौटने के लिए पूरी तरह अकेला भी नहीं छोड़ा गया। उसे बस पर बैठाकर उसे टिकट दिलवा दिया गया और एक रुपया आगे के खर्च के लिए ऊपर से दिया गया था।

बस चल पड़ने के बाद मंसाराम ने अपने को नये सिरे से देखा। नये सिरे से ही देखना था क्योंकि जैसा मंसाराम किसी तिलचट्टे की तरह चैलपुर में ठाकुर गजराजसिंह की जीप के पीछे चिपटकर गांव से बाहर निकला था वैसा अब वह नहीं था। सहसा एक दिन में ही वह बिल्कुल दूसरा मंसाराम हो चुका था।

ठाकुर गजराजसिंह के पिता ने उसे सहारे के लिए अपनी एक

पुरानी छड़ी दे दी थी। उसके बुखार की संभावना पर एक कुर्ता ग्रौर पायजामा उसे ग्रस्पताल जाने से पहले ही पहना दिया गया था। गोकि दोनों ही कपड़े काफी पुराने थे लेकिन बेहद उजले धुले हुए थे बल्कि उनमें एक ग्रच्छी-सी गंध भी निकल रही थी। ग्रस्पताल वाले ग्रगर थोड़ी-सी सावधानी बरतते तो उसके इन कपड़ों पर दाग लगने से बच जाते।

उसके कुर्ते के नीचे कंधे ग्रौर बांह पर पहले जैसी ही एक नई उजली ताजी पट्टी बांध दी गई थी जिसे बस में बैठे-बैठे वह कुर्ते के बटन खोलकर एक बार झांक चुका था। उसके पैर पर भी उतना ही उजला पलस्तर चढ़ गया था। जिसने पिंडली के बीच तक का हिस्सा ढक लिया था। पंजा सामने से खुला था जिसमें से उसकी बैंगन के रंग की उंगलियां बाहर निकली हुई थीं। काश, वह उन उंगलियों को ग्रन्दर समेट सकता या फिर ग्रस्पताल वाला इतनी कंजूसी न करता ग्रौर पलस्तर को जूते की तरह चढ़ा देता। उसके खयाल से उंगलियां खुली रख कर ग्रस्पताल वाले ने कंजूसी की थी। मगर जो था वह भी क्या कम था!

मंसाराम ने ग्रपने शरीर पर नजर डाली। कंधे ग्रौर ग्रास्तीनों से लेकर पैर के पंजे तक। वह ग्रब कैसा लगने लगा है यानी उसमें जो परिवर्तन हुग्रा है वह कितना ग्राश्चर्यजनक हो सकता है, इसका सही-सही ग्रनुमान उसे नहीं हुग्रा। ग्रौर तब उसने देखा उसके पास की खाली [illegible] बूढ़ा ग्रादमी ग्राकर इत्मीनान से बैठ गया। [illegible] ग्रौर एक छोटी-सी बोरी में लपेटा कोट [illegible] दोनों के [illegible] खींचा फिर सीट के नीचे सरका दिया।

की हो गई थी। कंधे पर एक अंगोछा था।

सामान सीट के नीचे घुसाने की प्रक्रिया में उसका भूरे बालों से भरा चिपचिप करता हाथ मंसाराम के पायजामे से रगड़ा। मंसाराम ने एक झटके से अपना पैर खींचा। उसके दिमाग में अपनी चिपचिपी बांह से हेडमास्टर के कुर्ते में लगा दाग चमक गया। हेडमास्टर द्वारा उस दाग की उपेक्षा की याद मंसाराम को थी। अपने पायजामे से बूढ़े की आस्तीन की रगड़ पर एक क्षण में जो क्षोभ उसके मन में पैदा हुआ उसे उसने तुरन्त दबाया। लेकिन अब उसने पाया उसके कुर्ते का कोना बूढ़े के कूल्हों के नीचे दबा है। यह बदतमीज़ी है, उसने सोचा। आखिर कुछ तो खयाल करना चाहिए!

अरे, जरा देखकर बैठो न! —मंसाराम ने भरसक अपना स्वर संयत किया लेकिन उसकी खीज छुप नहीं सकी। बूढ़ा थोड़ा-सा अलग खिसक गया। मंसाराम को इस फासले पर संतोष हुआ। संतोष इसलिए भी हुआ कि बूढ़े ने उलटकर जवाब नहीं दिया। एक जोड़ा सफेद कपड़ा कितनी अहमियत रखता है। इन कपड़ों के खोल से बाहर मंसाराम क्या अपने और बूढ़े के बीच यह फासला बना सकता था?

जुलूस खासा ही जोरदार था। छेदी को जुलूस का अनुभव बिल्कुल नहीं था। घनिकलाल प्रधान के घर पर ठाकुर गजराजसिंह ने काफी झंडे रखवा दिए थे। उन्हीं में से दो झंडे अरहर

के पेड़ की लम्बी छड़ियों में लगाकर बच्चे नारे कम शोर ज़्यादा करते हुए सबसे पहले धनिकलाल की तरफ से निकले। थोड़ी ही देर में बारह-तेरह बच्चों की भीड़ कोई पचास बच्चों में बदल गई थी। छेदी ने अपनी ही कल्पना से इस आयोजन में एक ऐसा इज़ाफ़ा कर दिया जिसने अगले चन्द रोज़ में चुनाव का माहौल ही बदल दिया।

छेदी बच्चों की तरफ से एक माला ले आया था जिसे उसने धनिकलाल को पहनवा दिया।

गली के मोड़ से गुज़रते हुए यह मालाबाज़ी संकटा तिवारी ने देखी। इतने दिनों के आयोजन में पहली बार उन्हें यह मामला बुरा लगा। ठाकुर गजराजसिंह का सम्मान तो होना ही होना था लेकिन तिवारी जी को साफ दिखाई दे गया कि इस सारे उत्साह के पीछे धन्नू या धनिकलाल प्रधान बड़ी सावधानी और होशियारी से अपनी प्रभुता को भी मज़बूत कर रहे थे। माल्यार्पण के इस दृश्य को दूर से ही देखकर तिवारी अपने घर चले गए। इसके अलावा अभी और कुछ उन्हें सूझ भी नहीं रहा था। पिछले चुनाव में किसान पार्टी के प्यारेलाल ठाकुर गजराजसिंह के खिलाफ चुनाव लड़े थे। तिवारी जी ने उनकी झंडी अपने मकान की छत पर लगा रखी थी। उनका ख्याल था कि ठाकुर का ज़ोर बाहर से चाहे जितना दिखे जीत आखिर प्यारेलाल की ही होगी। लेकिन प्यारेलाल की ज़मानत ज़ब्त हो गई थी। तिवारी जी ने वह झंडी चुपके-से रात में ही उतार दी थी।

दूसरे दिन वे निश्चय ही ठाकुर गजराजसिंह की राष्ट्रीय पार्टी की झंडी लगा लेते लेकिन सुबह-सुबह ही धन्नू ने उन्हें मुस्कुराते हुए सुझाया : तिवारी जी, तुम्हीं झंडी लगा लो अब।"

तिवारी जी बोले कुछ नहीं। उन्होंने छत पर लगा [illegible] झंडी का बांस भी उतार दिया। वोट की स्थिति ये [illegible]

विरोध पक्ष में आ खड़े हुए थे। हां यह जरूर था कि अपने विरोध को वे इससे आगे खींच सकने की स्थिति में नहीं थे।

तिवारी छेदी जैसे लोगों से सहानुभूति रखें ऐसा संस्कार उनका भी नही था, धन्नू प्रधान का भी नही था। गांव के इस हिस्से में रहने वाले किसी को भी कोई खास सहानुभूति नहीं थी। जो रिश्ता था उसे घृणा या नफरत कहा जाए ऐसा भी नही था। एक फासला था जिसे दोनों पक्षों ने स्वीकार कर रखा था। हां, छेदी या पांचू जैसे लोगों से इस तरफ के लोग कभी-कभी नाराज हो लेना गलत नहीं मानते थे। ऐसी नाराजी का सबसे ज्यादा हक धनिकलाल प्रधान को था।

तिवारी ने दूसरा झंडा नहीं लगाया और जाहिरा तौर पर प्रधान की राजनीति का कोई सक्रिय विरोध करने का उद्यम भी नही कर पाए, लेकिन एक परिवर्तन बहुत तेजी से हुआ। तिवारी पांचू जैसे लोगों से सहानुभूति करने लगे। प्रधान चूंकि उन्हें डांटते थे इसलिए तिवारी कोमल हो गए। प्रधान जमकर काम कराते थे, तिवारी काम ज्यादा करने पर जोर कम देने लगे बल्कि गाहे-ब-गाहे उन्हें भुने चने या आटे के लड्डू भी खिला देते थे। धन्नू प्रधान को तिवारी की इस उदारता की सूचना मिलती थी, और ऐसी हर सूचना उन्हें खलती थी। एक बार तिवारी ने उनकी ऊंची ललकार सुनी थी। शायद तिवारी के आसपास होने की प्रतिक्रिया में ही वह ललकार लगाई गई हो: हरामखोरो, चरबी चढ रही है लड्डू खा-खाकर! —

तिवारी जी ने सुना था और उसके व्यंग्यार्थ को अपने ऊपर फेंककर मारे गए पत्थर की तरह मुह फेरकर झेलते हुए सिद्दीक की तरफ निकल गए थे। सिद्दीक अपने सारे परिवार की नापें दिलवा रहा था और नये खरीदे कपड़ों की कई ढेरियां जमीन पर पड़ी थी। सिद्दीक से तिवारी का कोई खास गठजोड़ नहीं था।

बस, वह तिवारी की थोड़ी-सी इज्जत करता था क्योंकि जन्माष्टमी में मस्जिद के पास से बाजा बजाते हुए निकलने के सवाल पर तिवारी सिद्दीक और यूसुफ के तर्कों के प्रति थोड़ा-सा नरम रुख रखते रहे थे और दारोगा के आने पर उन्होंने झूठ नहीं बोला था, साफ कह दिया था कि पहली गाली श्यामलाल सुनार ने ही दी थी।

सिद्दीक ने अपने लड़के से पान मंगवा दिए थे जो धागे में किसी मरे चूहे की तरह लटकाकर तिवारी जी के लिए आए थे।

धन्नू प्रधान की स्पष्ट आलोचना न होने के बावजूद जो बातचीत हुई थी उसने तिवारी और सिद्दीक को गैरजाहिरा तौर पर धन्नू के और ज़्यादा सामने और ज़्यादा एक साथ खड़ा कर दिया था।

छेदी ने धनिकलाल प्रधान को हार पहनवाया और फिर बाकायदा नारे भी लगा दिए। ठाकुर गजराजसिंह की बात दूसरी थी। उनके नारे लग सकते थे। धन्नू प्रधान के नाम के नारे तिवारी ने सुना तो उन्हें लगा कि उनके घर के ऊपर धन्नू प्रधान ने सीधे अपना झंडा गाड़ दिया है और तिवारी को उस झंडे के नीचे धकेल रहे है।

चूंकि संकटा तिवारी उसी वक्त उधर से गुजरे थे इसलिए उन्हें और ज्यादा तीखेपन से यह महसूस हुआ कि प्रधान की जयकार कहीं उनकी खिल्ली भी है।

ऐसे किसी भी मौके पर सिद्दीक से संवाद उनकी जरूरत बन गया था। थोड़े तेज़ कदम चलकर पहले तो तिवारी ने आक्रोश का पहला उबाल ठंडा किया। उसके बाद वे सिद्दीक के दरवाजे पर जा खड़े हुए।

दरवाजा बन्द था। उन्हें थोड़ी हैरत हुई। थोड़े सकोच से उन्होंने दरवाजे पर लटकी जंजीर खड़काई। जंजीर [illegible]

यह पहला मौका था। अक्सर उन्हें या तो सिद्दीक खुद मिल गए थे या कोई बच्चा मिल जाता था जिससे सिद्दीक के बारे में वे पूछ लिया करते थे। वे जानते थे कि सिद्दीक के घर की महिलाएं जबर्दस्त परदा करती थीं। अगर सिद्दीक न हुए और बच्चे भी *गायब हुए तो—*

कुंडी खड़काने के बाद यकायक उन्होंने फैसला किया कि वे वापस लौट लें। तभी दरवाजे के पीछे कोई खांसा। वे लौटते-लौटते ठिठके, थोड़ी दबी और शिष्ट आवाज में उन्होंने पूछा : सिद्दीक मियां हैं ?

जी नहीं।—किसी स्त्री ने जवाब दिया।

ओह। माफ कीजिएगा।—वे लौटने लगे।

कौन साहब है ?—अन्दर से फिर पूछा गया।

मैं संकटा तिवारी हूं। बच्चे नहीं हैं क्या ?

बच्चे तो जुलूस में गए हैं।

संकटा तिवारी से इससे आगे न तो कुछ पूछा ही गया और न बताया गया। भले ही थोड़ी-सी अभद्रता हुई हो लेकिन वे तुरन्त वहां से चले आए।

हद ही हो गई। क्या जमाना है। अब आप ही कहिए पंडित जी—

संकटा तिवारी थोडी देर बाद ही समझे कि अनोखे हलवाई ने यह बात उन्हीं से कही है, और इतनी देर में सिद्दीक के घर से वे बाजार के छोर पर निकल आए थे।

अब तो हद ही हो गई है पंडित जी।—अनोखे हलवाई ने इस बार थोड़ा इधर-उधर देखते हुए किसी हद तक दबी आवाज़ में में कहा।

तिवारी आकृष्ट हुए। ठिठककर पूछा : क्या हुआ ? कोई खास बात हो गई ?

अनोखे ने एक बार फिर इधर-उधर देखा
अपनी बगल में तिवारी को बिठाने के लिए
जितना वे खिसके थे उनका बहुत भाग
उतना ही और आगे आ गया। तिवारी
लिया और मैली थालियों में उनसे
घूरने लगे।

अब तो हद ही होने लगी है तिवारी

हुआ क्या ?

छेदी आया था—

छेदी ?—तिवारी का ध्यान
तरफ चला गया।

हिम्मत तो देखो, गिनकर
पांच के फालतू ले गया।—

फालतू ले गया ?—तिवारी
पाए।

और क्या। धमका गया
हुक्म है। बच्चों को एक-एक लड्डू

मतलब, प्रधान जी अब
पहला सीधा हमला किया।

अब देख लो पंडित जी। और
क्या कहा था। और कहा भी था

घनिश्याम सरकार चला रहे हैं।
यही होगा भैया।—तिवारी ने कहा।

एँ ?—

यहाँ से सहसा एक ऐसे
लिए अनोखे प्रस्तुत नहीं थे
और जिनका रिश्ता

भर से हो उतने की चर्चा की स्थिति में तो वे थे लेकिन सरकार, हुकूमत, राजनीति जैसी बातों में वे बेहद उदार रहना पसन्द करते थे। बल्कि वे उन लोगों में से थे जो चुनाव में वोट डालते वक्त हर खाने में मुहर लगाना पसन्द करते थे।

उन्हें किसी ने समझाने की कोशिश भी की थी कि यह वोट डालने का सही तरीका नहीं है। अनोखे उससे भी तुरन्त सहमत हो गए थे : तुम ठीक कहते हो भैया।

लेकिन उस समझाने वाले के जाने के बाद उन्होंने अपने से भी ज्यादा मोटे पेट वाले अपने बेटे से कहा था : मैं इनके चक्कर में नहीं फंसने वाला बेटा।

क्या हुआ बापू ?—बेटे ने और ज्यादा अक्ल का प्रयोग करने की कोशिश करते हुए पूछा था !

अबे होना क्या था ! महीपत हमको चरा रहे थे। हमने दुनिया देखी है। झांसे में आने वाले नहीं हैं। मगर तुम अपना काम देखो।—वे अंदर की तरफ चल दिए थे।

अपनी बुद्धिमानी के प्रति वे आश्वस्त थे। वे मानते थे कि हर खाने में लगाई मुहर हर उम्मीदवार के पक्ष में जाती थी। लोग एक खाने में मुहर लगाने की बात कहकर उन्हें बहकाते थे ताकि दूसरे उनका वोट न पा सकें।

इस तरह वे धनिकलाल के विरोध में भी मत दे डालते थे और पक्ष में भी। प्रधान के चुनाव के वक्त जिस अफसर ने उनकी इस आदत को सुनकर एक ही खाने में मुहर लगाने की बात कही थी उसके बारे में भी अनोखे ने मन ही मन सोच लिया था : बच्चू हमें बनाते हैं। मिले हैं !

चूंकि तिवारी की बात में राजनीति की तीखी गंध आई इसलिए अनोखे सावधान हो गए। बोले : सरकारी हुक्म से कौन इनकार करता है पंडित जी। कौन जाने प्रधान जी ने क्या कहा।

हरामी तो छेदी है। मैं क्या इसको जानता नहीं हूं। जब लड़के अठारह थे तो पांच लड्डू और क्यों लिए ?

सवाल यह है कि अनोखे, प्रधान जुलूस निकलवाएंगे तो क्या किसी की दुकान लुटवा कर ?

नहीं वो बात नहीं है—

तुम क्या जानो जी।—तिवारी ने आखिर थोड़ा घुड़ककर कहा : जुलूस पार्टी के पैसे से निकाला जाता है। जुलूस का खर्च ठाकुर गजराजसिंह ने घन्नू को दिया होगा। घन्नू दिखाएंगे, इतने पैसे बच्चों को मिठाई खिलाने में गए—

ऐं ?—अनोखे को एक नई सूझ आई। थोड़ा रुककर सोचा फिर बोले : तब इस साले छेदी को पीटना पड़ेगा—

छेदी को क्यों—

है क्यों नहीं पंडित जी, प्रधान जी ने साले को पैसे दिए होंगे कि बच्चों को लड्डू खिलवा दे। हरामी पैसे खुद खा गया और लड्डू मुफ्त में ले गया—

तिवारी चाहते हुए भी बात को असली मुद्दे पर नहीं पहुंचा पा रहे थे। उन्होंने एक बार फिर सारे अन्याय को प्रधान से जोड़ने की कोशिश की कि तभी छेदी अपना छोटा-सा जुलूस लिए हुए फिर बाजार में आ निकला।

हो सकता है लड्डुओं को प्राप्त करने की सफलता से उत्साहित होकर उसने इस बार किसी से कोई और चीज़ प्राप्त करने का निश्चय कर लिया हो।

बच्चे खासा पेट दबाकर और सीना फुलाते हुए नारा लगाते थे और नारा लगाते वक्त झंडियां काफी ऊंची उठा लेते थे। अभी वह जुलूस बाजार में घुसा ही था कि अनोखे ने तीखी आवाज़ में छेदी को पुकारा। छेदी ने या तो सुना नहीं या फिर वह ज्यादा ही जोश में था।

अनोखे ने उठने का उपक्रम किया। तिवारी पहले ही उठकर किनारे हो गए। बहुत मेहनत से अपने शरीर को टांगों के ऊपर लादकर अनोखे इस तरह दुकान से उतरे जैसे कोई बोरी नीचे लुढ़काई गई हो। नीचे आते ही उन्होंने किसी हद तक पीट देने के अन्दाज में छेदी को ललकारा।

बच्चों के नारे रुक गए। बच्चे भी रुक गए। आसपास के दुकानदार भी उनकी तरफ मुखातिब हो गए। छेदी यकायक समझ नहीं पाया कि मामला क्या हो सकता है।

अबे इधर आता है या वहीं आकर लगाऊं एक लात?—अनोखे ने चीखकर कहा।

क्या हुआ लाला जी?—छेदी उनकी तरफ आया।

लड्डू के पैसे निकाल।

जी?

अबे निकालता है या नहीं पैसे? अठारह और पांच तेईस लड्डू के पैसे!

लड्डू के पैसे?

अरे देखो तो इस लुच्चे को! प्रधान जी से लड्डू के पैसे लाया और लड्डू मुफ्त ले गया?

पैसे लाया?—छेदी अब खासे ही चक्कर में पड़ गया। उसे बात का सिरा ही नहीं पकड़ मिल रहा था।

लेकिन अनोखे।—तिवारी धीरे-से बोले: यह भी तो हो सकता है—

क्या हो सकता है पंडित जी?—अनोखे तेज होकर बोला: प्रधान जी एक-दो रुपये के लिए कोई बेइमानी करेंगे? अरे इन हरामियों को मैं जानता हूं। छेदी पैसे निकाल दे चुपचाप—

अब काफी हद तक बात छेदी की समझ में भी आ गई। वह बहुत आक्रामक तो नहीं हो सकता था लेकिन अपनी स्थिति से

थोड़ा आश्वस्त होता हुआ बोला : चुनाव का काम कर रहे हैं हम भी। बेकार इल्जाम मत लगाना—

अबे तेरी तो—

अनोखे इतनी आसानी से सुनने वाले नहीं थे। उन्होंने पहले तो छेदी की गर्दन पकड़नी चाही मगर उसे छूना पड़ जाता जो एक असाधारण स्थिति होती। उन्होंने जूता उतारना चाहा लेकिन वहां पैर में जूता था ही नहीं क्योंकि वे दुकान पर बिना जूते ही बैठे हुए थे। लपककर उन्होंने जानवरों को मिठाई से दूर रखने वाली छड़ी उठा ली।

हैरत में पड़कर चुप हो गए बच्चों को इस छड़ी के नतीजे का अनुमान तुरन्त हो गया इसलिए पलक झपकते ही वे वहां से भाग खड़े हुए।

छेदी ने असहाय होकर आसपास देखा। आसपास की दुकानों के लोग सिर्फ उत्सुकता से देखते भर रहे।

छेदी भाग नहीं पाया। भागने का उसे अभ्यास नहीं था। जिस जाति से वह संबंधित था उसके सभी लोगों की यह नियति थी। अगर गुस्से से कोई उन्हें पीटे तो पिटना होता था, चुपचाप ही पिट लेना होता था।

छड़ी उस पर पड़ने ही वाली थी कि तिवारी ने अनोखे को रोक दिया। तिवारी का खयाल था कि इस तरह वे छेदी की सहानुभूति भी जीत सकते थे। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसने तिवारी की तरफ सिर्फ एकाध बार ही देखा वह भी बिना कृतज्ञ हुए, यह तिवारी समझ गए। अनोखे धाराप्रवाह गाली देने लगे।

आप मालिक हैं लालाजी, मारिए चाहे काट के फेंक दीजिए। लड्डू के पैसे मैंने नहीं लिए—

अनोखे इसके बाद छेदी की कसमों से थोड़ा अचकचा गए।

प्रधानजी से पूछ लीजिए—

यह एक दुर्लंघ्य दीवार थी। अनोखे प्रधान से यह पूछने जाते कि उन्होंने लड्डू के पैसे छेदी को दिए या नहीं, यह आसान बात नहीं थी। हो सकता है इस बार चंदे के बजाय प्रधानजी ने लड्डू ही लेने की सोच रखी हो!

अब एक और गड़बड़ी की तरफ उनका ध्यान गया। जुलूस वहां इस गोलमाल में भंग हो गया था। जुलूस तो धन्नू प्रधान के लिए था। जुलूस का भंग होना खासी गंभीर घटना होगी, यह अनोखे तुरन्त समझ गए। बौखला कर बोले : साले तुम लोगों को खूब जानता हूं। भागो यहां से—

छेदी सचमुच वहां से भागा।

बड़ी गड़बड़ हो गई पंडित जी।—बाज़ार के लोगों से निगाहें चुराए हुए, दुकान के चबूतरे पर चढते अनोखे ने धीरे-से तिवारी से कहा।

तुम्हीं लोगों की वजह से धन्नू जैसे लोग और ज्यादा अंधेर मचाते जा रहे हैं।—तिवारी जी तिक्त हो गए।

अनोखे ने दो क्षण उन्हें फटी आंखों देखा फिर जैसे कातर होकर हाथ जोड़ते हुए बोले : हमें तो माफ ही करिए पंडितजी। हमारे लिए जैसे आप वैसे वे!

तिवारी एक क्षण भी वहां नहीं रुके। बाजार में किसी के पास नहीं रुके। जिन लोगों ने उन्हें जवानी चरण-स्पर्श के लिए पुकारा उनकी ओर भी नहीं घूमे। सीधे अपने घर आ गए।

अबे पें-पें ही करेगा या बताएगा भी। या अब मैं लगाऊं जूते?—धन्नू ने सामने बैठकर आधे रोते और आधे गिड़गिड़ाते छेदी को धमकाया।

छेदी और ज्यादा घबरा गया। धन्नू बड़े थे। लेकिन बाकी भी तो छेदी के लिए बड़े ही थे चाहे संकटा तिवारी हों या अनोखे हलवाई, सिद्दीक हों या मुल्ला यूसुफ, महीपत हों या श्यामलाल

सुनार। उसे दोनों ही तरफ संकट दिखाई दे रहा था।

संकटा तिवारी क्या बोले?—धन्नू प्रधान की रुचि इतना जानने में ही थी।

गलती हमसे ही हुई है सरकार।

अबे अब बहुत मार खाएगा।—धन्नू फिर गरजे।

बहुत बचाकर बात कहने पर भी धनिकलाल ने अपनी सूचना के खण्ड पूरे कर लिए कि संकटा तिवारी चुनाव कोष में घोटाले का एक मामला उनके मत्थे मढ़ना चाहते हैं।

भाग जा यहां से। हट।—प्रधान ने छेदी की तरफ से पलटते हुए कहा और मन ही मन सोचा, संकटा अब देखेंगे कि 'संकट' क्या होता है।

छेदी प्रधान के चबूतरे से उतरा तो उसे लगा वह किसी गन्दगी के गड्ढे में जा गिरा था और बड़ी मुश्किल से ही बाहर आया है। बदबू और शर्मिन्दगी उसकी खाल पर कंबल की तरह लिपटी हुई है। चबूतरे से नीचे आते ही उसके सामने जो पड़ा उसे देखकर वह गन्धाती हुई शर्मिन्दगी सीधे उसके दिमाग में समा गई।

छेदी कहो कैसे हो?—बेहद उजले कुरते-पायजामे में छड़ी के सहारे बहुत सफेद पलस्तर में लिपटी टांग घसीटकर भरसक मुस्कुराते हुए मंसाराम ने छेदी को टोका।

छेदी ने दो क्षण संभ्रम में उसे देखा, पहचाना और बिना कुछ बोले आगे बढ़ गया।

कौन है—

मंसाराम की बीवी ने अनायास अन्दर आ गए एक सफेद-पोश को देखकर घबराहट में लगभग चीखने की हद तक ऊंची आवाज में कहा और फिर पहचान कर यकायक चुप हो गई। आंख फाड़कर मंसाराम को घूरती रह गई।

कौन है रे।—अन्दर से मां की आवाज आई।

बीवी मंसाराम के लंगड़ाने तक की तरफ ध्यान नहीं दे पाई, जल्दी-जल्दी चारपाई बिछाने लगी।

आदमी के कपड़े सफेद हों तो वह कैसे यक-ब-यक सम्माननीय बन जाता है!

मंसाराम को याद आया कि उसकी मां बीमार है। वह बीवी द्वारा घसीटी जा रही चारपाई की उपेक्षा करके अन्दर की कोठरी तक आया। सच बात यह है कि मां की बीमारी से ज्यादा तीखी जरूरत उसे अपने इस नये वेश के प्रदर्शन की महसूस हो रही थी।

उसकी मां का ध्यान अपनी बीमारी में भी मंसा के कपड़ों से पहले उसके पैर की तरफ गया : हाय राम, यह क्या हो गया?

अरे ये कौन-सी बड़ी चीज है। ऐसी क्या आफत आ गई।—मंसाराम ने कहा और अभ्यासवश दीवार में ठोंकी एक खूंटी की तरफ बढ़ गया। फिर उसे याद आया कि एक तो ऐसे कपड़े इस तरह की खूंटी में लटकाए नहीं जा सकते, दूसरे गांव के काफी लोगों ने क्या, बहुत कम ही लोगों ने उसके इस वेश को देखा था।

वह काफी लंबे रास्ते से घर आया था फिर भी लोग बाहर नजर नहीं आ रहे थे।

अजीब घटिया लोग हैं।—उसने सोचा। जरा-सा वह गांव से चला क्या गया, चुनाव का माहौल ही बदल गया। लोग अपने

आप जैसे कुछ करना ही नहीं जानते।

अब उसे यह भी समझ में आ गया कि उसे देखकर छेदी की ऐसी प्रतिक्रिया क्यों हुई थी। उसकी अनुपस्थिति में जरूर छेदी ने सारा मामला गड़बड़ा दिया होगा। इसी वजह से प्रधान जी भी नाराज होंगे। दो-एक जूते लगाए होंगे उसे। आखिर प्रधान जी समूचे गांव का काम संभाले थे। वह पहले प्रधान के यहां ही जाना चाहता था लेकिन छेदी से कही उनकी अंतिम बात और गुस्से में घूमकर अंदर जाते प्रधान की झलक का अर्थ वह समझता था। सफेद कुर्ता-पायजामा बाकी किसी को दबा ले, प्रधान जी क्यों उसका लिहाज करने वाले ?

जिस वेश में मंसाराम आया था उस वेश को एक बार अच्छी तरह देखने और पति की किसी जरूरत के लिए हाजिर रहने के उद्देश्य से बीवी भी दरवाजे पर आ गई। इस बार उसकी भी नजर मंसाराम की टांग की तरफ गई : हाय ये कैसे हो गया ?

अरे तुम लोगों का दिमाग चल गया है। और कोई जरूरी बात नहीं रह गई टांग के अलावा ऐं ?—मंसाराम ने उसे भी डांटा।

उसे अजीब खीज हुई कि उसके इस अद्भुत अभियान में सिर्फ टांग ही उत्सुकता की चीज़ रह गई थी। कमरे के दरवाज़े से बीवी को लगभग धकेलते हुए वह दुबारा बाहर आ गया : साली टांग न हुई तमाशा हो गया।

अरे ये कहां चोट लगा लाया है रे ?—मां की बीमार आवाज़ फिर सुनाई दी।

टांग मैंने मूसल के नीचे दे दी थी।—उसने गुस्से में जवाब दिया।

मूसल के नीचे ?—थोड़ी देर बाद ही मां की समझ में आया कि मूसल वाली बात के पीछे खीज थी। वह चुप हो गई।

मंसाराम को गुस्सा आ रहा था कि उसके महत्व को खासे ही हल्केपन से लिया जा रहा था। उसके पैर में अब दर्द उभरने लगा था। कुर्ते की जेब में दवा की पुड़िया टटोलकर वह टांग घसीटता हुआ फिर घर से बाहर आ गया।

पांचू चौधरी का लड़का नन्हे अरहर के पेड़ों के कंकालों का गट्ठर उठाए हुए शायद अभी उधर से गुजरा था क्योंकि अब मंसाराम की तरफ उसकी पीठ थी। मंसाराम उसे आवाज नहीं देना चाह रहा था लेकिन टूटे पैर की वजह से उसे पकड़ पाना आसान नहीं था।

हारकर उसने आवाज दी। नन्हे रुककर घूमा। घूमकर थोड़ी देर खड़ा रहा उसके बाद जब वह पहचान गया कि आवाज देने वाला और कोई नहीं मंसाराम ही है तो वह कुछ इस भोंडे तरीके से उसके करीब आया जैसे नौटंकी का जोकर हो और अभी नाचने लग जाएगा।

उसकी चाल में छुपे व्यंग्य को मंसाराम समझ गया। अच-कचा कर बोला : क्या बात है?

बात? अबे नेताजी को देखो। साले क्या बन-ठन के निकले हैं!—उसने इधर-उधर देखते हुए अपने व्यंग्य को और चौड़ा कर दिया।

उसके इधर-उधर देखने पर मंसाराम ने भी आसपास देखा। वहां दूर तक उगे पतावर के झाड़ों के अलावा और कोई नहीं था।

इसमें हंसी की क्या बात है?

अरे हंसी कौन साला करेगा।—नन्हे बोला : मगर चुनाव में किसी के ठाठ हैं तो मंसवा के। वाह! वाह रे नेताजी!

नन्हे उसी तरह बौखलाए अन्दाज में बोलता वापस चला गया।

मंत्रालय से पहले मंसाराम की एक ख्याति बड़ी तेजी से फैलती गई। उन्हें ने शायद यह सूचना फैलाई हो कि फटा अंगोछा पहनने वाला मंसाराम झकाझक सफेद खादी के कपड़े पहने है किसी नेता की तरह।

श्यामलाल सुनार ने इसका पहला साफ इशारा किया : ऐ मंसवा—

नमस्ते भाई साहब।—मंसाराम ने कायदे से हाथ जोड़े।

बड़े ठाठ हैं!

एँ?

हमको क्या पता था, नहीं तो हम भी सुनारी छोड़कर नेतागीरी ही करते।

मैं समझा नहीं भाई साहब।

चतुर तो वही जो समझकर भी न समझे। मगर नेतागीरी में आमदनी अच्छी है।—श्यामलाल सुनार ने थोड़ी ऊंची आवाज़ में कहा।

मंसाराम को लगा वह कुछ घिरता जा रहा है। धीरे-से बोला : आप बड़े हैं कुछ भी कह लें, हमारी क्या औकात—

अरे तो कोई इसमें बुराई है भैया! बड़े-बड़े मार रहे हैं।

श्यामलाल सुनार सहसा सकपका कर रुक गया। बात को उसने वापस निगला। धनिकलाल प्रधान उसे सीधे घूर रहे थे।

नमस्ते प्रधानजी।—सुनार ने अटकती आवाज़ में कहा।

प्रधान ने नमस्ते का जवाब नहीं दिया, गुर्राकर बोले : क्या पंचायत हो रही है?

छेदी से बातों के टुकड़े इकट्ठा करने के बाद गुस्से में धनिकलाल घर के अन्दर तो चले गए लेकिन वहां रुक नहीं सके।

चुनाव के नाम पर प्रधान पैसा हड़प रहे हैं—यह अपवाद भले ही इतना साफ न हो लेकिन था कुछ इसी तरह का।

तो जुलूस भंग हुआ दूसरे जुलूस के नाम पर पैसा खाने का अपवाद। बात एक बार उठें तो फैलती है, यह उनका अनुभव था। इसे तुरन्त संभालना होगा। फैसला करके वे बाहर आ गए। बाजार में घटना हुई थी। बाजार में ही इसका सही अन्दाज़ा लगना था।

सबसे पहले उनकी निगाह श्यामलाल सुनार पर पड़ी। उसकी बात का छोर भी उन्हें साफ सुनाई दिया—बड़े-बड़े कर रहे हैं।

क्या पंचायत यहां कर रहे थे जी ?—प्रधान ने थोड़ा सख्ती से पूछा।

सुनार थोड़ा डर गया। बात को नया और किसी हद तक मज़ाहिया मोड़ देने की कोशिश करते हुए बोला : प्रधानजी मंसवा को देखिए जरा। चुनाव की कमाई कैसी झकाझक चमक रही है—

कौन हरामजादा कहता है कि चुनाव का पैसा खाया जा रहा है। जरा मेरे सामने कहे तो। हलक से जबान खींच लूंगा। —धन्नू प्रधान ने सहसा दहाड़कर कहा।

प्रधान की आवाज लगभग समूचे बाज़ार ने सुनी। धन्नू प्रधान से यही पहली घातक भूल, अपने गुस्से के उबाल में हो गई। अभी तक बात खासी दबी हुई ही थी। बहुतों को तो इसके बारे में कुछ पता भी नहीं था। भले ही धन्नू प्रतिवाद कर रहे थे लेकिन उनका यह प्रतिवाद कहीं सन्देह के बीज भी बो रहा था।

सालों को सबको जानता हूं और ऐसी बातें फैलाने वालों को भी जानता हूं। एक-एक को देख लूंगा, समझे। ठाकुर साहब के चुनाव को बिगाड़ा जा रहा है। मैं सब जानता हूं।—धन्नू ने आसपास के लगभग हर संभव श्रोता को ललकार कर कहा।

सुनार सहमकर पीछे हट गया था। उसी के साथ मंसाराम ने भी अपनी टांग पीछे घसीटी।

क्यों रे मंसवा!—धन्नू उससे संबोधित हुए।

मालिक!—मंसाराम ने घबराकर हाथ जोड़े।

ये क्या है? धन्नू ने उसके कुर्ते-पायजामे की तरफ इशारा किया: साले ये कहां से लाया?

कुछ नहीं सरकार। हम गाड़ी से गिर पड़े थे तो ठाकुर साहब ने अपना एक कुर्ता-पायजामा दे दिया।—मंसाराम ने तुरन्त बता दिया। उसको इन कपड़ों से जो भद्रता मिल रही थी उसे सिर्फ आत्मरक्षा के लिए ही उसने नकार दिया। खुद नकार दिया।

ऐसा तू बड़ा मेहमान था न—

नहीं सरकार, जूड़ी-बुखार आ गया था रात में। इसलिए ठाकुर साहब को दया आ गई—

ठाकुर साहब की दया, मंसाराम को दान में मिले कपड़े आदि के ब्योरे बाजार में सभी लोगों के सामने आ जाने पर धन्नू थोड़ा संतुष्ट हुए।

जा भाग अब अपना काम देख।

आप ही हुकुम करेंगे मालिक—

हूं।—धन्नू ने कुछ सोचा फिर बोले: आज गांव में शाम को बड़ा जुलूस निकलेगा उसके बाद सभा होगी। जा भाग—

मंसाराम ने भागने की कोशिश की मगर टांग की वजह से लड़खड़ा गया। धन्नू ने उसकी टांग के बारे में पूछना चाहा लेकिन उनका गुस्सा इतना शांत नहीं ही हुआ था। बाजार में आगे जाने के बजाय वे वापस लौट लिए।

धन्नू को सचमुच ही इस बात का एहसास नहीं हो सकता था कि उन्होंने अपने ऊपर अप्रत्यक्ष रूप से लगाए गए इल्जाम का विज्ञापन करके अपना कितना नुकसान किया था।

धन्नू ने पैसा नहीं खाया तो इतना हल्ला क्यों मचा रहे हैं ?—तिवारी ने सिद्दीक से कहा।

सिद्दीक ने विषय की गंभीरता अनुभव करते हुए इधर-उधर देखा फिर धीरे-से बोले : चुनाव में बड़ा पैसा लगता है भाई वरना कोई भी न लड़ ले।

वो तो है।—तिवारी बोले : कोई चोर हो तभी न चोर कहने पर चिढ़ेगा ?

हां, बात तो सही है।—सिद्दीक ने सावधानी की नजर से सिर्फ समर्थन किया।

आप खुद सोचिए सिद्दीक भाई, छेदी की इतनी हिम्मत कैसे हो जाती कि मुफ्त मिठाई ले जाता ! मुझे मालूम है जनाब, पांच रुपया फी आदमी से कम नहीं मिलता है जुलूस का खर्च। लाखों रुपया खर्च होता है—

सिर्फ दो आदमियों के बीच वह बातचीत हुई लेकिन जाने कैसे शाम तक सारे गांव वालों में फैल गई। बल्कि छेदी जैसे लोग भी विश्वास करने लगे।

छेदी ने मंसाराम के वे उजले कपड़े देखे तो उसे और पक्का यकीन हो गया।

चौधरी, प्रधानजी से बात कर लो। अब ये नहीं चलेगा।——छेदी ने पांचू चौधरी को उकसाया।

तुम लोग प्रपंच ही करोगे।—पांचू बोले।

इसमें प्रपंच क्या है ? वोट हम लोग नहीं डालते ? दरी हम नहीं बिछाते ? जुलूस हम नहीं निकालते ?

तो ?

लो। चौधरी तुम अजीब बात कर रहे हो।

मैं अजीब बात कर रहा हूं रे ? तू बोल कैसे रहा है ?

मैं तुमको कुछ थोड़े ही कह रहा हूं। मेरा मतलब है प्रधान

जी चुनाव का पेसा खाली मंसाराम को क्यों दे रहे हैं ?

मंसाराम को ?

और क्या ! आप सरपंच हैं। आपको दें। फिर आप जिसको जैसी जरूरत हो दें।

ऐं ? पांचू को समझ में यह बात तुरन्त आ गई। पैसा इस बस्ती वालों के लिए तो पांचू के पास ही आना चाहिए।

कितना पैसा दिया है मंसा को रे ?

क्या जाने। मगर खुद देख लो क्या ठाठ से नेताजी की पोशाक पहने घूम रहा है।—छेदी बोला।

हूं। मंसा को बुलाओ ज़रा—

वो नेतवा साला ! मिलेगा कहां ? मिलेगा तो पता नहीं हमारी सुने न सुने—

शाम को प्रधान ने खुद जुलूस निकाला। बहुत से बच्चे। बड़ी बस्ती के लोगों की खासी भीड़ और उससे भी ज़्यादा एक खास किस्म की धमकी। जुलूस में झंडे कम थे लाठियां ज़्यादा थीं। मंसाराम जुलूस में बड़ी कठिनता से ही चल पा रहा था। टूटी टांग पर जोर कम डालने के लिए वह छड़ी का इस्तेमाल करता था और छड़ी पर ज़ोर देकर लगभग उछलता हुआ दूसरा पैर आगे बढ़ा देता था। इस तरह वह खासे बेढंगेपन से चल रहा था और सीना फुला-फुलाकर नारे लगा रहा था। उसके सफेद खादी के कपड़े सबसे अलग चमक रहे थे।

जुलूस के वक्त छेदी वगैरह चुपचाप कहीं गायब हो गए थे। यह बात धन्नू प्रधान से छुपी नहीं थी। फिर तिवारी, सिद्दीक और गांव के ऐसे ही कुछ और लोग भी गायब थे।

यों सभा में लगभग सभी आ जाते थे चाहे वे ठाकुर ... सिंह के पक्ष के हों या विरोधी। लेकिन इस बार सभा में ... गायब थे।

सारे गांव की गलियों का चक्कर लगाने के बाद स्कूल के पास ग्राम के पेड़ों के नीचे सभा हुई। धनिकलाल प्रधान ने देखा स्कूल के भूगोल वाले मास्टर तो वहां हैं लेकिन हेडमास्टर साहब गायब है।

हेडमास्टर साहब कहां हैं?—उन्होंने पूछा।

डिप्टी साहब से मिलने गए हैं।

इसी समय जाना था?

क्या करते? परसों मुग्राइना होना है। बिना पहले से मिले—

अच्छा अच्छा। बातें न बनाग्रो। मैं भी जानता हूं।—धनिकलाल ने मास्टर को डांट दिया।

सभा में दो-चार शब्द ही बोलने का उनका अनुभव था। जब कभी सभा हुई या तो ठाकुर गजराजसिंह बोले या उनका कोई साथी। चुनाव सभा में बोलने लायक बातें क्या होती हैं, यह याद कर लेने की ज़रूरत उन्होंने कभी समझी ही नहीं। थोड़ी देर तख्त पर खड़े वे खांसते ग्रौर गला साफ करते रहे फिर कुछ याद करके मंसाराम से बोले: मुह फैलाए क्या देख रहे हो? नारा क्यों नहीं लगाते!

मंसाराम नारे लगाने लगा। नारों से प्रधान कुछ ग्राश्वस्त हुए वल्कि थोड़ा जोश भी ग्राया ग्रौर ग्रपने खिलाफ खड़े हो गए लोगों पर एक गुस्सा भी उभर ग्राया। उन्होंने ग्रब मंसाराम को नारे रोकने का इशारा किया ग्रौर फिर बिना किसी ग्रौपचारिकता के भाषण देने लगे।

धनिकलाल जो कुछ बोले वह भाषण कम गुस्सा ज्यादा था। बोले: कुछ लोग साले जनम के कमीने होते हैं कुछ करम के। ग्रौर क्या। ग्ररे दो-चार मंत्र-वंत्र पढ लेने से कोई साला ब्राह्मण हो जाता है। ग्रौर ये गांव भी साला ग्रजीब लीचड़ है। सही-

गलत की अकल तो लोग साले छप्पर में खोंस देते है—

तर्कों में बेतरतीबी और गुस्से की वजह से भाषा में पैदा हुए असंयम ने मिलकर हालत और ज्यादा बिगाड़ दी।

कुछ श्रोताओं ने रात को उत्साह में आकर प्रधान को अपना समर्थन देने की नीयत से ही सही, उनकी बातों को आगे सुनाया। उन्होंने अपनी भाषा में और किसी हद तक बढ़ा-चढाकर सुनाया।

प्रधानजी एक-एक को देख लेंगे।—किसी ने उत्साह में कहा : वे कह रहे थे जो वोट नहीं देगा उसके छप्पर घुसेड़ देंगे।—

बातें कुछ अजीब बेहूदे ढंग से फैलीं। तिवारी और सिद्दीक खासे धीरज या संकोच से काम ले रहे थे लेकिन अब उन्हें लगने लगा कि धीरज से बात बढ़ेगी ही, घटेगी नहीं।

अगले दिन एक सनसनीखेज खबर लोगों ने सुनी। तिवारी जी स्कूल के पास उन्हीं आम के दरख्तों के नीचे एक विरोधी सभा करने वाले थे। यह गांव की पहली आश्चर्यजनक घटना थी।

तो अब वे ठाकुर गजराजसिंह से भी बड़े हो गए।—धनिक लाल ने कहा।

उनकी बात के उत्तर में बोला कोई नहीं।

अरे सालों का मार-मारकर सर नहीं फोड़ दोगे तुम लोग ?—धनिकलाल ने फिर ललकारा।

हेडमास्टर अपनी आंख के ऊपर खुजली करते हुए धीरे-से बोले : लेकिन तिवारी ने किसान पार्टी की तरफ से पिछले चुनाव में भी तो सभा की थी।

आप भी अजीब बात करते हैं।—धन्नू और चिढ़ गए : किसान पार्टी उस वक्त चुनाव लड़ रही थी। अब की बार पार्टी का कोई उम्मीदवार है ?

किसान पार्टी का तो नही है सुधार पार्टी का तो खड़ा ही है।—हेडमास्टर ने याद दिलाया।

तुम मुझे बना रहे हो हेडमास्टर साहब। तिवारी का सुधार पार्टी से क्या लेना-देना? आज गोली चलेगी, मैं बताए देता हूं। एक-एक को भूनकर रख दूंगा। सभा होगी तो लाशें बिछ जाएंगी।

मसाराम को यही लगा कि भाग्य उसका साथ दे रहा है। धनिकलाल इतने जोश में आ गए कि उन्होंने सभास्थल के बजाय तिवारी को उनके घर पर ही ललकारने का फैसला कर लिया। इस फैसले के बाद उनका कानूनी दिमाग बड़ी तेजी से चलने लगा। किसी पेशेवर मुकदमेबाज की तरह उन्होंने एक रपट तैयार की जिसमें लिखा कि चुनाव को लेकर विरोधी दल के संकटा तिवारी से जान का खतरा है।

रपट उन्होंने अपने घर में काम करने वाले एक कहार के हाथ पुलिस चौकी भिजवा दी। पुलिस चौकी दूर थी। जाहिर है दो घंटे से कम वक्त वहां रपट पहुंचने में नहीं लगना था। रपट वहां पहुंचने का इत्मीनान कर लेने के बाद ही वे तिवारी को ललकारने वाले थे।

यह भी अजीब बात है कि चौकी के दारोगा को यह मामला इतना महत्वपूर्ण लगा कि दो सिपाहियों को साइकिलों पर

इस वार भी हारेगी। चाहेंगे तो भी नहीं जीतेंगे। और ज्यादा चींचपड़ की तो मार भी खाएंगे। अब ऐसे मौके पर पहले से एफ० आई० आर० करा देना अच्छा होता है।

ओह !—सिपाही की उत्सुकता सहसा शान्त हो गई। लेकिन ठीक इसी वक्त गली के छोर पर थोड़ी हलचल जैसी हुई। तिवारी जी बाकायदा सुधार पार्टी के झंडे लिए हुए कोई तीस आदमियों की भीड़ के साथ उधर से निकले। वे सिर्फ निकले ही नहीं बल्कि उन्होंने जोरदार नारा भी लगाया।

सिपाही एकदम चौकन्ने हो गए और प्रधान की फैली हुई बांहें पहले तो सिमटीं फिर वे उठकर खड़े हो गए।

तिवारी जैसे-जैसे प्रधान के घर के निकट आते जा रहे थे उनके नारे ऊंचे होते जा रहे थे। नारे कुछ ऐसे भी थे—हमारी मीटिंग होके रहेगी। गुण्डाशाही नहीं चलेगी।

आदमी थोड़े से ही हों लेकिन जरा एक साथ आवाज मिला-कर नारा लगाएं तो मामला खासा आक्रामक लगने लगता है। तिवारी महज अपने जोश में प्रधान की तरफ से निकले थे। अगर प्रधान दो-चार आदमियों के साथ सिर्फ लाठियां लेकर भी कूद पड़ते तो मामला पलट जाता। लेकिन तिवारी को मनो-वैज्ञानिक लड़ाई का बल मिल गया। उनके अचानक धावे से प्रधान को लगा कि तिवारी जरूर असलहों के सहित आए होंगे।

प्रधान के होंठ भिंचे फिर उन्होंने सिपाहियों से धीरे-से कहा : देखो इनकी हरकत?

तभी एक मसखरी-सी घटना हो गई। सिपाही अपने रुतबे का एहसास करते हुए चबूतरे से नीचे उतरकर जुलूस के करीब आने का इन्तजार करने लगे। वे दरअस्ल जुलूस वालों को शांति भंग की धारा की याद दिलाने को उत्सुक हो गए थे। तभी उनमें से एक सिपाही थोडा खुश हुआ और जुलूस की तरफ

लपका।

प्रधान उसकी इस हरकत को समझ नहीं पाए। सिपाही जुलूस के करीब पहुंचा और मोटी लाठी में छोटी-सी झंडी लटकाए तिवारी जी के करीब पहुंचकर ऊंची आवाज में बोला : मामा—

संबोधन के बाद भांजे के योग्य सलीके और विनय से झुककर उसने तिवारी जी के पैर छुए।

अरे गुल्लू तुम ?—तिवारी खुद सकपका गए फिर उसकी टोपी छूते हुए बोले : जीते रहो। उन्नति करो। दारोगा, डी० एस० पी० बनो।

इतने उम्दा आशीर्वाद से बुरी तरह सराबोर सिपाही अपने साथी की तरफ घूमा : यही हैं हमारे मामा।

फिर तिवारी जी से बोला : दारोगा जी बोले देख लो जाकर कोई गड़बड़ न हो। चुनाव का मामला है। यहां आपके दर्शन हो गए।

प्रधान इस संवाद को आगे नहीं सुन सकते थे। वे तेजी से अन्दर चले गये। अब उन्हें कुछ न कुछ बड़ा फैसला करना था। सिपाही तिवारी का भांजा था। प्रधान भले ही प्रधान थे, थानेदार इस मामले में कितनी रुचि दिखा पाएगा यह संदिग्ध था। ऐसी हालत में एक ही रास्ता था—ठाकुर गजराजसिंह। ठाकुर चाहें तो साला थानेदार हवलदार बना दिया जाए। वे तेजी से अपना कुर्ता पहनने लगे। कुर्ता पहनकर उन्होंने अपनी वह छड़ी निकाली जो अन्दर से खोखली थी और उसकी मूठ मरोड़कर खींचने पर एक छोटा तलवारनुमा हथियार बाहर आ जाता था। एक और विचित्र औज़ार उन्होंने जेब में डाल लिया। उसमें कई छल्ले एक सलाख से जुड़े थे और छल्लों के नीचे लोहे के कई नाखून बने थे। प्रधान का खयाल था कि शिवाजी ने अफजल खां जैसे दुर्दान्त

सूरमा को इसी विचित्र चीज से मार लिया था।

अपने साथ उन्होंने दो लठैत भी ले लिए। उनकी बीवी खासी चिन्तित हो गई।

अरी तू क्यों मरी जा रही है ? कोई फौजदारी के लिए नहीं जा रहा। शहर जाना है। रास्ते में चोर-उचक्कों का इन्तजाम तो रखना होगा न।—उन्होंने कहा। तिवारी की सभा के प्रति वे उदासीन हो गए थे। फिलहाल जो हो रहा था उसे होने देना चाहते थे। निपटने का इंतजाम वे खुद करेंगे।

वे इतनी जल्दबाजी में थे कि तुरन्त ही साइकिलों पर निकल पड़े। शहर पहुंचते-पहुंचते खासी रात हो गई।

उन्होंने अनुमान लगाया जरूर ठाकुर गजराजसिंह पार्टी के दफ्तर में होंगे। वे पहले पार्टी के दफ्तर ही गए।

वह इमारत जरूर किसी महाराजा की रही होगी क्योंकि उसकी सीढ़ियां भी संगमरमर की थीं और उसके दरवाजे इतने ऊंचे थे कि चोबदार अपने बल्लम सीधे ऊंचे उठाए हुए अन्दर घुस सकते होंगे। इमारत के बहुत ज्यादा बड़े-बड़े कमरों को बीच-बीच में छोटे कद की दीवारें उठा कर कमरों की तादाद बढ़ा ली गई थी।

सीढियों तक पहुंचकर प्रधान ठिठक गए। उन्हें लगा इन गंवार लट्ठबाजों को इस उम्दा दफ्तर के अन्दर घुसा ले जाना ठीक नहीं होगा। बल्कि उनके मन में यह धारणा भी रही हो सकती है कि अन्दर जाकर हो सकता है उनके साथ सम्मानजनक सुलूक होने में कुछ कमी रह जाए। ऐसी हालत में गांव के छोटे वर्ग के गवाह साथ रहना ठीक नहीं होगा। वे सहसा घूमकर बोले : अब तुम लोग पूंछ में न लगे रहो। उधर बाहर जाकर बैठो।

दोनों अपनी लाठियों सहित बाहर के लान की तरफ चल

दिए।

प्रधान ने फिर हिदायत दी : वहां फव्वारा है। उसमें गन्दे हाथ-मुंह धोकर तुम लोग कुल्ला मत कर मारना समझे?

दोनों जब फव्वारे को घूरते हुए उससे थोड़ा अलग जा बैठे तो प्रधान ने सीढ़ियों पर कदम रखा।

रात हो चुकी थी। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि ज्यादा लोग वहां होंगे। बल्कि उनकी समझ से चोटी के कुछ लोग ही मिलेंगे जो शायद चाय पीते हुए आगे की योजनाओं पर विचार कर रहे होंगे लेकिन ऊपर उन्हें जो माहौल दिखाई दिया उससे वे संभ्रम में पड़ गए।

कुछ लोग कागजात लिए हुए तेजी से एक कमरे से निकल-कर दूसरे में घुस जाते थे और दूसरे से निकलकर तीसरे में। उनकी उपस्थिति पर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

उन्होंने संकोच के साथ एक कमरे का परदा हटाकर अंदर झांका। फिर फौरन ही अपनी गर्दन बाहर खींच ली। अंदर एक रंगबिरंगी साड़ी वाली मोटी-सी औरत बेहद तेजी से और तीखी आवाज में दो आदमियों से कुछ कह रही थी और वे दोनों ही मेज पर झुके, औरत की बातों से असंपृक्त, कुछ लिखे जा रहे थे।

इसके बाद वाले कमरे में फर्श पर मोटा कालीन बिछा था। परदे और ज्यादा चमकदार और रंगीन थे और बेहतरीन मेज के इर्द-गिर्द गद्दीदार नाजुक-सी कुर्सियां थीं लेकिन बेहद उजले कपड़ों वाले अपने कपड़ों से भी ज्यादा उजले चन्द लोग गुच्छे की तरह खड़े होकर कुछ बात कर रहे थे। प्रधान डरते हुए वहां खड़े रहे लेकिन उनकी तरफ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

दरअसल इस बीच एक अजीब-सी गड़बड़ खड़ी हो गई थी। राष्ट्रीय पार्टी के कुछ लोगों ने आपात्कालीन बैठक बुलाने की

मांग कर दी थी और पार्टी अध्यक्ष के इन्कार करने पर अपनी बैठक एक दूसरी जगह कर ली थी। बाद में उन्होंने अपनी पार्टी को असली राष्ट्रीय पार्टी घोषित कर दिया था।

दफ्तर के सबसे बड़े कमरे में पत्रकार सम्मेलन हो रहा था और वहां जितनी सरगर्मी से बातचीत हो रही थी उतनी ही सरगर्मी से कॉफी और बिस्कुट ढोए-पहुंचाए जा रहे थे।

धनिकलाल कुछ चिन्तित हो गए। वहां जो कुछ उन्हें दिखाई दिया उससे यह अनुमान उन्हें हो गया कि वहां कोई बहुत गंभीर बात हो रही है लेकिन अब वे अपनी समस्या का क्या करें?

आप कहेंगे मैं फिर बीच में क्यों कूदा। आप इसे मेरी ढिठाई मान सकते हैं या एक अहंकार कि मेरे फैसले की यहां पर जरूरत है।

वहां जो भी था उसका रिश्ता धनिकलाल से भी था लेकिन धनिकलाल की उपस्थिति वहां बेहद बेमायनी और बेमौजूं थी। उस घटनाक्रम का किसी भी तरफ से कोई फैसला कर लेने की जल्दबाजी में हर कोई था और धनिकलाल के वहां होने का एहसास उन्हें तब होना था जब वे कोई फैसला कर लें और इस बात की जरूरत महसूस करने लगें कि जिनके बारे में फैसले लिए गए उनमें से वहां कोई फैसला सुनने के लिए हाजिर है!

धन्नू प्रधान थोड़ी देर हताश से इधर-उधर भटकते रहे फिर उन्होंने एक बहुत छोटी-सी कोठरीनुमा जगह पर बैठे टाइप-राइटर खड़खड़ाते एक आदमी से पूछने का फैसला कर लिया।

भाई साहब नमस्कार।

नमस्कार।—वह फिर भी मशीन खड़काता रहा।

एक बात पूछनी थी भाई साहब।

पूछो।

मैं धनिकलाल ग्राम प्रधान हूं, चैलपुर का।

यह तुम पूछ कहां रहे हो। बता रहे हो।

जी हां। बात यह है कि चैलपुर में चुनाव को लेकर गड़-चड़ी फैल गई है।—

यहीं कौन-सी नहीं फैली।—वह आदमी मशीन पर तेजी से उंगलियां चलाता हुआ उतनी ही चुस्ती से जवाब देता रहा।

यहां भी गड़बड़ी है ?

अजी ये पूछो कहां नहीं है।

आप ठीक कहते है भाई साहब। तिवारी साले एक थोड़े ही हैं।

तिवारी ? तिवारी कौन ?

संकटा तिवारी। आज चैलपुर में विरोधी सभा कर रहे है। —धनिकलाल बोले।

चैलपुर में ? क्या वहां भी स्प्लिट हो गई ?

जी क्या हो गई ?

स्प्लिट, स्प्लिट !

जी मैं समझा नही भाई साहब।

बंटवारा। पार्टी में—

उस आदमी ने इस बार चेहरा उठाकर देखा और समझ गया कि जो आदमी सामने है वह इस गुत्थी के अंगरेजी भाष्य से कतई अपरिचित है।

मुझे तो कुछ मालूम नहीं भाई साहब—

यही तो मुश्किल है।—उस आदमी ने अब टाइपराइटर पर उंगलियां रोक दीं। शायद वह बहुत देर से अपने इस एकान्त और यान्त्रिक क्रम से ऊबा हुआ था। हाथ रोककर. बोला : भाई तुम लोगों के जाने बिना अब क्या-क्या होने लगा यह तुम क्या जानो। पार्टी में बंटवारा हो गया है। अब एक राष्ट्रीय

पार्टी है और एक असली राष्ट्रीय पार्टी—

ओह। मैं दरअसल ठाकुर गजराजसिंह से मिलने आया था—

ठाकुर गजराजसिंह ? मुश्किल है—

जी ?

इस पार्टी में यानी राष्ट्रीय पार्टी में तो हैं नहीं। असली राष्ट्रीय पार्टी में भी नहीं हैं। न इस दफ्तर में मिल पाओगे न उस दफ्तर में।—वह मज़े लेता हुआ कहता गया।

तो घर पर—

यही तो चक्कर है। वो घर पर भी नहीं हैं।

घर पर भी नहीं हैं ?

हां। इस वक्त और भी बहुत से नेता न घर पर हैं न दफ्तर में।

मगर—

तुम समझोगे नहीं। मैं होता तो मैं भी यही करता। चूंकि गजराजसिंह कहीं नहीं हैं इसलिए राष्ट्रीय पार्टी भी चक्कर में पड़ी है और असली राष्ट्रीय पार्टी भी। दोनों में से कोई नहीं जानता गजराजसिंह कहां हैं।—वह आदमी अब इस मामले में खासा ही मज़ा लेने लगा था।

मगर मुझे तो बहुत ज़रूरी बात करनी थी।

ऐसे नेताओं से राष्ट्रीय और असली राष्ट्रीय पार्टियों को भी बहुत ज़रूरी बातें करनी थीं। लेकिन किया क्या जा सकता है ?—फिर वह थोड़ा राज़दाराना अन्दाज़ में बोला : सच पूछो तो गजराजसिंह का फायदा भी इसी में है। तुम ज़्यादा चक्कर में मत पड़ो। गजराजसिंह ठीक वक्त पर ठीक फैसला करके प्रकट हो जाएंगे। दोनों पार्टियां चाहती हैं कि वे और उन जैसे लोग उनकी तरफ आएं। बोली लगेगी, भाव चढ़ते जाएंगे। जो नेता

जितनी ज्यादा देर गायब रह लेगा उतनी ऊंची कीमत लग जाएगी—

मगर तब तक तिवारी अपनी सभा कर भी चुकेगा और एक सिपाही चूंकि उसका भांजा है—

तो तुम थानेदार को अपना नाती बना लो या साढ़ू या समधी या कुछ और।—उस आदमी को चूंकि फिर अपना काम याद आ गया था और पेट में उमड़ रही बातों का विकार हल्का पड़ गया था इसलिए वह फिर तन्मय होकर टाइपराइटर पीटने में व्यस्त हो गया। उसके पीटने के ढंग से लगता था जैसे वह कोई नए किस्म के तबले के रियाज में लगा हो।

धनिकलाल उठ पड़े। बातें काफी हद तक उनकी समझ में आने लगी थीं। अपनी कुंठा को किसी पोटली की तरह सावधानी से बगल में दबाकर वे धीरे-से सीढ़ियां उतर आए। उन्हें देखते ही उनके लाठी वाले दोनों सेवक पास आ गए: क्या हुआ प्रधान जी?

तुम अपनी टांग क्या घुसेड़ने लग गए जी?—उन्होंने उनको घुड़क दिया। इसी वक्त बड़ी तेजी से एक भीड़ आपस में जोर-जोर से बातें करती हुई नीचे आई। बारी-बारी से उन्होंने अपनी कारें खोलीं या मोटरसाइकिलें चालू कीं और चल पड़े। एक जबर्दस्त शोर वहां थोड़ी देर गूंजा और फिर शान्त हो गया।

चलो।—प्रधान ने उन दोनों से कहा और इमारत के अहाते से बाहर आ गए।

मगर इतनी रात गए गांव लौटना क्या ठीक होगा?—उनमें से एक ने धीरे से पूछा।

यह बात खुद प्रधान को भी जंची।

इमारत के बाहर खासा ही सन्नाटा था। थोड़ी मुश्किल से ही उन्हें एक आदमी दिखाई पड़ा। उसे रोककर उन्होंने किसी

धर्मशाला का पता पूछा। धर्मशाला जैसी चीज शायद उसे खुद नहीं मालूम थी।

रात में दूर तक निगाह दौड़ाने के बाद अपरिचित शहर उन्हें खासा आसद लगने लगा। कुछ खौफनाक-सा। कुछ ऐसा जैसे वह एक राजसी दीवानखाना हो और प्रधान मात्र एक आवारा पशु हों जो भटककर उधर आ निकले हों और किसी वक्त, किसी से भी, मात्र अभद्रता के आरोप में पिटने का खतरा हो।

उन्होंने पार्टी की उस इमारत में लौटकर वहां चहारदीवारी के पास लगाई छोटी सी चाय की दुकान समेटते एक आदमी से घास पर सोने की इजाजत ले ली। इस तरह सोना बहुत सम्मानजनक नहीं था, यह एहसास उन्हें हुआ। लेटे-लेटे उन्होंने सेवकों से कहा: नरम घास पर खुली हवा में सोने का अपना ही मजा होता है।

जैसा मैंने शुरू में कहा था, मंसाराम के पक्ष में अनायास ही घटनाओं ने मुड़ना शुरू कर दिया था। जिस वक्त धनिकलाल प्रधान पार्टी दफ्तर के लान में पहली नींद का आनन्द ले रहे थे उस वक्त, रात के करीब दो बजे ठाकुर गजराजसिंह ने फैसला कर लिया और अपने फैसले की सूचना राष्ट्रीय पार्टी के अध्यक्ष को दे दी। फोन पर उन्होंने बताया कि वे पार्टी से गद्दारी करने वालों में नहीं हैं।

बहुत सुबह एक मोटरसाइकिल पर ठाकुर का आदमी चैलपुर कुछ नए पर्चे लेकर पहुंचा। चूंकि धनिकलाल तब तक गांव नहीं पहुंचे थे अतः उसने उन्हें बांटने-बटवाने की जिम्मेदारी मंसाराम को सौंप दी। मंसाराम ने अपने घर के सबसे साफ कोने में एक चटाई बिछाकर कागजों का वह छोटा बंडल इस तरह रख लिया जैसे कोई देवमूर्ति हो।

दोपहर से कुछ पहले जब प्रधान अपने साथियों को लिए हुए चँलपुर पहुचे, मंसाराम लगभग सारे ही पर्चे बांट चुका था। पर्चा धनिकलाल ने भी देखा और बेतरह गंभीर हो गए।

बुलाना मंसवा को।—उन्होंने हुक्म दिया।

मंसाराम लंगड़ाता हुआ भी काफी फुर्ती से आया और नमस्कार करके लगभग हांफता हुआ बोला: मालिक बस कोई दस घर और बचे होंगे।

ये पर्चा कहां से आया ?

कहां से? ठाकुर साहब के यहां से फटफट पर आए थे—

पर्चे में लिखा था कि ठाकुर साहब राष्ट्रीय पार्टी में हो हैं! अजीब बात थी। वे खुद वहां से आ रहे हैं और उन्हें भनक तक नहीं मिली और मंसाराम ठाकुर का नया पर्चा बंटवा रहा है।

तुमसे किसने कहा पर्चा बांटने को ?

जी वो बांटने को दे गए थे —

कोई साला कुछ भी दे जाए बांट दोगे ?

जी वो फटफट पर आए थे —

फटफट का बच्चा। साले यह राजनीति है। तुझे मालूम है कहां क्या हो रहा है ? तुझे क्या पता ठाकुर किस पार्टी में है ?

तो मालिक पर्चा वापस ले आऊं ?

प्रधान इस सवाल का भी उत्तर नही दे सके। चुपचाप आसमान घूरते रहे।

छेदी ने कुछ खीजकर पूछा : लालाजी धनिया के कितने पैसे लगाए ?

लाला हरदयाल ने भाव बता दिया।

और मिर्च ?

लाला हरदयाल ने उसका भाव भी बता दिया।

छेदी का ख्याल था कि धनिया और मिर्च लाला हरदयाल ने दोनों के ही ज्यादा पैसे सिर्फ चकमा देकर ठगने के लिए लगा दिए थे और छेदी के सावधान होते ही सही भाव बता देगा। लेकिन थोड़ी झल्लाहट के साथ भी छेदी द्वारा भाव पूछे जाने पर लाला हरदयाल ने वहे भाव बड़े इत्मीनान से दुहरा दिए।

छेदी का हिसाब गड़बड़ा गया। वह अपने हिसाब से दो पैसे ज्यादा ही लाया था मगर यहां पूरे ढाई आने कम पड़ रहे थे।

ये तो हद हो गई लालाजी।—छेदी ने बौखलाकर कहा।

हां भैया है तो।

अरे, आपने तो ऐसे कह दिया जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

मैं कब कहता हूं कुछ नहीं हुआ।—हरदयाल एक लड़के के लिए बगैर तोड़े हुए सही तौल वाला गरी का एक टुकड़ा टिन के डिब्बे में खोजता हुआ बोला : नुकसान तो मेरा भी है भैया। सामान महंगा होगा तो कम बिकेगा। और फिर भैया माल जब हमको मंहगा मिलेगा तो हम सस्ता कहां से बेचेंगे ?

लाला जी हमको न चराओ। धनिया और मिर्च दुलारेलाल से ही तो ली है।— छेदी ने हरदयाल के तर्क को चुनौती दी।

गांव का दुलारेलाल धनिया, मिर्च और सौंफ बो लेता था। गांव में जो बिकती थी, बिक जाती थी बाकी शहर में बेच आता था।

अब भैया तुम नहीं समझोगे। और सच कहूं तो सब गर्दन पर चढ़ आएंगे।—लाला हरदयाल ने बात को छेदी की पहुंच से

ज़्यादा ऊपर के रहस्यजनक कारणों से जोड़ते हुए अपना पीछा छुड़ा लिया।

छेदी ने बहुत कोशिश की लेकिन हरदयाल ने रहस्य का उद्घाटन नहीं किया। चिढ़ा हुआ छेदी मिर्च भर लेकर लौट आया।

लेकिन रहस्य हरदयाल के पेट में भी आसानी से या ज़्यादा समय तक पचने वाला नहीं था। सिद्दीक सामान खरीदने आए तो चीनी उन्हें जरूरत से ज़्यादा ही मंहगी हो गई लगी।

अमां हद करते हो लाला, इस भाव चीनी ?

क्या कहूं सिद्दीक मियां मंहगी तो हुई।

मंहगी हुई, क्यों मंहगी हुई ? मंहगी बेच रहे हो तब न मंहगी हुई ?

बेचूं नहीं तो क्या करूं ?

अरे हद हो गई, तुम्हारे लिए जैसे कोई बात ही नहीं है। मेरा गन्ना साला इस बरस चौबीस रुपये गाड़ी सस्ता गया। चीनी साली मंहगी हो गई !

मंहगी क्यों नहीं होगी मियांजी आखिर मुझे भी तो पेट पालना है—

अमां अपना पेट पालोगे और दूसरे के पेट पर लात मारोगे, ऍं ? अमां कुछ ऊपर वाले का तो खयाल करो—

अब हाथ की तराजू नीचे रखकर हरदयाल राज़दाराना अन्दाज में मुस्कुराया और बोला : बुरा मत मानिए यह ऊपर वाले की ही करामात है।

क्या ?

ठीक कहता हूं। ऊपर वाले का मतलब भगवान नहीं। अब आपसे क्या छुपाना, आप खुद जानते होंगे। हज़ार रुपया ठाकुर साहब को दिया और सात सौ रुपये विरोधी दल वाले ले गए।

अब एक हजार सात सौ देने की औकात हमारी तो है नहीं। चीनी चावल नमक तेल पर दो-दो पैसे बढ़ाकर ही काम चलाऊंगा भैया—

या खुदा। साली लूट है लूट। वोट दो और बाद में मंहगाई भुगतो !—सिद्दीक चीनी को साड़ी के किनारे जोड़कर बनाए हुए थैले में कुहनी से लटकाये तिवारी के यहां आ गए। तिवारी की गाय ने बच्चा दिया था। वह उसके चारे की तैयारी कर रहे थे। सिद्दीक को देखकर खुश हो गए। गाय का पहला दूध एकदम पीले रंग का और थोड़ा खट्टापन लिए हुए था जिसे गर्म करके उन्होंने एक थाल में जमवा लिया था। पीले छेने के टुकड़े खिलाकर वे उनकी खातिर भी करना चाहते थे।

सिद्दीक कम बोलते थे। ज्यादातर सुनने के आदी थे लेकिन आज वे बोलना ही बोलना चाहते थे।

हरदयाल दाम बढ़ाकर क्या सिर्फ सत्रह सौ ही वसूलेगा?—तिवारी ने घटना को और विस्तार दिया।

यह भी ठीक है सत्रह सौ दिए हैं तो सत्रह हजार न सही दस-पन्द्रह हजार तो पैदा ही कर लेगा।—सिद्दीक ने समर्थन किया।

कैसा बेहतरीन धन्धा है। पैसा बनियों से लो। और उसी पैसे से चुनाव जीतो। बनिया अपनी जेब से कब देने का?

उनकी बातचीत के बीच खास तौर से सिद्दीक जैसे लोगों के लिए अलग से रखी चीनी मिट्टी की एक चटकी हुई तश्तरी में छेने जैसे दूध की वह चीज आ गई। उसे मीठा करने के लिए उसमें थोड़ा अच्छे किस्म का गुड़ भी मिला दिया गया था।

सिद्दीक और तिवारी का वह संवाद अगले कुछ रोज़ में चैलपुर की सबसे ताज़ी और व्यापक चर्चा का विषय बन गया।

नेतवा साला फोकट में नहीं बादशाही दिखाता .फिर रहा

था ।—छेदी ने पांचू चौधरी से कहा : माल काटा मंसवा ने और दो लड्डू के पीछे अनोखे ने गर्दन मेरी पकड़ ली । साला !

देख रहा हूं ।—चौधरी ने गंभीरता से कहा ।

साला अब जल्से के चक्कर में घूम रहा है ।—छेदी जैसे उबल रहा था ।

जल्सा ? कैसा जल्सा रे ?

हद हो गई । अरे चुनाव जीत गए है ठाकुर साहब । अब जल्सा नहीं होगा ? नेतवा फिर रुपये बनाएगा ।

हूं ।—पांचू गहराई से कुछ सोचने लगे ।

एक अदद कुर्ता और पायजामा—सिर्फ । लेकिन उतने भर से ही जो अपवाद मंसाराम को लेकर फैला उसे जानकर वह तय नहीं कर पाया कि खुश हो या दुखी ।

चुनाव खत्म हो चुके थे और चुनाव का शोर भी थम गया था और मंसाराम को ताज्जुब हो रहा था कि जो लोग बड़े सजधज कर बैलगाड़ियों में लंबा सफर गाते-बजाते तय करने के बाद इस तरह वोट डालने गए थे जैसे किसी त्यौहार में चढ़ावा चढाने जा रहे हों वही अब इस सारे मामले के आलोचक बन गए थे ।

मतदान केन्द्र के पास अनोखे हलवाई ने मिठाई के कुछ थाल लगाकर एक पेड की छाया को दूकान में ही बदल दिया था । लल्लू वहां बच्चों के लिए छोटी-छोटी, टिन की बनी हुई ढोलकें भी बेचने पहुंच गया था । लेकिन यकायक माहौल कुछ ऐसे बदला जैसे तने हुए तम्बू की रस्सियां काट दी हों । पहली बार यहां अर्थव्यवस्था से जोड़कर अपने-आपको और मतदान के इस आयोजन को देखा जाने लगा ।

एक तो वोट डालो ऊपर से मंहगाई झेलो ।—अनोखे हलवाई ने अपने चबूतरे से टांग लटका कर बैठे हुए कहा ।

अरे हद ही हो गई। मगर तुमने आज दूकान क्यों नहीं खोली ?—सामने वाले आदमी ने कहा।

ऐं दूकान ?—अनोखे खामोश हो गया।

उसने आज दूकान लगाई ही नहीं थी। उसने जब सुना कि चुनाव में जीत का जल्सा होगा और शायद जुलूस भी निकलेगा तो वह घबरा गया। उसने सोचा हो सकता है इस बार लड्डू के बजाय गुलाबजामुन मुफ्त खिलाना पड़ जाय। लिहाज़ा उसने सारा सामान अन्दर बन्द कर दिया और चबूतरे से टांगें लटका कर बहस में जुट गया।

अनोखे का खतरे का एहसास सही नहीं था। धनिकलाल गोकि तिवारी को करारा जवाब देने के लिए जीत का जल्सा मनाना चाहते थे लेकिन लोगों की प्रतिक्रिया बहुत अनुकूल नहीं मिली।

जैसा हुकुम हो प्रधान जी।—श्यामलाल सुनार ने जैसे अनिच्छा से सहमति जाहिर की।

हेडमास्टर चुप बैठे रहे। धनिकलाल ने इस बात को गहराई से पढ़ा। थोड़ा खीज कर बोले : ऐसे कह रहे हो जैसे जल्सा होगा तो हमारे ऊपर एहसान होगा।

ऐसी बात तो नहीं है प्रधान जी।

ऐसी बात नहीं ? फिर ऐसे मरे-मरे क्यों बोल रहे हो ?

मरे तो मरे की तरह ही बोलेंगे प्रधान जी।

क्या मतलब ?

सबेरे बाजार का जो हाल देखा उसमें कमर तो टूट ही गई समझिए।

क्या देखा ? पहेलियां क्यों बुझा रहे हो ?

जानते तो आप भी हैं प्रधान जी। रातों-रात हर चीज़ के दाम बढ़ गए।

अबे तो क्या मैंने बढ़ाए ?

बढ़ाए तो किसी ने नहीं लेकिन बढ तो गए ही।

प्रधान चुप हो गए। हेडमास्टर ने पान मुह में इस तरह चवाना शुरू कर दिया था जैसे उसी एक व्यस्तता के कारण कुछ बोल पाना कठिन था।

मंहगाई भैया हमीं तुम के लिए तो नहीं है।—अब धनिक-लाल ने अपना स्वर बदल लिया : सभी को काट रही है।

श्यामलाल सुनार को भी लगा कि वह कुछ ज्यादा ही ढिठाई से पेश आ रहा था माफी जैसी मांगता हुआ बोला : खैर वो तो चलता है। जैसा हुकुम होगा करेंगे।

धनिकलाल ने सुनार के जाने के बाद भी हेडमास्टर को वैसा ही खामोश पाया। और दिन होता तो अगर तुरन्त वे प्रधान का साथ न देते तो कम-से-कम उसके जाने के बाद ज़रूर बोलते : साला हरामजदगी करता है—

मगर वे चुप रहे। आखिर धनिकलाल ने ही मौन तोड़ा : अजीब समय आ गया है। सभी के पंख लगने लग गए हैं—

हेडमास्टर फिर भी कुछ नहीं बोले। उनका लड़का बाजार से लौटा तो चीजों के नए भाव सुन कर उनकी बीवी ने लगभग कुहराम ही मचा दिया था। उन्हें खुद भी बहुत खला था। तनख्वाह में जो सालाना बढोतरी हुई थी उससे कई गुना ज्यादा अब बाजार की भेंट होने वाला था और हेडमास्टर जानते थे कि इस साल क्या अब वे आने वाले कई साल नया कोट नहीं बनवा सकते।

इस बीच किसान पार्टी के प्यारेलाल को एक नया उत्साह दिखाने का मौका मिला। किसान पार्टी टूट गई थी और प्यारे-लाल चुनाव भी नहीं लड पाए थे लेकिन उनकी राजनीति इतनी आसानी से संन्यास लेने को तैयार नहीं थी। यही वे

नई पार्टी के गठन की परिकल्पना भी करने लग गये थे। किसान पार्टी में उनके न चाहते हुए भी जो हुआ था वह उन्हें कुरेदता रहता था। पार्टी के सबसे बड़े नेता अपने कुछ और सहयोगियों के साथ राष्ट्रीय पार्टी से जा मिले थे। इसके लिए उन्हें सरकार में एक अच्छी सी जगह मिल गई थी और वे काफी खुश थे। किसान पार्टी टूट गई थी।

प्यारेलाल इस बार ऐसी पार्टी की कल्पना करने लगे थे जो सिर्फ उन्हीं की इच्छा पर टिकी रहे। वे चुनाव के बाद ज्यादा इन्तजार नहीं करना चाहते थे। बाजार में चीजों की बढ़ी कीमतों का राज उन्हें मालूम था। उन्होंने काफी आंकड़े भी इकट्ठा कर लिए थे जैसे देश में पिछले चुनाव में क्या खर्च हुआ और इस चुनाव में कितना ज्यादा हुआ। कहां से कितना पैसा आया और कहां गया और अब किस तरह बाजार में अन्तर पैदा हुआ। वे यहां तक हिसाब जोड़ चुके थे कि एक रुपये की असली कीमत कितने पैसे रह गई है।

वे ये सारी बातें जल्दी से जल्दी जनता को बता देना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने एक तूफानी दौरा शुरू कर दिया था।

उनके अभियान का तीसरा पड़ाव चैलपुर था। तिवारी को सहसा बहुत अच्छा लगा कि ऐसे मौके पर किसान पार्टी न सही बाबू प्यारेलाल जैसा नेता ठाकुर के विरुद्ध जाग पड़ा। प्यारेलाल को तो उन्होंने अपने बाहरी कमरे में एक अच्छी बुनी चारपाई पर साफ चादर बिछाकर आराम करने पर मजबूर कर दिया और अपने कहार से उन्होंने तख्त और गैसबत्तियां मंगा लीं। खुद वे बड़े विस्तार से गांव की ताजा राजनीति का ब्योरा पास बैठकर देते रहे।

मंसाराम ने स्कूल के पास अनायास ही तख्त और गैस-

बत्तियों का आना देखा।

दरअसल चुनावों के बाद वह अपने को बेरोजगार-सा हो गया महसूस कर रहा था। प्रधान जो जल्सा करना चाहते थे उसके बारे में उनका उत्साह टूट गया था। मंसाराम ने जिस किसी से जल्से की बात की वह कुछ इस तरह चिड़चिड़ाया कि मंसाराम घबरा ही गया। एक आदमी ने तो उसे लगभग गर्दन से ही पकड़ लिया था : अबे तेरी रोजी चलती है तो तू कर जल्सा। साले हमें क्यों लुटवा रहा है ?—

मंसाराम ने निराश होकर अब इस बारे में किसी से कुछ कहना ठीक नहीं समझा। अपनी वर्दी भी उसने उतार कर सावधानी से लोहे के बक्से में रख दी थी। बेरोजगारी की हताशा में वह किसी खेत के किनारे बैठकर चने का साग खाना चाहता था। इसके लिए उसने नमक की एक छोटी सी गिट्टी कमर में खोंस ली थी।

चने का एक गुच्छा नमकीन, ताजा, हरा साग मुंह में भरने के बाद नमक की कंकड़ी का एक हिस्सा कुतरने पर स्वाद और बढ जाता था। तभी उसकी नज़र ठेले पर से उतरते तख्तों, दरियों और गैसबत्तियों पर पड़ी।

उसने समझा प्रधान जी जीत का जल्सा करने में कामयाब हो गए हैं। अब उसे जल्दी से जल्दी अपनी वर्दी में होना चाहिए। उसे अपनी टूटी टांग पर खीज हुई। घर जाकर लौटते हुए काफी वक्त लग जाता और जिम्मेदारी सामने ठेले से उतर रही थी। उसने तुरन्त ही फैसला किया कि वह जल्से का इन्तजाम पहले कराएगा और बाद में सभा से पहले घर जाकर अपनी वर्दी पहन आएगा।

ए भाई। गैसबत्तियों के वाशर तो ठीक हैं न ? अबे, एक बत्ती का तो मैंटल ही टूटा है !—उसने ललकारा।

सामान लाने वाले उसे पहचान गए थे। वह वर्दी में होता तो खासा रौब भी खा जाते। फिर भी उसका लिहाज़ करते हुए एक आदमी बोला : चिन्ता न करो। चार नए मैंटल अलग से लाया हूं।

अरे दरी मिट्टी में क्यों लथेड़ रहे हो जी !

इसी तरह वह बेहद मुस्तैदी से काम कराता रहा। पूरे डेढ़ दो घंटे की मेहनत से उसने यहां तख्त लगवाए, दरी चांदनी बिछवाई और फिर स्कूल के चपरासी को धमका कर एक मेज और तीन कुर्सियां भी उठवा लाया।

अपनी इस कारगुजारी से अब वह धन्नू प्रधान को भी परिचित करा देना चाहता था। प्रधान जल्से से मन हटाने के लिए ढीली हो गई चारपाइयां कसने में व्यस्त सेवक को यह समझाने लगे थे कि चारपाई को किस तरह कसो कि वह टेढ़ी न हो जाए।

सब तख्त लग गए प्रधान जी। सब काम ठीक-ठाक हो गया।—मंसाराम ने हाथ जोड़कर सूचना दी।

प्रधान उसकी बात का सही अर्थ नहीं समझे सिर्फ चारपाई घूरते हुए धीरे से बोले : हूं।

गैसबत्तियां इस बार ठीक लाया है—

क्या ?—प्रधान चौंककर घूमे।

हां मालिक। एक बत्ती का मैंटल टूटा था—

अबे बक क्या रहा है ?

जी वो जलसा। जल्से के लिए स्कूल से एक मेज और तीन कुर्सियां ले आया। चपरासी साला चिपिड़-चिपिड़ कर रहा था—

अबे सूअर साले !—धन्नू गुस्से से पागल ही हो गए। चारपाई कसने वाले को ललकार कर चिल्लाए : मार इसको

साले को ! सौ जूते लगा—

मगर सरकार मेरी गलती—

अबे गलती पूछता है साले ?

सरकार सब इन्तजाम आपके हुकम के मुताबिक किया है—

मैंने कब कहा था ? ऐं ?

मगर सरकार—

हरामजादे, वो प्यारेलाल का जल्सा है—

प्यारेलाल ? मगर सरकार—

प्रधान का सेवक सचमुच जूता लेकर उतर आया था। मंसाराम घबराकर रोने लगा था। शायद उस रोने से प्रधान कुछ दयार्द्र हो आए हों। सेवक द्वारा जूतों का प्रयोग किए जाने से पहले वे ही आगे बढ़े और जोर की लात मारते हुए बोले : भाग जा साले यहां से—

कुछ जल्से के इन्तजाम में मदद करने और कुछ लात खाकर गिरने की वजह से टूटी टांग में दर्द होने लगा था। उसे घसीट-घसीट कर तेजी से चलता हुआ वह गांव के बाहर निकल गया। ऐसे मौके पर वह घर नहीं जाना चाहता था। वह जानता था कि जब तक वह घर पहुंचेगा उसके साथ हुए इस सुलूक की हास्यास्पद गाथा पहुंच चुकी होगी और बस्ती वाले उसे देखकर जरूर हंसेंगे।

आम तौर पर इस तरह के सुलूक पर वहां किसी के हंसने का कोई कारण नहीं हुआ करता था क्योंकि ऐसा सुलूक किसी के साथ भी हो सकता था। लेकिन अपने सफेद कुरते पायजामे के बाद से मंसाराम पहले वाला साधारण मंसाराम नहीं रह गया था। वह ऐसा असाधारण मंसाराम हो चुका था जिसकी विशिष्टता उस बस्ती में अस्वाभाविक या किसी हद तक

अप्राकृतिक थी। लोगों का हंसना स्वाभाविक ही था। बल्कि हो सकता है वहां कुछ लोगों ने मशहूर कहावतें दुहरा कर मजे लेने शुरू कर दिए हों जैसे कौवा चला हंस की चाल—इत्यादि।

उसके साथ हुए इस सुलूक की ख्याति सचमुच ही बहुत तेजी से फैली। दरअसल मंसाराम के हुलिया में जिस तरह नाटकीय परिवर्तन हुआ था उसकी वजह से वह खासे ही आकर्षण का केन्द्र बन गया था।

छेदी ने सुना और लल्लू को साथ लेकर मंसाराम की खोज में निकल पड़ा। वह जानता था कि मंसा घर नहीं आएगा। गांव में घर के अलावा खोजने लायक ज्यादा जगह कम ही होती है। मंसा को उन्होंने नहर के पुल पर बैठे हुए पाया। आपस में इशारा करके मुस्कुराए और किसी हद तक खलनायकों की तरह खांसे।

मंसा ने मुड़कर देखा और चिढ़ गया।

छेदी ने "किसी को" सुनाते हुए कहा : सौ-सौ जूता खाएं तमाशा घुसके देखें—

तुम यहां क्या कर रहे हो? प्यारेलाल के जल्से में क्यों नहीं गए?

प्यारेलाल के जल्से में?—छेदी यकायक बौखला गया।

और क्या। तुमको तो खुशी ही होगी कि प्रधान जी का जलसा नहीं हुआ—

अरे कैसी बात कर रहा है रे?

और क्या गलत कह रहा हूं? तुम्हीं लोगों की वजह से तो प्रधान जी का जलसा नहीं हुआ। तुम लोग जिस पत्तल में खाते हो उसी में छेद करते हो।

उसी में छेद करते हो!—छेदी और लल्लू दोनों ही बात

के इस मोड़ से [illegible]।

अगर आपने आतिशबाज़ी देखी है तो कुछ अनुभव जरूर ही किया होगा। जब तक आतिशबाज़ी जलती रहती है, आप बड़ा तेज उजाला महसूस करते हैं और जैसे ही वह समाप्त हो जाती है एक ऐसा अंधेरा छा जाता है जैसे आपकी आंखों पर कोई कोलतार चिपका गया हो।

चुनाव की वह घटना मंसाराम के लिए कुछ ऐसा ही अनुभव थी। चुनाव और उसके बाद की गरमी उतर जाने के बाद सब फिर वैसा ही मामूली, अर्थहीन और निर्जीव [illegible] बन गया।

बल्कि अजीब बात है कि उसके बाद जो अवसर भी उसके हाथ कम ही आते थे। अगर आते भी थे [illegible] चुनाव होते थे या माल उतारने वक्त कुली [illegible] थी। सच तो यह है कि अब वह काम उसे अच्छा भी नहीं लगता था। मेरे अन्दर में बहुत कुछ ज्यादा ही महसूस होने लगा है और गंदगी और ज्यादा [illegible]।

मां की बीमारी ने [illegible]
उस [illegible]
बेरोजगारी के [illegible]
उसे [illegible]

कभी खासा गायब हो जाता था और फिर ज्यादा शिद्दत से नमूदार होकर मां को पहले से ज्यादा तंग करना शुरू कर देता था। वह दिन भर बुखार में जलती हुई कराहती थी और रात में कांप-कांपकर दांत बजाने लगती थी।

पहली दवा तो गिर ही गई थी। उसके बाद मंसाराम इतना व्यस्त हो गया था कि उसे घर में किसी की बीमारी जैसे घटिया काम के लिए फ़ुरसत ही नहीं थी।

इस बीच उसकी बीवी परिजमाल की मजार पर भी हो आई थी। मजार से सटी झोपड़ी में रहने वाले फ़कीर ने बहुत देर आंख मूंद कर इस बीमारी को किसी रूह की करामात घोषित कर दिया था, और वह रूह से छुटकारे के लिए फकीर द्वारा दिया एक शीशी पानी सुबह-शाम पिलाती रही थी।

जब बेरोज़गारी के दिनों में मंसाराम घर की तरफ़ मजबूरन मुतवज्जेह हुआ, उसे मालूम हुआ उसकी मां की पीठ पर एक भारी-सा फोड़ा भी निकल आया है। उसने उस चिकने, बद-शक्ल, सूजे हुए और नीले-सफेद फोड़े को टटोलने की कोशिश की तो वह बेतरह चीख पड़ी।

अब यूसुफ़ उसे बुखार उतारने के लिए पिलाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के साथ कुछ अजीब भोथरी गंध वाले मलहम भी देने लगे।

मल्हम से फूट तो गया है—

फूट गया न ?—यूसुफ़ तुरन्त खुश होकर बोले : मैं तो कहता था। ऐसा मल्हम बड़े-बड़े हकीम नहीं बना पाते।

लेकिन फोड़ा ठीक कब होगा ?

ठीक कब होगा ? अमां तुम गधे हो। फोड़ा क्या है ? क्या होता है, एं ?

फोड़ा ?

हां। फोड़ा। आखिर फोड़ा होता क्या है, बोलो ?

जी फोड़ा—

अमां सीधी बात है फोड़ा खुद कोई मर्ज नहीं होता। जिस्म में घुसे हुए मर्ज को बाहर निकालने की एक नाली होता है। जब तक बादी खून है, फोड़ा है। बादी खून निकल जाएगा, फोड़ा ठीक हो जाएगा।

तो मल्हम तो खत्म हो गया—

ठीक बात है। खत्म हो जाने दो। मल्हम का काम भी खत्म हो गया। वह फोड़े को फोड़ने के लिए था, फोड़ दिया। आगे फोड़ा अपना काम खुद करेगा।

मतलब और मल्हम न लगाएं ?

अमां अजीब आदमी हो। बता तो दिया।

पट्टी—

हद है तुम लोगों की जहालत की। अबे पट्टी बांधोगे तो बादी खून किधर से निकलेगा ?

लिहाजा मंसाराम यूसुफ के यहां से इस बार बिना किसी दवा के वापस आ गया क्योंकि यूसुफ का खयाल था कि बुखार भी बादी खून की वजह से ही था। जहां बादी खून बाहर हुआ, बुखार भी खुद-ब-खुद गायब हो जाएगा।

मंसाराम की बीवी ने मजार के फकीर को फोड़े की बात बताई। वह भी बहुत खुश हो गया। मंसा की बीवी को ताज्जुब हुआ कि इसमें खुश होने की क्या बात है। फिर उसने सोचा, यह बड़े ज्ञानियों की बातें हैं, वही जान सकते है।

साहब, उनको दर्द बहुत है।—मंसा की बीवी ने कहा।

दर्द तो होगा। जरूर होगा।

कुछ इलाज हो जाता—

यही तो गड़बड़ है। अरे वह फोड़ा नहीं है रूह सूराख करके

भागी है।

लेकिन बुखार तो अभी आ जाता है।

जरूर आएगा। रूह जिस सूराख से निकली है उसी से दुबारा जा घुसती है।

कुछ कीजिए सरकार।

फकीर ने कुछ देर आंखें बन्द रखीं और फिर नीम की लकड़ी का टुकड़ा देकर बोला : इसे घिसकर लगाना। लगाकर मजबूत पट्टी बाध देना।

इसके बाद कई दिन मंसाराम और उसकी बीवी में झिक-झिक होती रही। मंसा यूसुफ की हिदायत के अनुसार पट्टी खुलवा देता था और बीवी फकीर के हुक्म से पट्टी बांध देती थी।

वह फोड़ा धीरे-धीरे बड़ा होता गया लेकिन मंसाराम अब अपनी नई बेरोजगारी से इतना ऊबने लगा था कि उसने उधर ध्यान देना ही छोड़ दिया।

तुम्हारी मां की हालत अब कैसी है?

वैसी ही है साहब।

अभी बादी खून होगा। बादी खून की सिफत यह होती है—

यूसुफ उससे बादी खून की बात करना चाहते थे लेकिन मंसाराम का मन ऐसी किसी बात में नहीं लगता था। उसे राजनीति की हुड़क लगती थी। हालांकि वह राजनीति के बारे में बिल्कुल ही कुछ नहीं जानता था फिर भी अगर उसकी चर्चा हो तो उसे बहुत कुछ पहचाने हुए की याद आती थी जो किसी सुहाने सपने की तरह मजा देने लगती थी। लेकिन आश्चर्य है कि उससे राजनीति पर बात करने को कोई तैयार नहीं होता था। या तो बातचीत बादी खून पर होती थी या मंहगे हो गये

सामान पर। बल्कि एक बार महीपत तो और आगे बढ गया था : तुम्हें क्या ? तुम साले माल काटो। खद्दर झाड़े फिरो। भुगतेंगे तो हम। आगे से कोई वोट मांगने आया तो साले को खोदकर गाड़ देंगे—

मंसाराम को लगा, गालियां वोट मांगने वाले को कम, उसे ज्यादा दी जा रही हैं। लेकिन वह करता भी तो क्या ?

इस बीच एक बार स्कूल का उत्सव हुआ। इस उत्सव में थाने के बड़े दारोगा से अध्यक्षता कराई जानी थी। इस मौके पर एक बार फिर मंसाराम को आगे आने का मौका मिल गया।

बत्ती वाला साला हरामी है।—मसाराम ने धीरे से याद दिलाई। बत्तियों के बहाने वह अपनी उपयोगिता की याद दिलाना चाहता था।

तो तुम क्या अचार डालने के काम आओगे ?—हेडमास्टर ने उसे डाटा।

नहीं मालिक।

तो जा उधर देख। तखत-वखत डालने में मदद कर दे जाकर।

अब इस काम में उसे थोड़ी महारत हासिल हो चुकी थी। यानी तख्त का पाया हिलता हो तो दूसरे तख्त से भिड़ाकर रखो, ऊंचा-नीचा हो तो नीचे ईंट लगाओ, पटरा उखडा हुआ है तो तख्त लाने वाले को गाली दो—इस तरह की तरकीबें उसने सीख ली थीं। तख्त से बने मंच को उसने गेंदे और गुड़हल के फूलों से सजा भी दिया।

इसके बाद उसे एक नई बात सूझी। लेकिन उस सुझाव को पेश करते वक्त वह थोड़ा डरा। उसने सजावट में जुटे बच्चों से कहा : कहो छोटी-छोटी रंगबिरंगी झंडियां सुतली में चिपका

कर लगा दी जाएं तो मजा आ जाए।

हां। झंडियां बड़ी अच्छी लगेंगी।

तो हेडमास्टर साहब से कहो।

दो लड़के तुरन्त दौड़ गए। हेडमास्टर उस वक्त खाना खाकर दांत खोद रहे थे और सोच रहे थे कि मौके पर क्या-क्या कार्यक्रम कराए जाएं।

लड़के दौड़ तो आए थे लेकिन हेडमास्टर के सामने आकर थोड़े घबरा गए। एक दूसरे को धकेलते हुए धीरे से बोले : तुम बोलो।

क्या है जी ?—हेडमास्टर की आवाज़ उन्हें उस वक्त किसी घटोत्कच या लंकापति से कम डरावनी नहीं लगी। थोड़ा हक-लाते हुए एक बोला : वो मंसवा है न—

मंसवा ? उसने क्या किया ?

नहीं उसने नहीं—

उसने नहीं ?

लड़के एकदम बौखला गए थे फिर भी किसी तरह उन्होंने झंडियों वाली बात बता ही दी।

हूं। ठीक है। देखेंगे। जाओ भागो।

लड़के सचमुच बेतहाशा भाग लिए। लेकिन हेडमास्टर को बात जंची। उन्होंने मंसाराम को बुलवा लिया। अन्दाज़ से हिसाब लगाया और रंगीन कागज के पैसे उसे दे दिए। पैसे लेकर मंसाराम धीरे से बोला : कुछ सुतली भी लगेगी—

हूं।

और लेई के लिए आटा वगैरह—

अबे आटा मेरे यहां से लेता जा।

इस तरह अब मंसाराम ने अपनी जिम्मेदारी में एक लाभ-दायक इज़ाफा किया, पहली बार।

इसके बाद वह अपनी इस कला के बारे में ज्यादा सावधान हो गया। ऐसे मौके तलाश करने लगा जब इस तरह के इन्तजाम जरूरी हों और उनमें मंसा पर ही निर्भर किया जा सके। मौजीराम की लड़की की शादी में बांस गाड़कर उस पर पत्तियां और फूल लपेट कर उसने जो फाटक बनाया उसके लिए उसे पूरे पांच रुपये सिर्फ इनाम के मिले थे। तीन दिन उसने वहां पूड़ियां खाई थी और घर भी ले आया था।

हालांकि उसका पैर अब ठीक हो गया था लेकिन मंसाराम को महसूस हो रहा था कि अब जो जिन्दगी शुरू हुई थी उसके लिए काफी भागदौड़ जरूरी थी और इस भागदौड़ के लिए सिर्फ दो पैर नाकाफी थे। साइकिल होनी चाहिए। साइकिल हो तो मजे से घंटी बजाते फर्राटे से काम कर आओ।

मंसाराम को याद नहीं उसने कब किससे यह बात कह दी होगी कि यकायक अपनी बस्ती में वह एक अजूबे की तरह देखा जाने लगा।

बग्घी में चढ़ेंगे टके के सुल्तान।—उसे देखकर किसी ने आवाज दी और फिर वहां खड़े कई लोग हंसे।

वह बात किसने कही थी यह नहीं जान सका लेकिन उसके लिए कही गई है, यह उसे पता लग गया। वह थोड़ा तमतमा आया। तभी जाने किधर से पांचू चौधरी निकल कर आ खड़ा हुआ।

कहां रहता है आजकल, ऐं?—पांचू ने पूछा।

कहां? काम कर रहा था—

काम, साले बड़े लाट गवर्नर की सरकार चला रहे हो न।

मगर हुआ क्या?

लल्लू आगे आ गया—तू मालपूए उड़ाता घूमे और हम तेरी मां की तीमारदारी करें। क्यों?

दवा तो हो रही है—

क्या दवा हो रही है रे ? उसे अस्पताल क्यों नहीं ले जाता ? मरेगी तो कफन का पैसा भी हमसे मांगेगा।

बग्घी पर तो चढ़ लेंगे।

अब मंसाराम समझ गया कि यह फिकरा पांचू चौधरी के बेटे ने बोला था। वही बोल भी सकता था।

अस्पताल की क्या जरूरत है ? यूसुफ हकीम साहब कह रहे थे बादी खून है।

बादी खून हो या जो हो। मगर ऐसे नहीं चलेगा। हां। बताए देता हूं।—पांचू जैसे धमकाता हुआ चला गया। पांचू का गुस्सा नाजायज नहीं था। मंसाराम की मां पांचू की बीबी की चचेरी बहन थी।

लेकिन मामला सिर्फ इतना ही नहीं था। मंसाराम जानता था कि यह गुस्सा न तो चचेरी बहन से संबंधित था न ही मानवीय सहानुभूति से। जिस बस्ती का वह खुद एक हिस्सा था उसमें मानवीय सहानुभूति जैसी चीज अक्सर नहीं ही होती थी। कोई भी बुखार या चेचक का शिकार हो जाता था या किसी का भी जख्म सड़कर उसकी जान ले लेता था और बेहद निस्संगता से उसकी 'मिट्टी' का निपटारा कर दिया जाता था। मृतक के लिए 'मिट्टी' शब्द शायद इसी बस्ती में सबसे ज्यादा जायज होता था। उसके लिए इससे अधिक सम्मानजनक शब्द निरर्थक ही था। नाली में जमा कीचड़ की मिट्टी फेंकने और लाश को निपटाने के बीच मानवीय संवेदना की उपस्थिति या अनुपस्थिति एकदम ही बेमौजूं होती थी। इसके बावजूद मंसाराम की मां की संभावित मृत्यु को लेकर जो संलग्नता दिखाई दे रही थी उसका उत्स सिर्फ वह काल्पनिक साइकिल है जिसे मंसाराम प्राप्त करना चाहता है, यह उसको साफ दिखाई दे रहा

था। भारी मन लिए वह घर आ गया। वह जो कुछ भी कर रहा था उसके बारे में खासा ही उत्साहित और आश्वस्त रहा था बल्कि उसका खयाल था कि इससे उसे थोड़ी सी इज्जत कमाने का मौका मिल रहा था।

आखिर लोग समझते क्यों नहीं कि कितने बड़े-बड़े लोगों के साथ वह रहा। कितनी बड़ी-बड़ी जगह हो आया। अब छेदी अगर अच्छा काम करने के बजाय केकड़े पकड़ने में ज्यादा रुचि रखता था तो इसका वह क्या करे? जितनी तत्परता, सावधानी और कुशलता से वह मंच लगवाता था या गैसबत्तियों का जैसा ध्यान रखता था वैसा छेदी या लल्लू या और कोई क्यों नहीं करता था? एक बार छेदी ने मेज लगाई और मेज की एक टांग तख्त के नीचे आ गयी थी। मेज पर रखा गुलदस्ता भी लुढ़क गया था। बल्कि उसे संभालने में प्रधान जी भी गिरते-गिरते बचे थे।

वो तो कहो प्रधान जी ने छेदी को मेज लगाते देख लिया था वरना छेदी के बजाय थप्पड़ मंसाराम को ही खाना पड़ जाता। लेकिन मंसाराम ऐसा मौका ही नहीं देता था।

मंसाराम बहुत दिनों के बाद घर के आंगन में लेटा। अन्दर के कमरे से बीच-बीच में एकरस, यान्त्रिक कराह सुनाई दे जाती थी। इस कराह से अब वह उतना असंपृक्त नहीं था। लेकिन खीज भी थी। उसने सोचा, वह कोशिश करेगा कि शहर ले जाकर अस्पताल में उसे दिखा दे। वह अस्पताल के प्रति बहुत आशा-वान नहीं था लेकिन उसे विश्वास था कि ठाकुर गजराजसिंह ने मदद कर दी तो इलाज बहुत अच्छा हो सकता था। मुमकिन है वो अपनी कोई मोटरगाड़ी ही दे दें। यहां मां को मोटरगाड़ी में लेकर लौटे तो छेदी की हवा ही निकल जाएगी।

मंसाराम ने अपनी वर्दी बहुत सावधानी

उतारने के बाद अपनी समझ के अनुसार ठीक तह लगाकर रखी थी लेकिन बाहर निकालने के बाद उसकी जो शक्ल उसे दिखाई दी उसने उसे दुखी कर दिया। वह खासी मैली तो हो ही गई थी, कुछ इस तरह सिकुड़ गई थी जैसे बगैर खींच कर सुखाए यों ही धूप में डाल दी गई खाल सिकुड़ जाती हैं।

उसने साबुन की बट्टी तलाशनी शुरू की। वह कभी आई होती तो मिलती। उसे ताज्जुब हुआ कि इससे पहले कभी साबुन की जरूरत उसे क्यों नहीं महसूस हुई थी।

एक समस्या और थी। साबुन की बट्टी कितने में मिलेगी? हो सकता है वह बहुत मंहगी मिलती हो वरना सभी लोग न इस्तेमाल करते?

बहुत डरते हुए वह लाला हरदयाल के पास पहुंचा।

साबुन।—कहकर हरदयाल अपने पीछे ढेर सामान की तरफ मुड़ा फिर यकायक बौखलाकर घूमा: क्या मांगा रे?

साबुन लाला जी।

ऐं? अच्छा। क्या जमाना आ गया है। मैंने कभी साबुन साला सूंघा भी नही। ला चौदह आने।

चौदह आने?

फिर क्या मुफ्त?

लाला जी कोई छोटी बट्टी दे देते—

अबे छोटी बट्टी कहां से दूं! मैं बनाता हूं क्या?

गनीमत है कि मंसाराम एक रुपया लाया था। चौदह आने की बट्टी खरीदने के बाद भद्रता का सुख बालू की तरह उसकी मुट्ठी से सरक गया। क्या यह सब निभाया जा पाएगा?

साबुन मिल गया था लेकिन तालाब के जिस पानी में उसे वे कपड़े धोने थे उसका भूरा पीला रंग उसकी मजबूरी था। सूखने के बाद उन कपड़ों की शिकन निकालना भी एक ही काम

था। बहुत कोशिश के बाद भी कुर्ता-पायजामा न पहले की शक्ल में आ सका और न ही उतना उजला हो सका। फिर भी वह बाकायदा कुर्ता और पायजामा था।

अपनी इसी पोशाक में एक बार वह फिर ठाकुर गजराजसिंह की कोठी पर पहुंचा। ठाकुर वहां नहीं थे। वे पार्टी के दफ्तर में ही मिल सकते थे।

पार्टी का दफ्तर? वो कहां है?

नौकर ने जगह बता दी। जो कुछ उसने बताया वह मसाराम की बिल्कुल ही समझ में नहीं आया।

घर आते तो होंगे?

घर कब आएं कोई ठीक नहीं। पार्टी के काम में फंसे रहते हैं।

हां भैया सो तो है। मगर भेंट बहुत जरूरी थी। दूर से आया हूं, चैलपुर से।

यहां लोग दूर से ही आते है। कभी बैलपुर से या मैलपुर से यहां तक कि खपरैलपुर से भी आ जाते है।

खपरैलपुर से?

हां। लेकिन साहब से वो पार्टी के दफ्तर में ही मिल सकते हैं।

वहां पैदल जा सकते है?

जरूर जा सकते हो। वहां लोग हर तरह से जाते है। कुछ लोग मोटरकार पर जाते है, कुछ पैदल जाते हैं यहां तक कि कुछ लोग रेंगकर भी जाते है।

रेंगकर?

हां राष्ट्रीय पार्टी सत्ता में है। बहुत से लोग जरूरत होने पर रेंगकर जाते हैं। मगर तुम पैदल जा सकते हो।

मगर मुझे रास्ता जो नहीं मालूम।—मसाराम ने निराशा से कहा।

यही तो मुश्किल है। रास्ता मालूम होता तो तुम पैदल जाते

ही क्यों ? जिन्हें मालूम है वे कभी पैदल नहीं चलते। खैर तुम ऐसा करो। यहां से सौ कदम बाईं तरफ जाना। वहां एक बस मिलेगी नं० 13 सी 2—एक्सवाई 2 बाई 1368 बी प्लस के।

क्या मिलेगी ?

मंसाराम के चेहरे पर जो दयनीयता उभर आई थी उसे ठाकुर गजराजसिंह का नौकर समझ गया। मुस्कुराया और माली को बुलाकर बोला : सुनो, इनको राष्ट्रीय भवन की बस दिला दो।

बस जहां ठहरी और सारे यात्री उतरे वहीं सौभाग्य से राष्ट्रीय पार्टी के दफ्तर की इमारत थी। इसलिए मंसाराम को इस बार ज्यादा चक्कर में नहीं फंसना पड़ा। एक बहुत बड़े घास और फूलों के मैदान से घिरी उम्दा किस्म की इमारत के बड़े दरवाज़े के आगे एक चौड़ा छज्जा जैसा निकला था उसके नीचे एक चमकीली मोटरकार के करीब खड़े बहुत उजले कपड़े पहने कुछ लोग बड़ी गंभीरता से बातें कर रहे थे। दो युवक हाथ में पेंसिल कापी थामे उनसे कुछ दूर लेकिन किसी हुक्म के तुरन्त पालन के लिए तैयार खड़े थे।

मंसाराम उस माहौल में बहुत ज्यादा ही अकेला और असहाय हो उठा। इमारत और बागीचा ही उसे भयभीत करने को काफी था ऊपर से बहुत ज्यादा सफेद कपड़ों वाले आदमी और बेदाग चमकने वाली मोटरों की वजह से मंसाराम बहुत ज्यादा ही नाचीज़ हो उठा था।

आंखें गड़ा कर देखने पर बिल्कुल एक जैसे दिखने वाले उन सफेदपोशों में ही मंसाराम ने ठाकुर गजराजसिंह को पहचान लिया। उसकी थमी हुई सांस लौटी। बहुत आहिस्ता-आहिस्ता वह उन लोगों की तरफ चला। उसे डर था कि किसी भी तरफ से उसे कोई ललकार देगा : ऐई उधर कहां जाता है।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसकी उपस्थिति का जैसे वहां

कोई निशान ही नहीं था।

काफी नजदीक पहुंच जाने पर मंसाराम ने ठाकुर के पैर छुए और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

किसी में कोई प्रतिक्रिया नही हुई। मंसाराम को लगा शायद ठाकुर साहब अपनी व्यस्तता में उसके अभिवादन पर ध्यान नहीं दे पाए इसलिए उसने दुबारा उसी तरह पैर छुआ।

इस बार ठाकुर चौंके। उन्होंने पहले समझा शायद दो अलग-अलग आदमियों ने उनके पैर छुए लेकिन वहां सिर्फ मंसाराम ही नज़र आया।

मंसाराम ने यह तो देखा कि ठाकुर साहब की व्यस्तता थोड़ी भंग हुई लेकिन उसकी तरफ आकर्षित नहीं हुए। साहस करके वह तीसरी बार उनके पैरों की तरफ बढ़ा। ठाकुर गजराजसिंह खीज गए : अबे ये क्या हरकत है ? कौन है ये ?

मुस्तैद खड़े दो युवकों में से एक मंसाराम की तरफ हाथ उठाकर बोला : अपना काम करो भाई यहां क्यों खड़े हो ?

जी सरकार—सरकार मैं मंसाराम हूं बेलपुर वाला।

कौन ?

मेरी टांग टूट गई थी आपकी गाड़ी से न—

क्या बकवास है। मेरी गाड़ी से टांग टूट गई थी ?

अपनी गाड़ी से कभी कोई ऐक्सीडेंट ही नही हुआ—युवक ने सफाई दी।

नही सरकार हम गिर पड़े थे न। ये कुर्ता-पायजामा आपने ही तो दिया था—

अबे तो अब क्या चाहता है ?

ये कोई केस बना रहा है तुम्हारे खिलाफ शायद।—पार्टी अध्यक्ष ने उसे संदेह से घूरते हुए कहा।

इस आदमी को ऊपर ले जाओ और देखो कौन है, क्या

चाहता है ।—ठाकुर ने कहा : कोई शरारत हो तो बताओ।

युवक मंसाराम को जिस तरह बांह पकड़कर ऊपर ले चला वह उसे बहुत अच्छा नहीं लगा। उसे ऊपर एक कमरे में ले जाते वक्त उस युवक ने एक तगड़े से चपरासी को भी बुला लिया।

किसने भेजा है तुमको ?

जी किसी ने नहीं। मैंने सोचा—

हूं। मक्कारी नही चलेगी समझे ?

जी ?

ठाकुर साहब से कितना रुपया चाहते हो ?

क्या हुआ भई ?—एक पत्रकार ने उधर झांककर पूछा।

अमां ये कुछ सस्पिशस लगता है। किसी ने कोई केस बनाने के लिए भेजा लगता है—

पत्रकार काफी देर से वहां मंडरा रहा था। असेंबली भंग किए जाने और दुबारा चुनाव कराए जाने की खबर के अलावा राष्ट्रीय पार्टी की कोई अंदरूनी खबर भी वह खोज रहा था। लेकिन अभी तक उसके हाथ सिर्फ इतना आया था कि पार्टी में एक बार फिर झगड़ा होने वाला था। अब यह नया मामला देखकर वह भी अंदर आ गया।

क्या नाम है ?—पत्रकार ने पूछा।

मसाराम।

कहां रहते हो ?

गांव चेलपुर सरकार।

हूं, ये ऐक्सीडेंट वाला क्या मामला है ?

जी काहे का ?

टांग टूटने का, ठाकुर साहब की गाड़ी से तुम्हारी टांग—

सहसा पत्रकार का ध्यान गया। चौंककर बोला : वर्मा जी, इससे यह तो पूछो कि टांग टूटी कौन-सी है। इसकी तो दोनों ही

टांगें ठीक लगती हैं।

क्यों बे ? साले नाटक करता है ? कौन-सी टांग टूटी है ?

मंसाराम ने घबराकर पायजामा उठाया।

अबे ये किधर से टूटी है ?

नही सरकार। अभी नहीं। अब तो ठीक हो गई है। ठाकुर साहब मोटरगाड़ी पर चढाकर हमको बेहरा ले जा रहे थे। तभी हम गिर पड़े थे—

ओ हो। धत्तेरे की।—वर्मा नाम के उस युवक ने घोर निराशा से अपनी हथेली पर मुक्का मारा। उसे यकायक मंसाराम के साथ पिछले चुनाव में हुई घटना याद आ गई।

क्या हुआ यार ?—पत्रकार ने हताश होकर पूछा।

वर्मा ने उसे सारी बात बता दी। फिर मंसाराम से बोला : हां अब बताओ। अभी क्या काम है ? जल्दी करो।

मंसाराम ने मां की बीमारी की बात बता दी।

हूं। मां को साथ लाए हो ?

नही सरकार ले आऊंगा।

ले आओ। मैं अस्पताल में भरती करवा दूंगा।

मंसाराम ने उसके पैर छूने चाहे। उसने मना कर दिया : बस-बस। इसकी जरूरत नहीं है। जाओ।

निराश पत्रकार एकान्त पाकर बोला : यार तुम ठाकुर साहब के बारे में जानते जरूर हो। जरा-सा इशारा दे दो। एक सौ तेरह डिफेक्ट करें तो अपोजीशन सरकार बना लें। भागवत के साथ छियत्तर हैं। मगर कह रहा है एक सौ तेरह। बाकी ठाकुर अपने साथियों सहित जा मिलें तो बात दूसरी है। यार—

वर्मा धूर्तता से हंसने लगा।

तुम हंस रहे हो। साले अपनी खबरें शराबें पिलाकर छपवाते हो।

वर्मा फिर वैसे ही हंसा और बोला : दोस्त कुछ खबरें शराब के नशे में ही छप सकती हैं लेकिन कुछ खबरों से शराब का नशा उतर जाता है।

सरकार पलट गई।

पलटती नहीं तो क्या। अंधेर तो हो रही थी।—मौजीराम ने टिप्पणी की।

श्यामलाल सुनार पता नहीं किस झोंक में बोला : तो ठाकुर गजराजसिंह की छुट्टी हुई समझो।

कौन कहता है ?—हेडमास्टर चने की दाल थैले में भरवाते हुए बोले।

क्यों ? और क्या।—अनोखे ने कहा : सरकार बदल नहीं गई।

अबे तुम लोग गधे हो। सरकार बदली है, गजराजसिंह नहीं।

क्या मतलब ?

गजराजसिंह इस सरकार में और बड़े मंत्री हैं।

तो सरकार किसकी बदली थी ?

यह गुत्थी तुम लोग नहीं समझोगे। सरकार बदल गई है लेकिन गजराजसिंह मिनिस्टर हैं। बस।—हेडमास्टर ने चने की दाल तुलवाकर थैले में भरवाते हुए दाल वाले से कहा : अबे गिरा

क्यों रहे हो। मेहनत की कमाई के पैसे हैं।

बाजार का दिन था। चैलपुर के इस सिरे पर खासी गहमा-गहमी थी। इसी गहमा-गहमी में कोई यह खबर ले आया था कि केन्द्र में सरकार गिर गई।

उस बाजार में 'सरकार गिर गई' जैसी धारणा का भाष्य शायद ही किसी को मालूम हो। वे यह तो सोच सकते थे कि सरकार बदल गई यानी अब किसी और का राज हो गया लेकिन जिन अर्थों में वहां सरकार गिरी थी उन अर्थों में कुछ समझ पाना मुश्किल काम था।

तिवारी समझते थे। खबर के आधे हिस्से पर खुश हुए फिर बाकी आधे हिस्से पर दुबारा उदास हो गए : इस मुल्क में कभी कुछ नहीं बदलेगा !

राजधानी में घटनाएं बड़ी तेजी से बदली थी। पत्रकारों को भले ही भनक न मिली हो भागवत के पास ठाकुर का हरकारा पहुंच गया था कि अगर उन्हें और अमुक-अमुक को मंत्रिमंडल में ले लिया जाए तो वे भी दल बदल लेंगे।

अगले रोज भागवत का फिर वही वक्तव्य आया : एक सौ तेरह दल बदल रहे हैं।

पत्रकारों ने समझा था कि ऐसे वक्त में ठाकुर गजराजसिंह एक बार फिर भूमिगत हो जाएंगे। मगर ठाकुर ने इस बार नई पद्धति अख्तियार की। उन्होंने पत्रकारों से भेंट भी की और वक्तव्य भी दिया : मैं दल नहीं बदल रहा।

दरअस्ल वे ठीक कह रहे थे। वे दल बदल नहीं रहे थे बल्कि अपने सैंतीस साथियों के साथ नया दल बना रहे थे। बस सिर्फ इतना तय था कि उनका दल भागवत के साथ सरकार बनाएगा।

पत्रकारों ने पूछा : फिर आप राष्ट्रीय पार्टी में रहेंगे ?

मैं जानता हूं आप क्या पूछना चाहते हैं।—ठाकुर मुस्कराए।

मगर आप बताएं, राष्ट्रीय पार्टी में रहेंगे ?

आप कॉफी लीजिए न। ठंडी हो जाएगी।

जी हां, लेकिन राष्ट्रीय पार्टी में आप रहेंगे ?

इस सवाल का जवाब पार्टी हाई कमान से बात किए बिना नहीं दे सकता।

सुना भागवत आपको मंत्रिपद दे रहे हैं ?

मंत्री तो मैं हूं।

मतलब साझा सरकार में ?

वह कहां है ?

वह बनने वाली है।

तो बनने पर सवाल पूछिए।

दरअसल इतने दिनों में ठाकुर काफी घिस चुके थे और पत्रकारों को वे तभी कुछ बताने की सिद्धि प्राप्त कर चुके थे जब बताने से लाभ होता हो। न बताने में अगर ज्यादा फायदा हो तो वे तेज-से-तेज पत्रकार को बड़े मज़े से चकमा दे जाते थे। इस बार भी उन्होंने बड़ी सफलतापूर्वक चकमा दे दिया।

ठाकुर ने दल भी छोड़ा और नया दल भी बनाया लेकिन बड़ी होशियारी से। पहले उन्होंने कुछ नहीं किया। प्रधानमंत्री और पार्टी अध्यक्ष के साथ मुस्कुराते हुए सदन में आए मगर विरोधी दल और भागवत के दल की ओर से जो प्रस्ताव आया उसके पक्ष में अपने साथियों सहित हाथ उठा दिया।

उन्होंने पार्टी छोड़ी नहीं, निकाले गए, अपने सभी सैंतीस साथियों के साथ, और तब आत्मा की आवाज सुन चुके होने की घोषणा करते हुए उन्होंने अपने दल का नाम रखा 'देश राज पार्टी।'

भागवत दौड़े : मित्र अब अलग पार्टी की क्या ज़रूरत है ?

भाई साहब मेरी पार्टी आपकी स्वदेश राजपार्टी से कौन-सी अलग है ? हम कंधा-से-कंधा मिलाकर काम करेंगे ।—ठाकुर ने चालाकी से उत्तर दिया ।

भागवत कुढ़ गए । लौटते हुए अपने साथी से बोले : बहुत हरामी है । कंधा मिलाए रखेगा लेकिन हाथ नहीं मिलाएगा ताकि छुरी पकड़े रहे । देखूंगा ।

लिहाज़ा सरकार गिर गई । ठाकुर गजराजसिंह ने एक तरफ मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया दूसरी तरफ शपथ लेने की तैयारी करने लगे ।

मंसाराम इसी माहौल में चैलपुर वापस पहुंचा ।

प्रधान ने अपने खेत के किनारे सिंचाई के लिए चल रहे चर्खे के पास मुंह-हाथ धोते उसे देखा ।

क्यों बे, यहां क्या कर रहा है ?

मंसाराम कुहनियों से पानी टपकाता हुआ उठ खड़ा हुआ । प्रधान ने उसके कुर्ते पायजामे पर नजर डाली और चिढ़कर बोले : साले तू भी मिनिस्टर बना फिर रहा है !

मालिक हमारी क्या औकात ।—मंसाराम ने हाथ जोड़ दिए ।

साले सिंचाई का काम पड़ा था । वो क्या तेरा बाप करेगा ? था कहां तू ?

शहर गया था मालिक, मां को अस्पताल में दाखिल कराना है न—

लन्दन भिजवा उसको लन्दन । विलायत ।

मंसाराम सकपका गया । चर्खे पर काम करने वाले जोर से हंसे : नेतवा के कम ठाठ हैं प्रधान जी—

मंसाराम घबराहट में तुरन्त चर्खे पर लगने लगा लेकिन प्रधान थोड़े उदार से हो गए, बोले : जा कपड़े बदलकर खा-

पीकर आ।

मंसाराम की एक चिन्ता कट गई। उन खादी के कपड़ों में काम करना पड़ता तो उनकी दुर्दशा ही हो जाती।

मां के बुखार की वही हालत थी हां फोड़ा बहुत बढ़ गया था। फोड़े की तकलीफ में वह पहले से कहीं ज्यादा कराहती थी बल्कि कभी-कभी तो चीख भी पड़ती थी। मंसाराम को यह चीख-चिल्लाहट बहुत अच्छी नहीं लगी। चिढ़कर बोला : दुनिया में क्या-से-क्या हो रहा है और यहां साला फुन्सी-बुखार लेकर हल्ला मचा है।

बीवी ने धीरे-से पूछा : अस्पताल का क्या हुआ ?

अस्पताल का क्या हुआ ! हद ही हो गई। अस्पताल जैसे फालतू खुला पड़ा है घुसो और दवा ले आओ।

तो यूसुफ के यहां से ही दवा ले आते—

मंसाराम थोड़ा ठहरा। अब ज्यादा बात बढ़ाने की गुंजाइश उसे नहीं लगी। चारपाई पर बैठते हुए कहा : हो जाएगा। इतने बड़े आदमी हैं ठाकुर साहब। उनके पूरे दफ्तर वालों को परेशान होना पड़ा जरा-सी बात के लिए। अभी दो रोज प्रधान जी की सिंचाई हो जाए फिर शहर ले जाएंगे। अस्पताल में दाखिला भी हो जाएगा। मामूली बात है साली, फिर भी यहां चैन नहीं है।

मा को शहर ले जाना आसान काम नहीं था। पांचू ने खाल और हड्डियों के ढेर ढोने वाली गाड़ी बडी मुश्किल से ही उसे दी। मौजीराम ही गांव में धान की बुवाई कराता था इसलिए धान के सूखे पौधों का फूस उसी के यहां मिल सकता था। वह मुफ्त एकाध गट्ठर तो दे सकता था मगर गाड़ी में बिछाने के लिए ज्यादा फूस की जरूरत थी। बहुत ज्यादा ही गिड़गिड़ाने पर उसने दो गट्ठर पुआल दिया। गाड़ी पर पुआल बिछाकर उसने

घर के लगभग सारे ही बिछाने लायक कपड़े उस पर बिछाए।

और गाड़ी कल वापस पहुंचनी चाहिए। समझा !—पाचू चौधरी ने हिदायत दी।

कल ?

अबे, तो यहां काम कैसे चलेगा ?

गाड़ी वापस लाऊंगा चौधरी तो अस्पताल में कौन रहेगा ?

मंसाराम से सहानुभूति शायद यहां अब किसी को भी नहीं रह गई थी। बिना किसी कारण सिर्फ उस सफेद कुर्ते और पायजामे ने उसे अपनों के बीच ही बेगाना बना दिया था। मंसाराम के अनुरोध पर नहीं उसकी बीवी के हाथ जोड़ने पर और खास कर मंसाराम की मां से रिश्तेदारी का खयाल करके पांचू ने अपने बेटे को उसके साथ भेजा।

मंसाराम की गाड़ी जिस वक्त शहर पहुंची वहां एक अजब किस्म का हंगामा था। सड़क से उसकी गाड़ी का निकलना मुश्किल हो गया। एक लंबी-चौड़ी भीड़ बड़े जोश के साथ ठाकुर गजराजसिंह के नारे लगाती हुई बढ़ी चली जा रही थी। गाड़ी से उतरकर मंसाराम ने भीड़ की तरफ लालच और हताशा से देखा। अगर वह मां की बीमारी के इस घटिया चक्कर में न फंसा हुआ होता तो इस वक्त जरूर ठाकुर साहब के काम आ सकता था। ऐसे ही वक्त में तो जिम्मेदार लोगों को सामने आना होता है।

इस बीच थोड़ी-सी गड़बड़ी हो गई थी। भागवत ने वायदा तो किया था लेकिन मौके पर महाशान्ति पार्टी और मंत्रान्त पार्टी ने टांग अड़ा दी : ठाकुर गजराजसिंह भले बड़े मंत्री बन जाएं उनकी यह शर्त थी कि उनके नेता की जो कुर्सी हो उसमें चार के बजाय कम से कम छह टांगें हों।

आप लोग विचित्र हैं।—भागवत ने संयुक्त बैठक में

कर कहा : कुर्सी तो कुर्सी ही रहेगी चाहे छह टांगें लगा लो या तीन।

तो तीन टांगों वाली कुर्सी ठाकुर गजराजसिंह को दे दो। हमें तो छह टांगों वाली कुर्सी चाहिए। वल्कि हम एक सातवीं 'स्पेयर' टांग नहीं मांग रहे हैं यही क्या कम है।—महाक्रान्ति पार्टी के आदमी ने इतना कहकर कुछ इस तरह अपने मुंह का बटुआ बन्द किया जैसे इसके बारे में आगे समझौते के लिए कोई और शब्द बाहर नहीं आने देगा।

ठाकुर बहुत देर से जब्त कर रहे थे। भड़ककर बोले : यह तो अंधेर है।

होगी।—महाक्रान्ति पार्टी के प्रवक्ता ने कहा।

इससे पार्टी टूट जाएगी।

बनी ही कहां है।

यह लोकतंत्र की हत्या है।

लोकतंत्र है ही कहां ?

क्या मतलब ?

लोकतंत्र लाने के लिए ही तो हमने सरकार बनाई है। वह ले आया जाएगा तभी हत्या की बात सिद्ध होगी।

यह जनता से विश्वासघात है।

आप जोश में मत आइए ठाकुर साहब। जनता के नाम पर हम चकमे में आने वाले नहीं है। सवाल आइडियालजी का है। —इस बार संभ्रान्त पार्टी वाले ने भी सम्मति दी।

आइडियालजी ?

जी हां। आदर्श।

आप क्या बात करते हैं ? सीधा चक्कर कुर्सी का है।—ठाकुर ने चुनौती दी।

नहीं, आप भूल कर रहे हैं।—संभ्रान्त पार्टी के प्रतिनिधि

ने कहा : चक्कर कुर्सी का नहीं कुर्सी की टांगों के बारे में न्यायोचित अधिकारों की रक्षा का है।

ऐसे सरकार कैसे चलेगी ?—भागवत ने इस धक्के को मूक मात्र झेलने वाले शहीद की तरह शोकाकुल होते हुए कहा।

हमारी सरकार तो ऐसे ही चलेगी।

क्या मतलब ?—भागवत को देश राज पार्टी के एक और सदस्य ने पूछा।

मतलब यह कि सरकार चलाने का हमने अकेले कोई ठेका नहीं लिया है। वह संयुक्त जिम्मेदारी है। समझे जी !—महाक्रान्ति पार्टी के एक वकीलनुमा प्रतिनिधि ने कहा।

इस तर्क ने सभी को बौखला दिया। यहां अभी कुछ और ज्यादा हंगामा होता, तभी एक विचित्र घटना हो गई। संयुक्त सभा में भाग लेने वाले किसी सदस्य का शायद हाजमा खराब था। हाजमा कुछ ज्यादा ही खराब रहा होगा या हो सकता है कि सभा की बहस में चुस्ती से हिस्सा लेने के लिए, वह कुछ ज्यादा खा आया हो। उस सभाकक्ष में एक दुर्गंध पहले हल्की-सी महसूस हुई फिर बुरी तरह महसूस हुई। सहसा सभाकक्ष भर गई और बहुत से लोगों ने अहम से दूसरों को संदेह से घूरा। संदेह से घूरे जाने वाले हर व्यक्ति को यह बात खासी नागवार गुजरती लगी। सभा तुरन्त ही उखड़ गई।

रहेगा।—भागवत बोले और आगे के सवाल सुने बिना गाड़ी में बैठकर रवाना हो गए।

ठाकुर गजराजसिंह को बहुत गुस्सा आया। उन्हें लगा कि मंत्रिमंडल में लोग उन्हें दूसरे स्थान पर नहीं रहने देंगे। उन्होंने स्वदेशराज पार्टी के सैंतीस सदस्यों की सभा बुलाई और घोषणा की कि उन पर जनता का दबाव है। जनता उन्हें दूसरे दर्जे पर देखना चाहती है वरना कुर्सी से उन्हें कोई मोह नहीं, वे तो चटाई से भी सन्तोष कर लेते।

उनके साथी तुरन्त शहर के अलग-अलग हिस्सों में पहुंच गए। वे ऐसे लोगों को इकट्ठा करना चाहते थे जो जनता हों, दबाव भी डाल रहे हों और ठाकुर साहब को दूसरे दर्जे की कुर्सी पर बैठाए बिना मान न रहे हों।

इन्हीं दबाव डालने वालों का जुलूस मंसाराम ने देखा और उसका मन भर आया। ठाकुर साहब की सेवा का कैसा अद्भुत अवसर था। अब उसे एक-एक क्षण की देर खल रही थी।

अस्पताल में खासी ही भीड़ थी। डाक्टर से ज्यादा वहां का चपरासी व्यस्त था। मां को बरामदे में लिटाकर उसने एक सफेद वर्दी वाले आदमी को हाथ जोड़कर रोका: भैया ठाकुर साहब ने भेजा है।

किस नंबर का खाना है?—उसने पूछा।

खाना?

हां। किस नंबर का खाना लाए हो?

मैं खाना नहीं लाया हूं भैया, मेरी मां बीमार है—

यह मिलने का वक्त नही है।

किससे मिलने का भैया?

तुम्हारे अपनी मां से मिलने।

मगर मैं अपनी मां से मिलने नहीं आया हूं।

तो फिर जाग्रो। क्यों सिर खा रहे हो।

इस सवाल-जवाव का सिर-पैर मंसाराम की समझ में नहीं ग्राया। देर हो रही थी। एक तो मां की वीमारी का चक्कर था दूसरे ठाकुर साहव के यहां जुलूस भी निकल रहा होगा।

मंसाराम को सहसा एक नया रास्ता सूझा। उसने सोचा वह ठाकुर गजराजसिंह के यहां जाएगा। वहां जुलूस का थोड़ा बहुत काम भी कर देगा ग्रौर ठाकुर साहव से कहेगा कि मां को वह ले ग्राया है, वे उसे दाखिल करवा दें।

ग्रस्पताल के वरामदे में ही लेटकर मां कराह रही थी। उसने वीवी से कहा : काम ऐसे नहीं वनेगा। मगर ग्रव फिकर की वात नहीं है। मैं ठाकुर साहव के यहां जाता हूं। एक मिनट में काम हो जाएगा।

वीवी कुछ नहीं वोली। वहां से ग्राते वक्त कुछ सोचकर ग्रपनी वीवी, मां ग्रौर चौधरी के बेटे के लिए उसने छह केले खरीदे ग्रौर दे ग्राया।

ठाकुर गजराजसिंह की कोठी पर वहुत भीड़ थी। कई हजार लोग होंगे। ठाकुर साहव के नारे लगाते हुए वे लोग पूरी सड़क और फ़ुटपाथ घेरकर खड़े थे।

मंसाराम को यह ठीक नहीं लगा। कायदे से इस मुजाहिरे के लिए दरियां विछाई जानी चाहिए थीं। फिर लोग इस तरह वेकायदा भीड़ लगाकर नहीं खड़े होते, थोड़ा सलीके से वैठे होते।

भाई साहव यहां कुछ दरियां वगैरह विछानी चाहिए थीं। —मसाराम ने एक ग्रादमी से कहा।

दरी नहीं तो गलीचे ग्रौर तकिए लगते तुम्हारे लिए!

इस जवाव से वह कुछ लज्जित हुग्रा : ठाकुर साहव वहुत भले ग्रादमी हैं, देवता हैं।

अबे देवता है तो साले आरती उतारो !

मंसाराम घबरा ही गया । वह वहां से हट ही आया । जरूर यह ठाकुर साहब के दुश्मनों की तरफ से आया होगा । उसने फैसला किया कि ऐसे आदमी के लिए ठाकुर साहब को आगाह करना चाहिए । वह धीरे-धीरे भीड़ के अन्दर घुसने लगा ।

जिस आदमी से उसने बात की थी वह सादी वर्दी वाला पुलिस का सिपाही था। भीड काफी इकट्ठी हो जाने का इत्मीनान कर चुकने के बाद ठाकुर गजराजसिंह बाहर आए। उनके लान में इतनी जगह नहीं थी कि इतनी भीड़ इकट्ठी हो सके लिहाजा उन्हें फाटक से बाहर आना पड़ा। उनके साथ उनके कई सहयोगी और सहायक थे ।

उनके सहायकों ने भीड को बैठाना शुरू किया । लोग काफी हद तक बैठ गए । ठाकुर के लिए अब उन्हें संबोधित कर सकना आसान हो गया । मंसाराम काफी भीड़ पार कर चुका था। सहसा उसके पास के बैठे हुए कुछ लोग चिल्लाए : कहां घुसा जा रहा है ? बैठ जा—

मंसाराम सकपका गया । डरकर वह बैठ ही जाता कि उसे अपना दायित्व याद आ गया । बैठते-बैठते दुबारा खड़े होकर वह लगभग छलांग लगाकर ठाकुर साहब के पास पहुंच गया ।

ठाकुर साहब के अंगरक्षक ने उसे लपकते देखा । वह खासा ही मजबूत आदमी था । उसने उसे झपटकर रोका : किधर ?

जी, साहब, वो ठाकुर साहब को बहुत जरूरी बात बतानी है ।

क्या बात ?

जी वो वहां —

जल्दी बोलो क्या है ?

जी वहां पीछे विरोधीदल के कुछ लोग हैं ।

विरोधी दल के लोग ? अच्छा तुम बैठो।—कहकर उस आदमी ने सतर्कता से चारों तरफ निगाह दौड़ाई और फिर ठाकुर साहब के पीछे खड़े आदमी से कुछ कहने लगा। मंसाराम ने जमीन पर बैठते-बैठते यह देखा कि शायद उसकी सूचना को गंभीरता से लिया जा रहा है। तीन लोग पीछे की तरफ सतर्कतापूर्वक जाते दिखे। वह आश्वस्त हो गया।

ठाकुर साहब के नाम के नारे बड़ी तेजी से लग रहे थे। मंसाराम को इसमें थोड़ी एकरसता महसूस हुई होगी वरना वह यह न सोचता कि ठाकुर साहब की पार्टी के नारे क्यों नहीं लग रहे हैं।

नारों से वह जोश में आ गया। बैठे-बैठे ही पूरी सांस खींचकर तीखी आवाज में उसने नारा लगाया : राष्ट्रीय पार्टी—

लोग धोखे में ही 'जिन्दाबाद' भी बोल गए।

मंसाराम ने फिर नारा लगा दिया।

ठाकुर चीखे : ये क्या बत्तमीजी है !

ठाकुर के साथी दौड़ पड़े।

राष्ट्रीय पार्टी का नारा किसने लगाया ?

पास बैठे लोगों ने मंसाराम की तरफ इशारा कर दिया। ठाकुर के निजी सचिव वर्मा ने देखा और एक क्षण में पहचान गया। ठाकुर के अंगरक्षक से बोला : इस आदमी को पकड़ो। अंदर ले चलो।

मंसाराम सहसा घबरा गया : मेरी गलती सरकार—

ठाकुर ने अपना भाषण शुरू कर दिया था। वे काफी क्षुब्ध थे कि राष्ट्रीय पार्टी वाले उनकी सभाओं तक में गड़बड़ियां फैला रहे थे।

दो फोटोग्राफर और पत्रकार भीड़ लांघकर अंदर ले जाए जाते मंसाराम की तरफ लपक लिए।

रात हो जाने के बावजूद अस्पताल की भीड़ में कोई फर्क नहीं था। सिर्फ फाटक के पास बत्तियों से रोशन अस्पताल के नाम का बोर्ड काफी रंगीन और आकर्षक लगने लगा था।

मंसाराम को दाढ़ों में दर्द महसूस हो रहा था और लंबी सांस लेने पर रीढ़ के पास सूजा-सा चुभने लगता था। उसका चेहरा बाईं तरफ से फूलकर टेढ़ा हो गया था आंख के आसपास काला दायरा बन गया था। उसने फाटक में घुसते वक्त अपना चेहरा छुआ। सोचा, बीवी पूछेगी तो कह देगा, बस से गिर गया था।

इससे अच्छा बहाना वह बना भी नहीं सकता था। उसके ठाकुर साहब के बाहरी कमरे में पहुंचते ही साथ आए अंगरक्षक ने उसके साथ जो सुलूक किया था वह सूजे चेहरे, काली आंख और टीसती रीढ़ के अलावा और हो भी क्या सकता था। काफी मुश्किल से ही वे लोग उसकी असलियत में विश्वास कर पाए थे। उसके बाद वे लोग थोड़ा शर्मिन्दा भी हुए थे। शायद इसीलिए उन्होंने मंसाराम के मदद मांगने से पहले ही उसे धकेलकर दूसरी तरफ से बाहर निकाल दिया था।

अस्पताल के बरामदे में उसने अभी कदम रखा ही था कि बीवी का चीत्कार सुनाई दिया। उसकी बीवी बहुत ऊंची आवाज में रो रही थी। मां के शरीर की तरफ उसने नजर डाली। उसे जल्दी यकीन नहीं हो पाया कि वहां अब तकलीफ से कराहता शरीर नहीं मात्र एक शव है। उसके शव में परिवर्तित हो चुकने की निशानी सिर्फ उसकी निस्पंदता ही नहीं थी। उसकी मैल चढ़कर भूरी हो चुकी सूती धोती का छोर जिस तरह उसके चेहरे पर ढका था वह स्पष्ट विज्ञापन था।

उसकी बीवी मां की मृत्यु पर एक बार तात्कालिक प्रतिक्रिया के रूप में रो चुकी थी। चौधरी के बेटे ने उसे रवायती सान्त्वना दे दी थी। मंसाराम को देखकर वह उठकर खड़ा हो गया था

ग्रौर बीवी ने नये सिरे से रोना शुरू कर दिया था।

ऐसे ग्रप्रत्याशित के लिए वह तैयार नहीं था गोकि ग्रब उसके साथ जो कुछ भी होता था वह ग्रप्रत्याशित ही होता था। उसे यह संतोष जरूर हुग्रा कि ऐसी स्थिति में कोई भी उसकी ग्रपनी शारीरिक स्थिति के बारे में पूछने की फुरसत में नहीं था। ग्रब उसे बहाने की जरूरत नहीं थी। मां तो ग्रपनी कराहों के बावजूद पूछती ही। बल्कि हो सकता है वह उसे ग्रसलियत बताने पर भी मजबूर कर देती क्योंकि वह ग्रवश्य कहीं न कहीं समझ लेती कि उसकी बातों में झूठ की गंध ग्रा रही है।

लाश को ठीक से देखने के लिए वह झुका। उसकी रीढ़ में बुरी तरह टीस हुई। यह टीस जल्दी दबी नहीं ग्रौर यह ग्रच्छा ही हुग्रा क्योंकि इस तकलीफ ने उसे शोक के पहले धक्के से बचा लिया। वह रोया नहीं सिर्फ ग्रौर ज्यादा उदास हो गया।

चैलपुर वापस लौटते वक्त हिलती हुई गाड़ी के एकरस धचकों के बीच वह फूस पर लिटाई लाश से धीरे-धीरे संपृक्त हुग्रा। बहुत नामालूम ढंग से, ग्रनायास। ग्रब उसके कंठ में एक हरकत-सी शुरू हुई ग्रौर ग्रांखों में एक हरारत ग्रौर पलकों के ग्रासपास ग्रांसू झलक ग्राए। उसने पलकें दबाईं। ग्रांसू इकट्ठे होकर गालों पर लुढ़क ग्राए। उसने उन्हें पोंछा नहीं, सिर्फ एक बार चेहरा हल्के से घुमाकर चौधरी के बेटे की तरफ देखा। वह उससे निस्संग गाड़ी हांके जा रहा था। शायद वह बीच में पलट-कर जरूर देखेगा, मंसाराम ने सोचा। उसे ग्रजीब लगा कि ग्रांसू सिर्फ उतने भर पर ही रुक गए, ज्यादा नहीं निकले। हो सकता है तब तक सूख भी जाएं।

उसने उन ग्रांसुग्रों को लगातार बहाने की कोशिश की। गले ग्रौर छाती में रोने के कुछ लक्षणों को इकट्ठा करना शुरू किया लेकिन इस तरह के परिश्रम में चूंकि मूल शोक से उसका

ध्यान हट गया था इसलिए रुलाई नहीं ही आई। उसने पीछे पड़ी लाश का ध्यान किया। रुलाई फिर भी नही आई और इसके बाद सहसा पहली बार बिल्कुल असहाय और पराजित होने के खेद ने उसे कचोटा।

ठीक इसी वक्त पांचू के बेटे ने उसकी तरफ देखा। मंसाराम एकबारगी ही रो पड़ा।

साला यही होता है। कौवा हंस की चाल चलेगा तो यही होगा।—छेदी ने गांव वालों को सुनाकर कहा। उसकी इस बात के समर्थन में बोला तो कोई नही लेकिन मौन समर्थन हर किसी ने किया। मंसाराम को खुद भी लगा शायद वह इस नई शुरुआत से पहले जो कुछ भी था, अच्छा था।

उसके पिता की मृत्यु हुई थी तब वह बहुत छोटा था उसे किसी शव की अन्तिम क्रिया का अनुभव बिल्कुल ही नहीं था। यह गनीमत ही थी कि गमी के जैसे मौकों पर कुनबे वालों की सहायता उदारता से मिल जाने का रिवाज था। कुनबे वालों में ऐसे काफी लोग होते हैं जो इस तरह के कामों में माहिर होते है। कुछ लोग तो इस काम को इतने धीरज, लगन और कुशलता से करते हैं कि थोडी-सी तारीफ भी पा जाते हैं।

घुटे सिर, कमर में लिपटे पुराने अंगोछे और मैल से चिप-चिपे शरीर के साथ इस बार मंसाराम ने सचमुच ही अपनी दुनिया में वापस लौटने और वही बने रहने का फैसला कर लिया। सुबह उठकर वह सबसे पहले मौजीराम और सिद्दीक के जानवरों को चारा देता था। उसके बाद घनिकलाल प्रधान के आलू के खेतों में नालियां ठीक करता था। दोपहर को तालाब में नहाकर कुछ केकड़े या एक दो मछलियों के साथ घर लौट आता था। शाम को वह हेडमास्टर के घर के छोटे-मोटे काम करने पहुंच जाता था।

अबे तेरी नेतागीरी क्या हुई ?—हेडमास्टर ने एक बार मसखरेपन से पूछा।

बिना लज्जित हुए मंसाराम सिर्फ हंस दिया जैसे उससे अनजाने भूल हो गई थी और अब वह सुधर गया था।

साला कुर्ता-पायजामा बढ़िया मार दिया था।

मंसाराम ने फिर उसी तरह दांत निकाले।

कुर्ता-पायजामा गया कहां ?

रखा है सरकार, जिनको शोभा देता है उन्हीं के अच्छा लगता है—

नहीं बे तू भी जंचता था साले। मंगरू के यहां जा और बोल साला कपड़े धोकर नहीं लाया। जा भाग।

धीरे-धीरे वह हंसी उड़ाया जाना भी कम होता जा रहा था। उसे लगा आज वह ज्यादा सन्तुष्ट है। कम से कम तनाव और उलझन का वह दौर तो उसे नहीं ही झेलना पड़ रहा है। उसने यहां तक सोच लिया था कि किसी बड़े त्यौहार या शादी-व्याह के मौके पर ही वह अपने कुर्ते-पायजामे का इस्तेमाल करेगा।

लेकिन यह विद्रूप इतनी आसानी से उसका पीछा छोड़ने वाला नहीं था।

मंसाराम धन्नू के खेत का फालतू घास-फूस उखाड़कर जानवरों के लिए ले आया था। गट्ठर धन्नू प्रधान के चबूतरे पर डालने के बाद वह उसे महीन काटने के लिए गडांसा खोज रहा था।

धन्नू ने दरवाजे के अंदर से ही आवाज लगाई : मंसवा है क्या रे ?

हां मालिक।

जाना नहीं अभी।

नहीं मालिक, अभी तो चारा काट रहा हूं।

धन्नू थोड़ी देर बाद बाहर आए। उसे चारा काटते हुए देखा और धीरे-से बोले : यहां से कहां जाएगा अब ?

जो हुक्म हो !

हूं।—धन्नू कुछ सोचते रहे फिर बोले : तेरा वो कुर्ता-पायजामा कहां गया रे ?

मंसाराम ने दांत निकाल दिए।

अबे दांत क्या निकालता है। है या बच खाया ?

रखा है सरकार।

हू। आज निकाल लेना। कल सवेरे गांव के ज्यादा-से-ज्यादा लोग शहर जाएंगे। ठाकुर साहब एक बहुत बड़ा मुजाहिरा कर रहे हैं। समझा ?

मंसाराम ने चारा काटने की गति थोड़ी तेज कर दी। अब जो हो रहा था उसमें उसका क्या बस ? उसने तो अपनी तरफ से फैसला कर लिया था कि दुबारा इस तरह के झंझट में पड़ेगा ही नहीं लेकिन प्रधान जी के हुक्म को कैसे टाला जा सकता है ?

राजनीति की दुनिया में फिर एक घपला हो गया था। संयुक्त बैठक में महाक्रान्ति पार्टी की तरफ से एक विचित्र प्रस्ताव आया। उनके प्रतिनिधि ने कहा : हमारे घटक ने फैसला किया है—

ये घटकवाद आप क्यों चलाना चाहते हैं ?—भागवत ने चिन्तित होकर पूछा।

क्योंकि इसके बिना एकता का कोई अर्थ नहीं है।—उस प्रतिनिधि ने कहा : अनेकता बिना एकता कहां ? यह हमारी संस्कृति है।

भागवत को ताज्जुब हुआ कि महाक्रान्ति पार्टी के इस दावे का सभी समर्थन कर रहे थे। भागवत खीजकर बोले : फिर मैं भी घटक बनाऊंगा आपको एतराज तो नहीं है ?

आप घटक नहीं डूमक बना लीजिए या चाहें तो परातक बना

लीजिए हमें कोई एतराज नहीं है।

ओह ! तो अपनी बात जारी रखिए।

हमारा प्रस्ताव है कि सभी घटक अपने-अपने मंत्रियों की कुर्सी की टांगों में एक अदद टांग कम करें।—वह प्रतिनिधि बोला : यह जनादेश है। मंत्रियों को त्याग करना होगा।

थोड़ी देर इस बात के पक्ष या विपक्ष में कोई नहीं बोला। सहसा ठाकुर गजराजसिंह तमतमा कर खड़े हो गए: यह साजिश चलने नहीं दूंगा।

साजिश ?—सदस्य गण चौंक गए।

दरअस्ल यह प्रस्ताव ऊपर से जो भी हो एक निहायत मस्खरी साजिश था।

सरकार बनने से पहले जो संयुक्त बैठक हुई थी उसमें कुर्सी की टांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार हुआ था और तय यही हुआ था कि महाक्रान्ति पार्टी के मंत्री की कुर्सी को छह तो नहीं पांच टांगें दी जा सकेंगी और ठाकुर साहब का दूसरा दर्जा बना रहेगा लेकिन कुर्सी तीन टांगों वाली मिलेगी।

ठाकुर तगड़ा प्रतिवाद, यहां तक कि वाक आउट तक करने को उद्यत हो गए लेकिन भागवत ने जिस रहस्यजनक तरीके से उनका हाथ दबाया था उसका खयाल करके वे प्रस्ताव से सहमत हो गए थे।

सभा के बाद वे घबराए हुए भागवत से मिले : आपने हद कर दी। तीन टांगों से तो कुर्सी लुढ़क ही जाएगी।

चिन्ता न कीजिए। आपको विशेष कुर्सी मिलेगी जो तीन टांगों की होगी और गिरेगी भी नहीं।

वायदा ?

हां मैं वायदा करता हूं।

इसके बाद महाक्रान्ति पार्टी के संयोजक को एक सदस्य ने

सूचना दी—ठाकुर की कुर्सी तो तीन टांग वाली ही है मगर वह गिरने वाली नहीं है।

एँ ?—संयोजक चक्कर में पड़ गया यह कैसे हो सकता है।

ऐसा ही है साहब।

दरअस्ल भागवत ने एक फर्नीचर वाले से एक ऐसी कुर्सी बनवाई जिसमें एक भी टांग नही थी। बस वह लोहे के तीन पैगों के बीच एक पेंच से टिकती थी। इस तरह वह गिरती तो नही ही थी, चारों तरफ घूम भी सकती थी। उसमें उम्दा गद्दियां लगी हुई थीं।

मामला मजे से चलता रहा, फिर चिन्तित महाक्रान्ति पार्टी के घटक की बैठक हुई। उसकी एक उपसमिति ने सारी स्थिति का जायजा लिया, यहां तक कि गुप्त रूप से ठाकुर की कुर्सी की जांच भी की। इसके बाद संयुक्त बैठक में पार्टी के प्रतिनिधि ने वह आश्चर्यजनक प्रस्ताव रख दिया।

प्रतिनिधि ने घटक शब्द पर उठे शोर के थमने के बाद कहा हमने फैसला किया है कि मंत्रिगण और त्याग का परिचय दें और सभी लोग अपनी-अपनी कुर्सियों की एक-एक टांग कम करें।

जिस जोश से बात कही गई थी उसे देखकर ठाकुर साहब को खुशी हुई कि महाक्रान्ति पार्टी के मंत्री की कुर्सी की पांचवीं टांग आखिर समाप्त तो हुई। तभी उन्हें ध्यान आया था कि उनकी अपनी कुर्सी तीन टांगों वाली ही है। अगर उसमें एक टांग कम हो गई तो वह गिर ही जाएगी।

वे घबराकर उठ पड़े : मैं प्रतिवाद करता हूं।

क्यों ?—किसी तरफ से आवाज आई।

यह सरकार गिराने की साजिश है।

यह जनादेश है। हमें जनादेश का सम्मान करना है। जना-

देश का सम्मान करने में सरकार गिर जाए तो यह गौरव की बात होगी।—प्रतिनिधि ने फिर कहा।

सभा खासे बड़े हंगामे में बदल गई। ठाकुर ने अपने साथियों के साथ वाकआउट कर दिया।

उन्होंने तुरन्त एक संवाददाता सम्मेलन बुला लिया। संवाददाताओं को संबोधित करते हुए बोले : यह सरकार जनता से विश्वासघात कर रही है। हमारी लड़ाई अब सड़कों पर आएगी।

यह सड़कों पर लड़ाई वाला मामला थोड़ा गडबड़ था। एक तो उनकी पार्टी का हर सदस्य अब थोड़ा-थोड़ा जमने लगा था इसलिए सड़कों पर लड़ाई वाले झंझट के काम में जल्दी-जल्दी नहीं पडना चाहता था और दूसरे भागवत ने चुपचाप अपने मंत्रिमंडल के विस्तार की बात फैला दी थी। इस खबर से खुद ठाकुर के घटक के कई सदस्यों को अपने कूल्हों के नीचे कुर्सी दिखने लगी थी।

लेकिन ठाकुर इतनी आसानी से छोड़ने वाले नहीं थे। उन्होंने भागवत के मंत्रिमंडल और पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा भिजवा दिया।

भागवत ने ठाकुर को नहीं पत्रकारों को बताया कि वे भारी मन से खेद के साथ इस्तीफा स्वीकार कर रहे हैं।

ठाकुर को और ज्यादा गुस्सा आया। उन्होंने आह्वान किया कि उनके साथी भी पार्टी छोड़ दें। उनके आह्वान पर सैंतीस में से सिर्फ डेढ़ व्यक्तियों ने इस्तीफा दिया। एक तो स्वयं ठाकुर साहब की बुआ ने और एक ऐसे आदमी ने जो कहीं का सदस्य नहीं था। ठाकुर को यह सन्तोष जरूर हुआ कि उनके घटक के चन्दे की कोषाध्यक्ष उनकी बुआ थीं। लिहाजा ठाकुर ने जागरुक पार्टी नामक एक नये संगठन की घोषणा की और

सड़कों पर उतर आए।

ठाकुर साहब के मुजाहिरे में शामिल होने के लिए चैलपुर के लोगों को गांव से सुबह सात बजे रवाना होना था। लोगों को रात तक मंसाराम समझाता रहा था कि सुबह सात बजे मुख्य सड़क पर उन्हें कहां इकट्ठा होना था। इस बार सिर घुटाने के बाद से बाल अच्छी तरह नहीं आए थे इसलिए अपनी खादी की वर्दी में भी वह कुछ ज्यादा शोभित नहीं हो पाया था लेकिन उसके उत्साह में कमी नहीं थी।

ठाकुर की जागरूक पार्टी ने बहुत-सी बसें कर रखी थीं। एक बस चैलपुर से भी लोगों को ले जाने वाली थी।

मंसाराम और लोगों के पहुंचने से पहले ही अपनी वर्दी में सड़क पर पहुंच गया। हो सकता है बस वाले को चैलपुर पता ही न हो, हाथ देकर रुकवाना पड़े। फिर बस वाले को ही किसी चीज की जरूरत पड़ जाए।

मंसाराम ने पीछे बहुत भूलें की थीं और उनका नतीजा भी भुगता था। ठाकुर साहब की पार्टी का नाम इस बार वह नहीं भूलेगा यह उसे विश्वास था।

सड़क पर उससे पहले ही चार-पांच लोग पहुंच गए थे।

मोटर इधर से आएगी या उधर से?—एक ने मंसाराम से पूछा।

ज्यादा मत बड़बड़ाओ। आएगी तो देख लेना। और धक्का-मुक्की करके मत चढने लगना—

लो मोटर आ गई।—तभी एक ने कहा।

वह बस नहीं महज एक जीप थी। उस पर देशराज पार्टी के कुछ कार्यकर्ता सवार थे। वे ठाकुर के इस कदम से असन्तुष्ट थे और जनमत तैयार करने निकले थे। उन्होंने देशराज पार्टी का झंडा भी लगा रखा था।

जीप देखकर एक ने कहा : यही मोटर है ? ये तो बहुत छोटी है। इतने लोग—

अरे चुप रहो। जरा पता लगने दो। टांग घुसेड़े चले जा रहे हो।—मंसाराम ने कहा और जीप की तरफ बढ़ा।

जीप वाले अब नारे लगाने लगे थे। मंसाराम ने जीप का झंडा पहचाना। उत्साह में आकर उसने नारा लगाया : देश-राज पार्टी जिन्दाबाद।

जीप वाले खासे उत्साहित हो गए। इसी बीच मंसाराम ने फिर नारा लगाया : ठाकुर गजराजसिंह—

अबे चोप !—जीप पर से किसी ने उसे घुड़का। मंसाराम सकपका गया। नारा तो ठीक ही था, उसने सोचा।

मोटर आ गई बे।—तभी किसी ने आवाज लगाई।

ठाकुर की बस सचमुच ही आ रही थी। जीप में एक क्षण खामोशी छा गई फिर कुछ हलचल-सी मची और देखते-देखते जीप फर्राटा भरती हुई रवाना हो गई।

दरअसल ठाकुर को इस हरकत का पता लग गया था और उन्होंने हर बस में दो-चार तगड़े लोग रखवा दिए थे जो देश-राज पार्टी वालों को देखते ही हाथ छोड़ बैठते थे। बस में बैठे कुछ लोगों ने जीप भागते देखी। जोश में आकर नारा लगाया : ठाकुर गजराजसिंह जिन्दाबाद !

ओ हो, वो लोग जरूर कोई बदमाश थे और हम लोगों को चकमा देने आए थे।—मंसाराम ने सोचा।

ठाकुर गजराजसिंह के नारे बड़े जोश से लग रहे थे। मंसा-राम उसी जोश में उछलकर आगे आया और जोर से बोला : बोलो देशराज पार्टी की जय !

एक क्षण वहां सन्नाटा छुआ फिर बस में से किसी ने लल-कारा : मारो साले को जाने न पाए !

ठाकुर साहब आपको एक खास आदमी से मिलाऊं?—ठाकुर गजराजसिंह के एक विशेष सहायक ने कहा।

उस उत्तेजक मुजाहिरे में राजधानी में, जीप पर ही सही, पूरे बीस किलोमीटर वे चले थे। इसके अलावा सारे दिन भेंट-कर्ताओं, मुन्तजिमों और पत्रकारों से मिले थे। इस वक्त लान में एक ऊंचे डंडे पर जड़े भारी पंखे की सुहानी हवा में वे आराम के साथ कॉफी पी रहे थे। उनकी बुआ और पत्नी भी वहीं थीं।

कौन है भाई?—ठाकुर ने थके स्वर में कहा।

इधर आ जा भाई।—सहायक ने मंसाराम को पुकारा।

मंसाराम ने आकर सलीके से पैर छुए। उन्होंने आशीर्वाद दिया फिर सहायक की तरफ प्रश्न सूचक दृष्टि घुमाई।

यह मंसाराम है साहब।—सहायक ने बताया: चैलपुर में रहता है। हरिजन है मगर बड़ा जागरूक है। हमेशा आपका ही समर्थन करता है। अच्छा कार्यकर्ता है।

हूं। धनिकलाल के यहां?

जी सरकार।—इस बार मंसाराम ने कहा।

सहायक थोड़े मज़े लेता हुआ बोला: ठाकुर साहब मज़े की बात यह है कि इसी झोंक में यह तीन बार पिट चुका है।

मंसाराम के मसूढ़े में वहां टीस उठी और आंखों से होकर माथे पर चढ़ गई जहां सुबह के जीप और बस कांड के होने तक दांत था लेकिन अब गायब हो चुका था।

किसने पीटा?—ठाकुर ने उत्तेजित होकर पूछा।

थोड़ा लज्जित होता हुआ सहायक बोला: हमीं लोगों ने पीटा साहब।

ये क्या बत्तमीजी है?

ठाकुर साहब गलती हम लोगों की भी नहीं थी। यह भोला-भाला, गंवार आदमी है। हर बार कुछ ऊटपटांग हरकत कर

बैठता है। राजनीति का सिरे से पता नहीं रहता इसे। आपकी मीटिंगों में गलत नारे लगा देता है।—

श्रोह।

एक बार आपको वेहटा ले जा रहा था। जीप से उल्टा-सुल्टा लटक गया। गिरकर टांग ही तोड़ बैठा था।

हूं। गांव लौट रहे हो?

जी सरकार। सबेरे जाएंगे।

हूं। इसे—इसे कुछ दे दो।—ठाकुर ने अपनी बुग्रा की तरफ देखा। बुग्रा ने चमकदार भारी बटुग्रा खोला और दस-दस के दो नोट मंसाराम की तरफ बढ़ा दिए। मंसाराम ने कृतज्ञ होकर बारी-बारी से सबके पैर छुए।

जाग्रो अब। राजनीति है भाई, समझ-बूझकर कुछ करना होता है।—ठाकुर बोले।

मंसाराम ने अनुभव किया, इससे सही बात और क्या हो सकती है। आखिर उसे समझ-बूझ लेना ही चाहिए था। राजनीति कोई हंसी मजाक तो है नहीं।

कैसा अद्भुत व्यक्तित्व है ठाकुर साहब का, तभी तो हजारों-लाखों लोग उनके पीछे चलते हैं, उसने गांव लौटकर सोचा। उसे लगा, यह भी गनीमत थी कि अपनी निराशा में उसने इस राजनीति से सचमुच ही किनारा नहीं कर लिया। अच्छा हुआ कि उसके मन में थोड़ी-सी आग बाकी थी।

उसका रोज का कार्यक्रम फिर वैसा ही चलने लगा। हां इस बार वह इसे सिर्फ नियति का एक दौर भर मान रहा था। चुनाव तो आएंगे ही। राजनीति भी होती ही रहेगी। उसका सहेजकर रखा गया कुर्ता-पायजामा अभी काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, यह उसे विश्वास था।

अब उसने काफी सावधान होने का फैसला कर लिया था।

राजनीति की गहरी बातें तो वह नहीं समझ सकता लेकिन ऐसी मोटी बात में तो न चूक जाए जो बातें मामूली ही होती हैं। वह पढ़ बिल्कुल नहीं सका था, यह बात उसे अब खल रही थी। फिर भी भरसक वह काम करते वक्त पढ़े-लिखे लोगों के आस-पास रहने की कोशिश करता था। वह सावधान रहता था कि कोई राजनीति संबंधी बात छुए बिना न छोड़े और भरसक उसे समझ भी ले।

अब भुगतें साले। अबकी वोट के नाम पर जूता मिलेगा जूता।—तिवारी ने श्यामलाल सुनार से कहा।

अरे कुछ भरोसा नहीं।—कहकर सुनार फिर चांदी के एक टुकड़े को पीटने में व्यस्त हो गया।

क्यों, भरोसे का क्या मतलब?

और क्या, सरकार तो फिर यही बनाएंगे।

अबे बनाएंगे क्या, खेल है। अबकी कोई दलबदल नहीं हुई है। संसद ही भंग हो गई साली। अब तो चुनाव में जीतेंगे तो आएंगे।—तिवारी ने फैसला दिया।

मंसाराम अनोखे की भट्टी के लिए लकड़ी डालने आया था। साधारण तौर से लकड़ी का गट्ठर डालकर वह चला जाता। मगर चुनाव, संसद, दलबदल जैसे कुछ शब्द उसने सुने। बात और साफ समझने के लिए उसने पहले लकड़ी के गट्ठे की गांठें खोलीं। फिर बीड़ी सुलगाई। बीड़ी थोड़ी-सी पीने के बाद उसने खुली हुई लकड़ियां सहेज कर रखनी शुरू कर दीं।

थोड़ा-सा वक्त गुजारने के बाद उसने इतना ज़रूर समझ लिया कि चुनाव होने वाले हैं और ठाकुर इस बार बड़ी गद्दी के लिए चुनाव लड़ेंगे। उनकी पार्टी का नाम उसने याद किया—जागरूक पार्टी। यही नाम था। इस बार वह भूल नहीं करेगा। लकड़ियां सजाते हुए उसने अनोखे से पूछा: ठाकुर साहब लड़ेंगे

तो किस पार्टी से मालिक ?

हमें क्या साले चाहे जिस पार्टी से लड़ें ।

उनकी तो जागरूक पार्टी है न—

तुम्हीं ज्यादा घुसे रहते हो, तुम जानो ।

चुनावों की घोषणा हो गई । मंसाराम को यह खबर हेडमास्टर के यहां मिली । उस वक्त वह हेडमास्टर के जूते चमका रहा था। उसे लगा जैसे केकड़े पकड़ते वक्त कोई खूबसूरत मछली हाथ आ गई या मुर्दा बैल के पेट की थैलियां साफ करते वक्त ऐसी अठन्नी मिल गई जिसे बैल किसी के कुर्ते की जेब चबाते वक्त निगल गया हो ।

उसने जूतों को बहुत अच्छी तरह अपनी कमर पर बंधे अंगौछे से रगड़कर चमकाया ।

हेडमास्टर साहब को जूते लौटाते हुए उसने धीरे-से पूछा : ठाकुर साहब तो चुनाव लड़ेंगे ही ?

हां । लड़ेंगे क्यों नही ?

उनकी जागरुक पार्टी है न ?

हां पार्टी तो वही है । तुम भी खासे घाघ हो गए हो । सब पता रखते हो ।

मंसाराम खिसियाहट से हंसने लगा फिर पूछा : कब शुरू होगा चुनाव ?

हेडमास्टर ने तारीखें बता दी ।

उस दिन मंसाराम ने सारे ही काम बेहद उत्साह से किए । बल्कि अब उसे अपना कोई काम बुरा या थकाने वाला नहीं लग रहा था। उस दिन शाम को ठाकुर साहब से अकेले उसे मिलवाया गया था । पूरे बीस रुपये उसे इनाम में मिले थे ।

आने वाले दिनों के बारे में उसने मानसिक तैयारी शुरू कर दी । इस बार वह यह सावधानी भी बरतना चाहता था कि इस

मामले में छेदी से सद्भावना बनी रहे। इसलिए उसने उसे छेदी भाई कहना शुरू कर दिया था। कई एक बार मरे जानवर की खाल उतारने में छेदी की चुस्ती और होशियारी की तारीफ भी की थी। एकाध बार बच्चों के खेलने के लिए टिन के डिब्बों से ढोलकें बनाने में उसने लल्लू की मदद भी कर दी थी।

पांचू चौधरी का छप्पर बनाने में तो उसने अपनी कुहनियां ही छील लीं। अब वह थोड़ा आश्वस्त हो रहा था कि अगर उसने सावधानी से ठाकुर साहब की पार्टी का नाम याद रखा तो स्थिति वैसी बुरी नहीं होगी।

इसके बावजूद उसे थोड़ा ताज्जुब हुआ और धक्का-सा लगा जब उससे छेदी ने कहा : चुनाव तो हो रहे हैं मगर इस बार कुछ घपला है।

तुम्हें कैसे पता ?

पांचू चौधरी कह रहे थे।

मंसाराम चक्कर में पड गया कि बात इतनी फैल गई।

और तुम घोटाले वाली क्या बात कह रहे थे ?—मंसाराम ने पूछा।

क्या जाने। ऊंचे लोगों की बातें वही जानें।

मंसाराम मन-ही-मन संतुष्ट हुआ। छेदी को ज्यादा कुछ नहीं मालूम था।

उसे पहली चिंता अपनी वर्दी की हुई। हेडमास्टर के यहां से मिले थोड़े-से चने की पोटली आंगन में पटक कर वह कोठरी में चला गया। कोठरी में थोड़ा अंधेरा था और जहां उसने संदूक के लिए हाथ बढ़ाया वहां वह नहीं था। उसे खीज हुई—घर की चीजें कौन साला इधर-से-उधर खिसकाता रहता है ?

कोई तो नहीं। क्या खोज रहे हो ?

तब तक उसे संदूक मिल गया था। वह उसे खोज ही गलत

जगह रहा था। सदूक में उसे कुर्ता और पायजामा मिल गया। पिछले दिनों उसने एक दर्जी से थोड़ी तंग और बदशक्ल ही सही टोपी भी सिलवा ली थी। वह टोपी नहीं मिली। जल्दी-जल्दी उसने सारे सामान को टटोल डाला यहां तक कि कुर्ते-पायजामे को कई बार झाड़ा लेकिन टोपी बरामद नहीं हुई।

इस घर में चीजें आखिर गायब कहां हो जाती है ?

क्या चीज ?

अभी तक तुम्हारी समझ में यही नहीं आया ?

मुझे क्या पता।

ओफ् यही तो मुश्किल है। चुनाव हो रहे है चुनाव।

चुनाव ? वो तो तुम कह रहे थे पांच साल बाद होते है।

पांच साल बाद ?

और क्या। अभी तो साल भी नही हुआ।

अरे तुम्हीं ने अकेला दिमाग पाया है क्या ?—वह झल्ला-कर फिर संदूक टटोलने लगा : हो ही गए होंगे पांच साल। उन लोगों को क्या इतना नही मालूम ? और फिर बड़े लोग है जब मर्जी आए तभी कर लें। तुम जैसों की अकल पर चले तो हो गया काम। साली टोपी ही नहीं मिलेगी।

मंसाराम ने खीजकर बकसा ही आंगन में ला पटका। अब उसका गुस्सा बढता जा रहा था : साला दुनिया-भर का कबाड़ इसी में भरना था—

टूटी कंघी, पुराने रिबन टेढी हो गई लाख की चूड़ियां, रंग उड़ी सिन्दूरदानी, मैले चुटीले—ऐसी ही जाने कितनी चीजे उसमें से निकलती जा रही थीं। बस टोपी गायब थी।

यह है, यहीं तो थी।—बीवी की आवाज सुनाई दी।

क्या ? कहां ?

टोपी चूहों की गंदगी और धूल में लिपटी हुई बीवी की उंग-

लियों में लटकी थी। मंसाराम ने झपटकर उसे ले लिया। दीवार से टकराकर उसकी धूल झाड़ी लेकिन वह शायद रेशे-रेशे में घुस गई थी। चूहों ने तो उसे अपना पेशावघर ही समझ लिया था। इसके अलावा बत्तमीजी की हद यह थी कि उसकी एक नोक कुतर कर वहां बाकायदा एक सूराख बना दिया था। टोपी की यह दुर्दशा देखकर मंसाराम रूआंसा हो आया। अब उसकी धुलाई ही नहीं मरम्मत भी जरूरी हो गई थी और उसे यकीन था कि टोपी की इस मरम्मत के काम को चैनपुर का एकमात्र दर्जी रसूल कभी आसानी से नहीं करेगा।

सूई-धागा जुटाने के बाद उसने खुद जो मरम्मत की उसने टोपी के उस हिस्से को सूअर के मुंह की तरह सख्त और बद-शक्ल बना दिया लेकिन अब उपाय भी क्या था। अरसा पहले खरीदी और होशियारी से छुपा कर रखी साबुन की टिकिया से उसने वर्दी धोई।

वर्दी की तैयारी अगले रोज ही पूरी हो पाई। उसे लगातार यह लग रहा था कि कीमती वक्त बरबाद हुआ जा रहा था।

अपनी वह वर्दी सावधानी से पहनने के बाद सबसे पहले धनिकलाल प्रधान के घर पहुंचा। प्रधान उस वक्त छत से लटकी लनर मे तोरइयां उतरवा रहे थे। मंसाराम को देखकर घूमे। मंसाराम ने हाथ जोड़े।

क्या है रे ?

प्रधान जी बात ये है कि वो वोट पड़ने वाले है न—

अरे इसको तो देखो। अबे भाग यहां से नहीं तो टांगें तोड़-कर रख दूंगा।—प्रधान ने यकायक घुड़का।

मंसाराम इस व्यवहार का ठीक-ठीक कारण समझ नहीं पाया। उसने अपने साहस को बटोर कर मुस्कुराने की कोशिश की।

अबे दांत फाड़ रहा है ? साले एक-एक दांत उखाड़कर हाथ पर रख दूंगा ।—प्रधान इतनी जोर से बोल रहे थे कि आसपास के घरों से भी कुछ लोग बाहर आ गए। मंसाराम उनकी निगाहों से सकपका गया । वह वहां से धीरे से हट आया । वह अजीब पसोपेश में था । चुनाव होना है । ठाकुर साहब चुनाव लड़ेंगे ।

यहां तमाम तैयारियां भी करनी होंगी। भाषण होंगे। दरियां तख्त आएंगे। तख्त का पाया टूटा हुआ या पटरा उखड़ा हुआ हो तो ? और गैसबत्ती वाला तो एक ही पाजी है । कैसे होगा सब ?

हेडमास्टर खाना खाकर उठे थे । सुपारी काट रहे थे । खाने के बाद वे सुपारी के टुकड़े करके तम्बाकू कत्था और चूना मिलाकर खा लेते थे । मंसाराम को देखा तो सहसा बोले : अबे तुझे ये क्या सूझ गई ?

जी मालिक ?

अबे ये सब क्या डाटे घूम रहा है एं ?

मालिक चुनाव—

अबे चुनाव के बच्चे साले पागल हुआ है ।

मगर मालिक चुनाव का इतना सारा काम—

नेतवा साले को अपने हाथ पैर तुड़ाने हैं ।—पीछे से पांचू चौधरी के लडके की आवाज आई : मालिक ढोलक देख लीजिए ठीक मढी है ?

वह हेडमास्टर की घर की फूटी हुई ढोलक मढ़कर लाया था । मंसाराम ने उसकी ओर देखा और असहाय होकर हेडमास्टर की तरफ घूमा । मगर हेडमास्टर ढोलक लेकर अंदर चल दिए थे । जाते-जाते उन्हें याद आया । वहीं से ठिठक कर बोले : मसा, पांचू चौधरी से मिल ले । वो सब बता देंगे ।

इनके पर निकलें है पर ।—पांचू का बेटा बड़बड़ाता हुआ

चला गया।

तू साले फिर ये झाड़े फिर रहा है ?—पांचू चौधरी ने उसे देखते ही ललकारा।

काका—

अबे क्या काका फाका ! तेरी समझ में कुछ आता है या नेतागीरी ही झाड़ता फिर रहा है ?

वोट पड़ते हैं तो हम लोगों को काम-काज तो करना ही पड़ता है।

अच्छा अब कान खोल के सुन ले। वोट पड़ें चाहे न पड़ें। हरिजन कोई उधर नही झांकेगा। सब अपना काम देखो बस। और किसी को वोट की बड़ी खुजली हुई तो टांगें तोड़ दूंगा हां। —पांचू ने कहा।

अरे हां। जान है तो जहान है। फिर बड़े लोगों की मर्जी।— बुड्ढे मनीराम ने हां में हां मिलाई।

ये क्या चक्कर है, मंसाराम की समझ में नहीं आया। उसे लगा उसकी वर्दी में कुछ खुजली पैदा करने वाले रेशे हैं जो बुरी तरह जलन पैदा करने लगे हैं।

अपने ऐसे अभियान पर जब वह घर से निकलता था तो जल्दी नही लौटता था। इस बार इतनी जल्दी वापस आया कि बीबी चिंतित होकर बोली : कुछ भूल गए क्या ?

तुम टांग न अड़ाया करो समझीं।

कपड़े उतार कर उसने दीवार पर टांग दिए और चुपचाप चारपाई पर लेट गया। अब वह कुछ सोचना चाहता था। आखिर यह कैसे और क्यों हुआ कि कोई हरिजन वोट न डाले, चुनाव का काम न करे ? उसने छेदी जैसे लोगों के बारे में नए सिरे से सोचा। कहीं यह साजिश इन्हीं लोगों की तो नहीं है ? या फिर ये लोग तिवारी जी से जा मिले हों और नाराज़ होकर

प्रधान जी ने वोट डालने से ही मना कर दिया हो ? मगर इसके बारे में अब यहां तो बात साफ़ होने की कोई गुंजाइश थी नहीं ।

उसे ठाकुर साहब की याद आई । कितना भव्य चेहरा है । उसे कितने प्यार से देखा था । उतने से ही वह कृतकृत्य हो गया था । बीस रुपये इनाम अलग से । बीस रुपये कुछ वकत रखते है । आखिर बड़े आदमी हैं, दान कोई रुपया आठ आना तो नहीं ही देंगे ।

सहसा उसे एक बात सूझी । इस गोलमाल के बारे में पता नहीं ठाकुर साहब को कोई जानकारी है या नही । क्यों न उन्ही से सीधे पूछ लिया जाए ? अब तो उसका परिचय भी हो चुका है । आखिर साधारण अन्याय तो है नहीं । जिनके लिए ठाकुर साहब की आत्मा में इतना दर्द है वही उनके चुनाव में धोखा दे जाए ।

उसने अपनी वर्दी पहन ली । वह जानता था कि इस तरह उसके बाहर निकलते ही कोई न कोई उसे देख लेगा इसलिए बहुत सावधानी से वह गांव के पीछे के उस हिस्से की तरफ से निकला जिसमें सिर्फ पथरीली जमीन और कंटीली झाड़ियां थीं और मरने वाला जानवर अक्सर वहीं आकर गिरा करता था ।

ठाकुर साहब का मकान पहचाना हुआ था लेकिन वहां ठाकुर साहब नहीं थे । उनकी कोठी ही बदल गई थी । फाटक पर एक वर्दी वाला बन्दूकधारी खड़ा था । उससे सिर्फ इतना मालूम हुआ कि ठाकुर साहब का बंगला बदल गया । लेकिन वे कहां मिलेंगे, यह उसे नहीं पता था ।

अब एक और रास्ता था—ठाकुर साहब का दफ्तर । बहुत प्रिय संस्मरण नही था उस दफ्तर का । उसने दो बार ठाकुर साहब के पांव छूकर अपनी टूटी टांग से उनका परिचय कराना चाहा था और उसे धोखे से कोई ठग समझ लिया गया था ।

दफ्तर में पहले जैसी ही हलचल थी हां उसके आगे बने सुंदर से सायबान में कोई नहीं था। आसपास बहुत-सी मोटर गाड़ियां खड़ी थीं। अब वह थोड़ा कमज़ोर पड़ने लगा, पता नहीं ठाकुर साहब कैसी व्यस्तता में हों। वह बहुत धीरे-धीरे मुख्य दरवाजे तक गया। वहां तक पहुंचने में उसकी पसलियों पर पसीना रेंगने लगा।

दरवाजे के अंदर घुसते ही बाईं तरफ सगमरमर की चिकनी उम्दा सीढ़ियां थीं। घसीटकर ले जाए जाते वक्त उसका ध्यान इन सीढ़ियों की सुन्दरता की तरफ नहीं गया था।

वह सीढ़ियों पर चढ़ने की सोच ही रहा था कि ऊपर से दो आदमी कुछ चुहल जैसी करते हुए उतरे।

मंसाराम ने हाथ जोड़कर कहा : साहब, ठाकुर गजराजसिंह साहब कहां मिलेंगे ?

उनमें से एक ने दाहिनी तरफ के एक दरवाज़े की तरफ इशारा किया और हंसते हुए बाहर चले गए।

शायद उन्होंने मज़ाक किया हो क्योंकि जिस दरवाज़े की तरफ उन्होने इशारा किया वहां उस इमारत का खूबसूरत-सा पेशाबघर था जिसमें चमकीले टाइल जड़े हुए थे। और कोई मौका होता तो शायद वह यह भी सोचता कि क्या ये लोग इतनी खुशबूदार हाजत रफा करते हैं ?

जो आदमी अभी हाजत रफा करके पतलून के बटन बन्द करता हुआ उसकी तरफ घूमा उसी से मंसाराम ने पूछा : साहब, गजराजसिंह साहब कहां मिलेंगे ?

गजराजसिंह ? हूं, गजराजसिंह।—जैसे गजराजसिंह कोई मुअम्मा हो इस तरह उस पर गौर करता हुआ वह आदमी सीढ़ियां चढ़ने लगा। मंसाराम भी पीछे-पीछे चलता रहा। एक छोटे कमरे में घुसता हुआ वह फिर बोला : क्या नाम था ?

गजराजसिंह। हूं, गजराजसिंह।

उसकी छोटी-सी मेज पर ढेरों अखबार और कागज पड़े हुए थे। सामने की तीन कुर्सियों पर पांच आदमी किसी तरह लदे थे, छठा एक रैक पर ही चढ़कर बैठ गया था।

रिजर्वेशन किसकी है?—उसने कुर्सी पर बैठे बिना ही पूछा।

सिर्फ मेरी।—सामने का आदमी बोला।

अटेंडेंट दो नहीं होंगे। ये लीजिए टिकट।—उसने टिकट थमाकर तुरन्त ही फोन उठा लिया। फोन मिला नहीं तभी उसकी निगाह मंसाराम पर पड़ी: तुम्हें क्या चाहिए?

जी वो ठाकुर गजराजसिंह—

हां गजराजसिंह। ठाकुर—हूं। गजराजसिंह।—वह दुबारा टेलीफोन में भिड़ गया। सामने बैठे बाकी लोग काफी देर से ऊब रहे थे। उन्हें लगने लगा था कि शायद उन्हें ऊबने के लिए ही पार्टी दफ्तर बुलाया गया हो क्योंकि यहां कोई नहीं जानता था कि उन्हें किसने और क्यों बुलाया। अपनी ऊब को तोड़ने के लिए ही उनमें से एक वहां बेमौजू से दिखने वाले मंसाराम से मुखातिब हुआ: कहां से आए हो?

चैलपुर से साहब।

वहां चुनाव के क्या हाल है?

क्या पूछते हैं साहब। देखिए, मैं कहता हूं आप गैसबत्ती को ही ले लीजिए। अगरबत्ती वाले ने छह में से तीन खराब दे दीं—और साहब मैं तो कहता हूं गैसबत्ती वाला है ही हरामी—

मंसाराम जल्दी-जल्दी सब कुछ कह देना चाहता था लेकिन उसकी बातों का सिलसिला उलट-पुलट हो गया था।

गैसबत्ती? यहां गैसबत्ती किसने मंगाई है?—पूछने वाला आदमी बाकी लोगों से पूछने लगा।

नहीं साहब ।—मंसाराम ने बात साफ करने की कोशिश की—यहां किसी ने नहीं मंगाई है । मैं अपने गांव की बात कर रहा हूं ।

हम पोस्टर देते हैं । गैसबत्तियां देने का कोई नियम नहीं है ।—फोन से चिपटे आदमी ने कहा ।

हम गैसबत्ती नहीं मांग रहे है साहब—

फिर !

देखिए वो सब लोग वोट डालने वाले है न, तो प्रधान जी कहते हैं वोट न डालो ।

क्या ? कौन कहता है ?—फोन वाला सहसा उत्सुक हुआ ।

जी वो गजराजसिंह साहब है न । चुनाव होने वाले हैं—

वो तो ठीक है, वोट न डालने की क्या बात थी ?

जी वो प्रधान जी ने कहा है कोई हरिजन वोट न डाले । टांगें तुड़वा देंगे । देखिए—

ओह ।—फोनवाला आदमी गंभीर हो गया । सामने वाले लोग इस मामले की गंभीरता की याद दिलाते रहे और फोन-वाला जल्दी-जल्दी किसी को फिर फोन मिलाने लगा । फोन कान से भिड़ाए हुए सामने के एक आदमी से बोला : इसे फौरन चिनाय साहब से मिलाओ । मैं अखबार वालों को भी बुलाता हूं। जरूरत होगी को इलेक्शन कमीशन भी चलेंगे—

चिनाय बहुत मोटे थे और एक चबूतरे जितनी बड़ी मेज के सामने एक कुर्सी में लदे हुए से बैठे थे । वे बड़ी तेजी के साथ फोन पर कोई बात कर रहे थे । बात खत्म करके वे इस तरह बोले जैसे बोलने के बजाय गुर्राने के आदी हों ।

मंसाराम को साथ लाए आदमियों ने तत्परता से कहा : यह आदमी चैनपुर का हरिजन है । वहां के प्रधान ने हरिजनों को वोट डालने से मना किया है ।

चिनाय ने मंसाराम को घूरा : तुम हरिजन हो ?

जी सरकार।

हूं। प्रेस कान्फ्रेंस बुलाओ। इसे गेस्ट हाउस में ठहरा दो और स्टेनो को भेजो।

संवाददाता सम्मेलन में मंसाराम पेश किया गया तो एक-बारगी घबरा गया, कांपने लगा। जैसे ही चिनाय ने उसे सामने लाने को कहा, कैमरे की बत्तियां इस तरह चमकने लगी जैसे बिजली चमक रही हो। मसाराम को लगा शायद धड़ाका भी हो। उसकी फिल्म भी खींची गई।

पहले हंगामे के बाद एक पत्रकार ने उसे गौर से देखा। वह तुरन्त पहचान गया। इसे पहले भी देखा था। ठाकुर साहब को ठगने के लिए आया था, फिर उनकी सभा में गड़बड फैलाने के लिए। ठीक वही है।

पत्रकार वहां ज्यादा देर नहीं रुका। वैसे भी चुनाव के दिन थे। ज्यादा देर एक जगह रुका ही नही जा सकता था।

मंसाराम तीसरे दिन बस पर वापस लौटा। इस बार उसके थैले में कुछ अखबार थे। वह पढ़ नही सकता था लेकिन उनमें छपे अपने चित्र पहचान सकता था। अब वह ऊसर और कंटीली झाड़ियों वाले हिस्से से गांव लौटने के बजाय सीधे रास्ते से ही गांव जाएगा। कितना बड़ा मामला था और उसकी अकेले की होशियारी से ही संभल गया। उस वक्त जरा-सी गफलत कर जाता तो कितनी बड़ी गड़बड़ हो जाती।

बस से उतरकर उसने अपनी टोपी को थोड़ा-सा ठीक किया और कुर्ते को नाहक झाड़ा। फिर थैला लटकाए हुए गांव की तरफ चल दिया। अभी वह स्कूल से थोड़ी दूर पर था कि किसी ने बड़ी असभ्य आवाज में कहा : रुको !

उसने इधर-उधर देखा। आम के दरख्त के नीचे उजले सफेद

कपड़े पहने कुछ लोग खड़े थे। उन्हें देखकर वह आश्वस्त हुआ और थैले सहित हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

नमस्ते का जवाब मिलने से पहले ही किसी ने पीछे से उसके कंधे पर कोई वज़नी चीज मारी। वह तिलमिला उठा। इसके बाद भी पीछे से वार करने वाला रुका नहीं। इस बीच पेड़ के नीचे वाले लोग भी आ पहुंचे। वे भी उसे पीटने में जुट गए।

चोट के कारण उसका खड़ा रहना मुश्किल था। गिरते-गिरते उसके मुंह से निकला : मैं—मैं—गजराजसिंह—

ये खड़ा है गजराजसिंह तेरे सामने।—एक भारी आवाज़ गूंजी : काट दो साले की दोनों टांगें!

मंसाराम ने धुंधली आंखों देखना चाहा लेकिन गिरते वक्त टेढी होकर जाने कब उसकी टोपी ने चेहरे को आंखों तक ढक लिया था।

□□

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

श्रेष्ठ कथा-साहित्य

उपन्यास

सूने चौखटे :	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
दो लघु उपन्यास :	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
('सोया हुआ जल' और 'पागल कुत्तों का मसीहा')	
हम सब मसाराम :	मुद्राराक्षस
भगोड़ा :	मुद्राराक्षस
गीली धूप :	राजेश जैन
आधी रात के अतिथि :	मन्मथनाथ गुप्त
मृगान्तक :	गंगाप्रसाद विमल
मन्त्रीजी के निजी सचिव की डायरी :	डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी
सुरखाब के पर :	गुरमुखसिंह जीत
आवारा सूरज :	बाला दुबे
सहदेवराम का इस्तीफा	मधुकर सिंह
अपने साथ :	ज्योत्स्ना मिलन
तांबे के पैसे (ऐतिहासिक) :	आनन्दप्रकाश जैन

कहानी

अंधेरे पर अंधेरा :	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
कच्ची सड़क :	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
शोर :	महीपसिंह
कितने संबंध :	महीपसिंह
चीख के आर-पार :	ज्योत्स्ना मिलन
वही सपने :	अरुणा सीतेश
कैसे कैसे लोग :	सीतेश आलोक
घेरे मे बंधे लोग :	गुरमुखसिंह जीत
इति और ह्रास :	आनन्दप्रकाश जैन